हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

6 अप्रैल, 1972

खण्ड 1, अंक 3

अधिकृत विवरण

विषय–सूची

वीरवार, 6 अप्रैल, 1972

	पृष्ठ संख्या
तारांकित प्रश्न एंव उत्तर	(3) 1
अध्यक्ष द्वारा याचिका समिति संबधी घोषणा	(3) 9
राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा (पुनरारम्भ)	(3) 9
चौधरी दल सिंह द्वारा व्यक्तिगत स्पष्टीकर	(3) 54
बैठक के समय में वृद्धि	(3) 55
राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा (पुनरारम्भ)	(3) 55
बहिर्गमन	(3) 82
राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा (पुनरारम्भ)	(3) 82

हरियाणा विधान सभा

वीरवार, 6 अप्रैल, 1972

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर 1, चण्डीगढ़ में मध्यान्होपरान्त 2.00 बजे हुई।

अध्यक्ष (श्री बनारसी दास गुप्ता) ने अध्यक्षता की।

तारांकित प्रश्न एवं उत्तर

श्री अध्यक्ष महोदयः माननीय सदस्यगण, प्रश्न काल।

Rate for the purchase of Wheat

I Chaudhri Shiv Ram Verma: Will the Chief Minister be pleased to state

(a) the minimum rate fixed by the Government for the purchase of the coming produce of wheat;

(b) whether the Government has fixed these rates after making thorough enquiry as to whether the farmer will, keeping in view the present high prices, get full reward of his labour and the expenditure incurred by him on the produc; and

(c) whether keeping in view the all round rise in prices the Government will so arrange that teh farmer should get atleast Rs. 10/-[er quintal more as compared to the rate of the last year ?

Chief Minister (Chaudhri Bansi Lal):

(a) The minimum price for the ensuing procurement of wheat has yet to be fixed.

(b) Does not arise.

(c) The minimum procurement price is fixed by Government of India in consulatation with the State Government. The State Government would certainly urge that in fixing the price the Government of India should, together with order factors, also take into account the incerase in the costs of agricultural inputs that have taken place over the year.

चौधरी शिवराम वर्माः अध्यक्ष महोदय, मैंने प्रश्न हिन्दी में दिया लेकिन उसका जवाब अंग्रेजी में मिला।

चौधरी बंसी लालः दोनों में छुट्टी हैं।

चौधरी शिवराम वर्माः अध्यक्ष महोदय, मेरा अनुपूरक प्रश्न यह हैं कि इन्होंनें " does not arise" कैसे जवाब दिया ? सरकार को इसके बारे में सोचकर प्रोग्राम रखना चाहिए कि हम ने क्या करना हैं।

चौधरी बंसी लालः स्पीकर साहब, हमने सोचकर रखा हुआ हैं मगर यह बात उसी मींटिग में कहनी मुनासिब होगी।

चौधरी शिवराम वर्माः अध्यक्ष महोदय, मैंने यह प्रोक्योरमैंट आफ वीट की बात कहीं कि मण्डियों में जो घपला

होता हैं उसके बारें में कई बार शिकायतें भी हुई हैं। कई जगहों पर इन्सपैक्टर भी सस्पैन्ड हुए और बाद में बहाल भी कर दिये।

Chaudhri Bansi Lal: This does not arise out of the question.

श्री अध्यक्ष महोदयः चौधरी साहब, इसमें कोई रैलैवन्सी नहीं हैं।।

चौधरी शिवराम वर्माः स्पीकर साहब, मेरी यह प्रार्थना हैं कि किसानों को पूरी प्राईस मिलनी चाहिये, सरकार को इसका प्रबन्ध करना चाहिये। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या कोई ऐसा प्रबन्ध किया गया हैं कि जिससे किसानों को पूरी प्राईस मिले।

श्री अमर सिंहः स्पीकर साहब, क्या चीफ मिनिस्टर साहब यह बताने की कृपा करेंगें क्योंकि वे खुद से ताल्लुक रखते हैं कि जिस वक्त किसान वीट की प्रोक्योरमैट करता हैं। तो उस वक्त तो उसे कम कीमत मिलती हैं और जब उसको दोबारा खरीदनी पड़ती हैं तो भाव महंगा पड़ता है। इसका क्या कारण हैं ? क्या सरकार ने इसके लिये कोई बन्दोबस्त किया हैं कि जिसमें किसान को किसी किस्म की तकलीफ न हो।

चौधरी बंसी लालः स्पीकर साहब, प्राईस आफ वीट के बारे में इन्होंनें जो कहा यह तो गवर्नमैंट आफ इण्डिया ही फिक्स करती हैं। स्टेट गवर्नमैंट इस बात की पूरी कोशिश करती हैं कि इसमें किसी किस्म की गड़बड़ न होने पाये। आनरेबल मैंम्बर किसी

वक्त या गवर्नर एड्रैस पर कोई एक अच्छा सुझाव देंगे तो गवर्नमैंट उसको मानने को तैयार है।

चौधरी दल सिंहः स्पीकर साहब मैं यह पूछना चाहता हूं कि जिस वक्त भारत सरकार वीट की प्राईस फिक्स करेगी तो क्या हरियाणा सरकार किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए जो 76रूपये किंवटल का रेट हैं, उस रेट में कोई कमी नहीं होनें देगी ? क्या सरकार ऐसा विश्वास दिलाती हैं ?

चौधरी बंसी लालः स्पीकर साहब, हम तो किसानों के लिये जोर से केस प्लीज करेगे और प्राईस फिक्स करना तो गवर्नमैंट आफ इण्डिया का काम हैं। हम कोई मेंनडेटरी बात नहीं कह सकते क्याकिं सैंटरनल गवर्नमैंट फाईनल अथारटी हैं मगर हमारी कोशिश भी हैं, हमारी राय भी वैसी ही हैं, जो अपोजीशन के मैंम्बरों की है।

चौधरी रिजक राम : स्पीकर साहब क्या गवर्नमैंट ने यह देखा कि एक मन गन्दम की पैदावार में किसान को कितना खर्चा आता हैं।

चौधरी बंसी लालः स्पीकर साहब, मन के हिसाब से तो हम ने कैलकुलेट नहीं किया लेकिन हमने तो केस तैयार किया हुआ हैं। अगर यह बात आनरेबल लीडर आफ दी अपोजीशनप फिर कभी पूछगें तो बता देंगें। 14 तारीख के बाद पूछें तो अच्छा होगा क्योंकि उसके बाद फैसला होना हैं।

चौधरी रिजक राम : स्पीकर साहब, अभी मुख्यमंत्री महोदय ने प्रश्न के पार्ट "सी" का जवाब देते हुए बतलाया कि जो पैदावर के खर्चे में बढ़ौत्तरी हुई हैं उसको ध्यान में रखते हुए कीमतों में इजाफे के लिये गवर्नमैंट कोशिश करेगी। क्या वे बतलायेंगे कि पिछले और इस साल की पैदावार की खर्च में कितना फर्क होता हैं ?

चौधरी बंसी लालः स्पीकर साहब , ये फिगर्ज तो हमारे पास नहीं हैं लेकिन 14 तारीख के बाद चौधरी साहब पूछें तो हम बतला देगें...

चौधरी रिजक राम : स्पीकर साहब, मुख्यमंत्री साहब ने बताया कि जो खर्चे में बढ़ोत्तरी की गई हैं, उसकी फिगर्ज उनके पास नहीं हैं।

श्री अध्यक्ष : चौधरी साहब, ऐग्जैक्ट फिगर्ज उनके पास नहीं हैं।

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, यह देखने में आया हैं कि ये प्रौक्योरमैंट लेट करते हैं, जिससे किसानों को काफी असुविधा होती हैं। मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या सरकार प्रौक्योरमैंट करने के लिये डेट निश्चित करना चाहती है। ताकि किसानों को किसी प्रकार की असुविधा न हो ?

चौधरी बंसी लाल : स्पीकर साहब, यह डेट 13 या 14 की कांफ्रैंस में फैसला होते ही तय की जायेगी। हो सकता हैं कि 14–15

की डेट फिक्स हो जाए क्योंकि वोट मण्डियों में आनी शुरू हो गई हैं।

चौधरी शिवराम वर्मा : स्पीकर साहब, मुख्यमन्त्री जी ने कहा कि अगर यह 14 तारीख के बाद पूछा जाए तो अच्छा होगा। कम से कम यह फैसला तो कर लें कि पिछले साल के मुकाबले रेट्स में कितनी बढ़ोतरी करानी हैं।

चौधरी बंसी लाल : स्पीकर साहब, मैं आनरेबल मैंम्बरों से यह प्रार्थना करूंगा कि 13–14 को जो हम मीटिंग में कहने वाले हैं, उसके बारे में हमें अभी से डाईवलज करने को न कहें ता ज्यादा अच्छा हैं।

*2. Chaudhri Shiv Ram Verma: Will the Chief Minister be pleased to state:

(a) Whether electricity will continue to be supplied for agricultural purposes in the coming days in the State or there is a likelihood of any shortage;

(b) If reply to latter part of (a) above be in the affirmative, the steps taken, if any, for alternative arrangements to ensure full supply of electricity for the purposes?

Chief Minister (Chaudhri Bansi Lal): (a) there is no likedlihood of any shortage of power during the coming days in the State.

(b) Does not arise.

चौधरी शिव राम वर्मा : स्पीकर साहब, मैं यह पूछना चाहता हूं कि ये बातें पिछली बार भी होती रही हैं। अगर अभी हुई तो सरकार ने इस बारे में क्या सोच रखा हैं ?

चौधरी बंसी लाल : स्पीकर साहब, सब सोचा हुआ हैं। आगे बिजली की शार्टे की कोई संभावना नहीं हैं। इस में प्वांयट पन्द्रह मिलियन यूनिट हमने रिजर्व रखी हुई हैं।

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, यह देखने में आया हैं कि जब भी गर्मी का मौसम नजदीक आता हैं तो बिजली की शार्टेज मालूम होती हैं और साथ ही किसानों का एम0 सी0 जीण का ऐग्रीमैंट होता हैं। बिजली कम मिलती हैं एम0 सी0 जी0 पूरा वसूल करते हैं। तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि जब बिजली की सप्लाई में कमी हो तो क्या सरकार उस पीरियड का एम0 सी0 जी0 खत्म करने की बात करना चाहती हैं ?

चौधरी बंसी लाल : स्पीकर साहब, अभी तो बिजली की कमी नहीं, अगर बिजली की सप्लाई में कमी हुई तो सरकार उस पर गौर करेगी। मगर भविष्य में बिजली की कमी की संभवना नहीं हैं।

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब, पिछले दिनों फैक्टरियों और ट्यूबवैल्ज की यह पोजीशन रही हैं कि एक बार दिन में कारखानों चले और रात को ट्यूबवैल चले जिसमें कल्टीवेटर्ज को नुकसान हुआं। क्या यह बात सरकार के नोटिस में हैं और इस बारें में सरकार का क्या करने का विचार हैं, ताकि ऐसी स्थिति पैदा न हो ?

चौधरी बंसी लाल : स्पीकर साहब, यह तो पुरानी बातें हैं, आगे के लिये ऐसी हमारी कोशिश होगी कि ऐसा रिपीट न हो क्योंकि पिछले साल गोविन्द सागर में पानी की कमी की वजह से बिजली की शार्टेज थी और इस बार इस बात की संभावना बहुत कम हैं।

चौधरी रिजक राम : क्या मुख्यामत्री महोदय बतायेंगे कि इस वक्त स्टेट में कितनी बिजली अवेलेबल हैं ?

चौधरी बंसी लाल : स्पीकर साहब, इस वक्त जो बिजली स्टेट में अवेलेबल हैं वह इस प्रकार हैं ?

From Bhakra	3.44 Million units
From Faridabad Thermal Plant	0.26 Million units
From Indraprasth Thermal Station as per our share	1.20 Million units
By purchase from DESU in consequence of agreement regarding share of surplus power with DESU	1.40 Million units
Total	6.30 Million units

स्पीकर साहब, इस प्रकार कुल मिलाकर हमें 6.30 मिलियन बिजली मिलती हैं और 6.15 मिलियन यूनिट्स खर्च होती हैं। प्वांयट 15 हमारें पास रिजर्व रहती हैं।

चौधरी रिजक रामः क्या मुख्य मंत्री महोदय बतायेंगे कि क्या भाखड़ा पावर में हरियाणा का जो हिस्सा हैं वह हमें पूरा मिल रहा हैं या नहीं ?

चौधरी बंसी लाल : हमें पूरा हिस्सा नहीं मिल रहा हैं। इसके बारे में फाईट कर रहे हैं कि हरियाणा को पूरा हिस्सा दिया जाए।

चौधरी शिवराम वर्मा : मुख्य मंत्री साहब ने कहा कि बिजली की कमी होने की संभावना नहीं हैं। मैं इनसे रिक्वैस्ट करूंगा कि ये इस चीज की तसल्ली करलें क्योंकि गाही का सीजन अब सिर पर आने वाला हैं। पिछले साल बिजली की कमी की वजह से ही काफी गेहूं खराब हुई थी।

श्री अध्यक्ष : चौधरी साहब, इन्होंनें कह तो दिया कि कमी की कोई संभावना नहीं हैं।

चौधरी शिवराम वर्मा : सवाल के पार्ट दो में इन्होंनें कहा हैं कि 'डज नोट एराइज'। कल यहां सब ने कहा कि बिजली के बिलों में गड़बड़ होती हैं, जब गड़बड़ होती हैं तो इस 'डज नाट इराइज' का क्या मतलब ?

श्री अध्यक्ष : चौधरी साहब, आप यह देख लें कि आप का सवाल क्या हैं और उसके दूसरे हिस्से मैं क्या हैं ?

चौधरी शिवराम वर्मा : स्पीकर साहब, प्रश्न कमी के बारे में हैं।

श्री अध्यक्ष : वर्मा साहब, आप एक मिनट के लिये तशरीफ रखिये। आपने बिजली की कमी के बारे में पूछा हैं और इन्होंनें जवाब दिया हैं कि कमी की कोई संभावना नहीं हैं।

चौधरी शिवराम वर्मा : अभी मुख्य मंत्री जी ने फरमाया कि भाखड़ा से हमें पूरा हिस्सा नहीं मिल रहा हैं। क्या मैं पूछ सकता हूं कि हमारा कितना हिस्सा बनता हैं ?

चौधरी बंसी लाल : आनरेबल मैम्बर उसके लिये सैपरेट नोटिस दें तो बता देंगे। ये खुद इस बात को जानते हैं कि यह एक लम्बी–चौड़ी कहानी हैं। इसके लिये हम फाइट कर रहे हैं। सैण्ट्रल गवर्नमैंट भी हमारी सहायता कर रही हैं कि हरियाणा में किसी किस्म की बिजली की शार्टेज न हो।

Rates for the supply of Power for Agricultural Purposes

***3 Chaudhri Shiv Ram Verma:** Will the Chief Minister be pleased to state whether there is any proposal under consideration of Government to supply electricity for agricultural purposes at the same rates as are charged in Punjab?

Chief Minister (Chaudhri Bansi Lal): No, Sir.

चौधरी शिवराम वर्मा : सरकार ने 'नो सर' कह कर संतुष्टि कर ली। कल कई सदस्य ने इस बात को रखा हैं कि बिजली के बिलों में बहुत हेराफेरियां होती हैं। मैं चाहता हूं कि एक बार ही इस चीज का फैसला कर लिया जाये कि हम भी पंजाब की तरह फिक्स रेट करेंगें। इससे सरकार को भी आसानी रहेगी और किसानों को भी आसानी रहेगी। मेरे नोटिस में हेराफेरियां के कई ऐसे मामले हैं।

चौधरी बंसी लाल : आनरबेल मैम्बर अगर कोई पर्टिकुलर केस नोटिस में लायें तो हम उसकी जांच करने को तैयार हैं।

चौधरी दल सिंह : क्या चीफ मिनिस्टर साहब, बताने की कृपा करेंगें कि पंजाब में बिजली का क्या भाव हैं ?

चौधरी बंसी लाल : मुझे पंजाब के रेट्स के बारे में पता नहीं कि क्या हैं क्योंकि हमने उनका पैट्रन लागू करने की बात नहीं सोची।

चौधरी दल सिंह : इनके जवाब से यह जाहिर होता हैं कि पुजाब में रेट कम हैं और हरियाणा में ज्यादा हैं। अगर पंजाब में रेट ज्यादा होते तो ये भी लाजमी तौर पर रेट बढ़ाते।

Chaudhri Bansi Lal: There is no reply to presumptions.

चौधरी दल सिंह : क्या मुख्य मंत्री बतायेंगे कि हरियाणा में एग्रीकल्चरल परपजिज के लिये बिजली की फी यूनिट का क्या रेट हैं और इंडस्ट्रीयल परपजिज के लिये क्या रेट हैं ?

चौधरी बंसी लाल : स्पीकर साहब, जहां 50 फुट तक के गहरे ट्यूबवैल्ज हैं वहां पर 15 पैसे प्रति यूनिट के चार्ज किये जाते हैं, जहां 51 से 100 फुट तक गहरे हैं वहां 13 पैसे प्रति यूनिट के हिसाब से चार्ज किये जाते हैं और जहां 100 फुट से ज्यादा गहरे हैं उनके लिये 12 पैसे प्रति यूनिट चार्ज किये जाते हैं। इसके अलावा for loads exceeding 20 KW (26 BHP) relevant medium supply and large supply industrial tariff is made applicable.

Besides the above tariff, which I have already mentioned, token charges in lieu of service rentals @ Rs. 1.50 per BHP per month is charged on all the tubewells. Also M.C.G @ Rs.75per BHP per year is charged ofr five years in all areas exept Tehsils of Mohindergarh Dadri, Bhiwani, Loharu and sub-tehsil Nahar of Tehsil Jhajjar where the rate is Rs.60/- per BHP per years for 5 years. इंडस्ट्रीज के रेट्स मेरे पास नहीं हैं मैं आनरेबल मैम्बर को भेज दूगां।

श्रीमति चन्द्रावती : क्या मुख्यमंत्री महोदय बतायेंगें कि लोहारू और नाहड़ वगैरह में जो बिजली के रेट हैं उनके मुताबिक वहां की प्रोडक्शन इक्नामिकल हैं ?

चौधरी बंसी लालः इसके बारे में सर्वे करवाना पड़ेगा। मगर वहां लोगों का काम जरूर चल सकता हैं।

श्रीमति चन्द्रावती : मैं आपकी मद्द कर सकती हूं।

श्री अध्यक्ष : तो फिर आप उनसे बात कर लेना।

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, यह एक सच्चाई हैं कि बिलों में बड़ी भारी गड़बड़ियां होती हैं। ये सारी गड़बड़िया पर–यूनिट रेट होने की वजह से होती हैं। क्या सरकार कोई ऐसा तरीका अख्तियार करना चाहती हैं जिससे फिक्स रेट पर बिजली सप्लाई की जायें और लोगों को गड़बड़ होने का अन्देशा न रहे ?

चौधरी बंसी लाल : मैं आनरेबल मैंम्बर की बात मानता हूं कि बिलों के सिलसिले में कुछ शिकायतें आती हैं और जहां से शिकायतें आती हैं हम उनको ठीक करने की पूरी कोशिश करते हैं। आनरेबल मैंम्बर अगर कोई सुझाव देंगे तासे उसे हम मानने के लिये हर वक्त तैयार हैं लेकिन फिक्स रेट पर बिजली मुहैया करने को तैयार नहीं हैं।

श्री अमर सिंहः ऐग्रीक्लचरल परपज के लिये बिजली का पर यूनिट रेट 22 पैसे हैं और इंडस्ट्रीयल परपज के लिये 7 पैसे प्रति यूनिट हैं। यह जो अन्तर है क्या मुख्य मंत्री महोदय इसको दूर करने की कृपा करेंगे?

चौधरी बंसी लाल : मेरे पास कारखानों के रेट्स नहीं हैं। मगर फिर भी दोनों में डिस्पैरिटी दूर करना असम्भव हैं।

चौधरी शिवराम वर्मा : जैसे अभी सुझाया गया हैं कि फिक्स रेट कर दिया जाये इससे सरकार को भी आसानी रहेगी और किसान को भी आसानी रहेगी। आप भी पंजाब की तरह फिक्स रेट क्यों नहीं कर देते ?

चौधरी बंसी लाल : मैंने बताया हैं कि ऐसा करना पौसीबल नहीं हैं और कोई आलटरनेटिव इसको खत्म करना चाहते हैं ?

चौधरी दल सिंह : यह तो एम0 सी0 जी0 का तरीका हैं यह फेल हो चुका हैं। क्या सरकार इसको खत्म करना चाहती हैं?

चौधरी बंसी लाल : जहां तक एम0 सी0 जी0 का ताल्लुक हैं इससे अगर नुकसान उठाना पड़ता हैं तो उन इलाको में ही उठाना पड़ता हैं जो बैकवर्ड हैं और जहां पानी ज्यादा गहरा हैं जैसे महेन्द्रगढ़ और लोहारू वगैरह हैं। जहां पर पानी 25–30 फुट तक मिल जाता है वहां एम0 सी0 जी0 से नुकसान नहीं होता।

चौधरी दल सिंह : क्या आप एम0 सी0 जी0 को खत्म कर रहें हैं या नहीं ?

चौधरी बंसी लाल : नहीं।

चौधरी शिवराम वर्मा : मुख्य मन्त्री जी ने जैसे कहा हैं कि संभव नहीं। मैं पूछना चाहता हूं कि संभव क्यों नहीं ?

Chaudhri Bansi Lal: This in not possible.

श्री अध्यक्ष : जब उन्होंनें कह दिया कि संभव नहीं हैं तो इसका उत्तर और क्या हो सकता हैं।

चौधरी शिवराम वर्मा : स्पीकर साहब, मैं तो यह पूछता हूं कि कारण क्या हैं ?

चौधरी रिजक रामः अभी मुख्यमंत्री महोदय ने बताया कि जो लोहारू वगैरह के इलाके हैं वहां एम0 सी0 जी0 इसलिये लागू नहीं की गई हैं क्योंकि वहां पानी कम निकाला जाता हैं।

श्री अध्यक्ष : इन्होंनें कहा था कि एम0 सी0 जी0 तो लागू हैं.....

चौधरी बंसी लाल : बगैर एम0 सी0 जी0 के वहां बिजली मुश्किल हो जायेगा अगर हम एम0 सी0 जी0 लागू न करें तो हमें घाटा हो जायेगा।

अध्यक्ष द्वारा याचिका समिति सम्बन्धी घोषणा

श्री अध्यक्ष : पंजाब विधान सभा के प्रकिया तथा कार्य संचालन सम्बन्धी नियमों के नियम 293 (1) के अधीन मैं निम्नलिखित सदस्यों को याचिका–समिति में कार्य करने के लिये नाम–निर्देशित करता हूं–

1. श्रीमति लेखवती जैन (उपाध्क्ष) पदेन सभापति

2. राव अभय सिंह

3. लाला किशोरी लाल

4. श्री भगत राम, तथा

5. श्री रामजी लाल।

राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा (पुनरारम्भ)

Chaudhri Hardwari Lal (Bhadurgarth): Mr. Speaker, Sir, in rising to speak, I find myself best with an initial difficulty.That is with regard to the language of teh speech. It is English in which I would feel most at-home. But, I have been receiving unsigned requests, perhasps from the visitors that I should speak in Hindi.

श्री अध्यक्ष : रिक्वैस्ट मान लें तो अच्छा हैं।

चौधरी हरद्वारी लालः वह तो ज्यादा कर सकते हैं आप मेरे से। But, unfortunately, I cannot handle Hindi very well. I

can handle Urdu, but then there would be the same difficulty. As yesterday, I shall try to make some of the points.....

Shrimati Chandravat: Sri, we cannot hear him.(Interruptions and laughter).

Chaudhri Hardwari Lal: There are a few points which I shall be able to make effectiveluy in English, but with your permission, I shall later revert to Hindustani, some kind of Hindustani (Interruptions)

Mr. Speaker, Sir, in commenting on the Governor's Address, I will not have the approach of an unreasoning critic, resort to criticize everything, good or bad. I shall try to have the discriminatory approach of am Member, who would be unsparing in criticism, where criticism is called for, But, I would be prepared to praise where praise is due. The address is a great deal about the past achiveements of tehGovernment. It also speaks briefly about the future programme of the Government. But, it leaves a great deal unsaid about points which should have found place int eh address. I feel, Sir that it lacks in sense of proportion. It lays stress on details, but it says nothing about certain issues, major issues. Which are facing the State today. And, as you would know, Sir, the four majo issues facing the State are:

Corruption, which has assumed frightening proportions;

Inefficeency which, if it is not checked will lead to administrative chaos in the State;

Development and its methods orf implementation; and

Development of the political system which we have chosen to operate.

I shall start with the development of the politicla system. And I shall do so becaues political system is the basis of all our political and administrative activites. It is a pity, Sir, that the Governor's address administrative actvites. It is a pity, Sir, that the Governor's address should have been silent when we, during the last four years do seem to have made a total mess of the political system which we hafe chosen to operate. My association with thsi Houes during the last five years has been rather peculiar, but with the administration, it has been extremely brief. But it has been long enough, Mr. Speaker, to cause me distress to see repid decline of the various demoeratic institutions of the State. Standards of debate and discussions in the House have suffered a woeful decline. I have been a Member o the Legislative Assembly of the State for the last ten years and I do notice that the decline is very appreciable In fact, the House is not the prime forum for discussion of public affairs. It has become rather a field for private and personal wragles. I do not oppose the treasury benches alone. I am addressing thers words, Sir, to both the sides of this House. the oppostion, rightly or wrongly, some will call it rightly, some will call it wrongly, during the last four years, came to hve only one point programme i.e. ouster of Mr. Bansi Lal. Shri Bansi Lal , in his turn, found himself devising means to preserve hom self, It was natural and that led, Sir, to such a decline of standards in the House, short

sittings, afewer sittings, year by year, because the Opposition will try to decoy Members of the other side. The Chief Minister, in order to preserve himself, will try to prevent all contact between his supporters and those who sould lkie to win over those who would like to win over those neither side. At the same time, I am concerned not to please anybody here, but to point out factors which have led to a most regrettabel and the status of this House. After all, democracy is a form of Government which is run through discussions. And, judging from the way we have been discussing public affairs in this House during the last four years the future of democracy in this State, seems very dimindeed Day before yesterday, Sir, when I was congratulating you on your election to this agust office, I happened to maek a remark and I must repeat that remark that even the dignity of office of the Speaker suffered a woeful decline and, quite often, the Speaker became the, the subject of very unpleasant comment , Sir, when the spokesman of the House suffers indigniiy, the House it self suffers in popular esteem. Its is, therefore, Sir, that I take the first opportunity to point out this commission in the Governor's address, the said decline in the standards of debates and discussions in this House and a noticeable decline in the dignity and the status of thsi House. Both the sides will do well, Sir, to ponder over this aspect of the functioning of democracy in the State. I have suggestion to make. We recently went to the polls. Rightly or wrongly, on our side, fortunately or unfortunately, we have been defeated. The Congress has won. I venture tosuggenst that we, been defeated. The Congress has won. I venture to suggest that we, on this side of the House, should accept the defeat gracefully. (Voices; Hear, hear). Mr. Speaker, Sir, I am very agateful for

the appreciative remarks (Intrruptions) Well, Sir, we must accept the defeat appreciative remarks (Interruptions). Well, Sir, we must accept the dfeat gracefully. Of course we would have liked to win. Of course we also wnat that we should defeat the Government. But then there are accepted ways of sending the Government out of office. One is waiting for the next poll. It will be ratehr a lons wait (Interruptions). It will rather be a long wait five years. But I am sure, Sir, Mr. Bansi Lal is bound to make mistakes and if he makes mistakes, we can well exploit those mistakes and can be sure of our victory at the next poll.

चौधरी रिजक रामः बीच में हटाने का रास्ता बताओ कोई (हंसी)

Chaudhri Hardwari Lal: The only other way is to defeat the Government.....

Pandit Chiranji Lal Sharma: But this dream will not materialize.

Chaudhri Hardwari Lal: The only other way is to defeat the Government out of office, in the Houes itself i. e. on the floor or the House.

Now there again the methods are well-known and accepted, not for Haryana-Haryana has rather a very sad experience all these four years, we always trying to oust the Government and the Government always trying to preserve it self through methods which are not the accepted methods.(Interruptions)

A Voice: Why not five years? Why not inculde 1967?

Chaudhri Hardwari Lal: Well I have no objection to include that.

In any case, Sir, we must i.e. both sides must try to void what we have been doing for the last four years of so. It is onluy then that we cna resote the dignity of this House and it is only then that we can work the democtatic system. If we continue with our lod mehods, the Opposition trying to exploit the stuation to the disadvantage of the Chief Minister, after all he will be forming his Government, now I think he will be expanding his ministry and this is bound to leave some disgruntled element.....

Chief Minister (Chaudri Bansi Lal): You will not be allowed to exploit the situation.

Chaudhri Hardwari Lal: It will not behove us to exploit that situation. In fact if we both play the game fairly and there are rules of the game, well known rules of the game, as to how the democracyis to work, if we play the game fairly, then the obvious method of ousting the Government is to exploit the mistakes of the Government which it may make during its term of office. There seems no other way.

A Voice: They have started defections.

Chaudhri Hardwari Lal: In any case, Sir, I do not know whether they have started with defections or we shall start. So far there seems to be no defections. It is also in the air that there will be a Bill on defections. But if the Opposition on this side and the Treasury Benches on that side decide

today or during the Session that we will not accept defectors-let the Chief Minister declare, he is in a safe position 51 and including you 52, of course you have severed your connections-if the Chief Minister decided not to accept the defectors, we must respond and undertake not to take anybody from the Treasury Benches, not to accept any disgruntled in the Oppostition, Government will be safe and nobody can oust it , and it will be only then that we can work the whole thing properly. Otherwise we will make ourselves a laughing stock of the country-short sessions; defections; very few sittings; no discussion; no debates.....

Chaudhri Rizak Ram: And distribution of offices.

Chaudhri Hardwari Lal: The Leader of the Opposition suggests distribution of offices, but I do not blame the Chief Minister for that unduly. If he wants to continue as Chief Minister he will have to do something, if we are up to mischief. We should also play the game fairly, unless the game is played fairly, the democracy isa a system which cannot be worked properly. So this is the first point that I should like to make and I addressed these piints to both sides of the House. It was, therefore, that I said that I will not approach the issue as an unreasoning critic and I am approaching the issue from the point of a Member of the House who is interested in echancing the dignity of the House and who is interested in democracy being worked in the State in a very proper manner.

Then the other issues, Sir, which I mentioned earlier also issues which are common to both sides of the House corruption inefficiency and development. All these issues are common to both sides. In fact Government alone

cannot tackle any to these issues n developing the country alone. In developing the State, the major issues are common both to the Oppositiion and the Government.

There is seldom and there can be seldom any room for controversy so far as the major issues are concerned. Take the case of corruption. Government cannot tackel it alone.There is not a departmentof the Government which is free from corruption. This is a fact. But there in not a branch of life in the country which is free from corruption. Corruption has become the national evil. It is all a matter of the Character of the people, it is all a matter of public opinion and the Government alone cannot create public opinion. It is an issue in which the Government can succeed even partially only with the co-operatiion lof the public and the opposition. I will not take the case of any department.

As a matter of fact now I can start speaking in Hindi. There sere only some difficult words/terms in the political system, the Hindi equivalent of which I did not know. But now it will be easy.

यह ईटों पर आप ने कंट्रोल कर रखा हैं। इन का भाव मेरा ख्याल हैं 51रूपये फी हजार का हैं और इस 51रूपये में भट्ठे वाले का मुनाफा भी शामिल है। लेकिन इस प्रांत में कोई हिस्सा ऐसा नहीं हैं जहां 90 हजार से कम भाव पर ईट मिलती हो (विघ्न) हां ठीक हैं कहीं भाव 100रूपये भी हैं, 110रूपये भी हैं और कई जगहों मैंने देखा हैं 150रूपये भी हैं चाहे डेढ़ मील से ही ईट लानी हों। वे कहते हैं कि ईट तो आप जरूर लो लेकिन

इसे आप अपने छकड़े या ट्रक में नहीं ले साकते ट्रक हमारा ही होगा जो ले जायेगा और रसीद 51रूपये की ही देते हैं बाकी ट्रक छकड़े में सबकुछ आ जाता हैं किराये के तौर पर। आप देखें इतनी खुली कुरप्शन हैं और सारे प्रांत के साथ कुरप्शन हैं। गवर्नमैंट को पता नहीं किस भाव देते हैं, 51रूपये ही देते होगें लेकिन पब्लिक की कोई संस्था ऐसी नहीं, कोई आदमी ऐसा नहीं जिसे कट्रोल रेट पर ईट मिल सके। इसके लिए गवर्नमैट भी कोशिश करे और हम भी कोशिश करें ताकि पब्लिक का पहले यही एक भला हो जाए क्योंकि अब सब लोग पक्के मकान बनाना चाहते हैं। कुरप्शन की तो और बाते बहुत सी देखेगें लेकिन कम से कम एक जगह तो पहले खत्म कर दें जिस की मैंने मिसाल दी हैं। यह मिसाल मैंने इसलिये दी हैं कि जब तक सहयोग नहीं होगा। अपोजीशन का भी और गवर्नमैंट का भी तब तक किसी महकमें में किसी ब्रांच से यह कुरप्शन जा नहीं सकती। हालात इस किसम् के हैं कि हर जरूरतमंद आदमी मान लेगा कि 100रूपए हजार के ले लों और रसीद 51 की ही दे दो। इसके लिये शिकायत करेगें तो शिकायत सुनी नहीं जायेगीं। पहले जिले के दफ्तर में दिक्कत होगी और फिर आगे और होगी। इस सिलसिले में मैं चीफ मिनिस्टर साहब की तवज्जूह दिलाऊंगा कि हमारी डिस्ट्रिक्ट ग्रीवैंसिजं कमेटीज हैं। एक मौका ऐसा था कि मैं इनके खिलाफ था। मैं समझता था कि गवर्नमैंट ने जनता की हरदिल अजीजी हासिल करने के लिए इन्हें सरदार प्रताप सिंह कैरो के वक्त में ऐसे ही बना दिया गया था। इस कमेटी की मिटिग्ज हुईण

कई मीटिग्ज में मैं हाजिर हुआ। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि यह चीज अगर ठीक ढंग से चलती रही तो मुफीद साबित हो सकती हैं लेकिन जिस तरह से इस कमेटी को काम करना चाहिए था उस तरह नहीं किया चीफ मिनिस्टर साहब, सोच लें और इस कमेटी को मुअस्सर तरीके से चलाने की कोशिश करें। थोड़ा सा टाईम डिवोट करने की जरूरत हैं। वजीर साहेबान, अफसर बड़े मशगूल होते हैं। अगर मीटिंग का वक्त 11 बजे हो तो साढ़े बारह बजे आते है। हम जैसे आदमी बैठ कर, इन्तजार करते हैं, कुछ थक कर वापिस चले जाते हैं। जब मिनिस्टर साहब आते हैं तो लंच टाईम हो जाता हैं। इस तरह टाईम का पाबन्द न होने से जनता को बड़ी तकलीफ होती हैं। कुछ ऐसा हल निकालें जिससे जनता को परेशानी न हों। मींटिग एक दिन की बजाये दो दिन रख लें, चाहे महकमा वाईज रखें, कुछ भी करें, अगर इसको मुअस्सर तरीके से चलायेंगे तो बहुत कुछ हो सकता हैं और अपोजीशन भी पब्लिक के लिये कुछ काम कर सकेगी। आज पब्लिक कुरप्शन से बहुत तंग हैं, दु:खी हैं और इन–एफिशिएंसी आजकल कुरप्शन का कजन हैं। कुरप्शनही ऐसा कारण नहीं हैं जो इन–एफिशिएंसी पैदा करें, इन–ऐफिशिएंसी के और भी कारण हैं। स्पीकर साहब, आप बिलकुल इस बात से वाकिफ हैं कि राज्य का काम ढीला पड़ चुका हैं। आप यह न समझें कि मैं नुक्ताचीनी की गरज से यह बात कह रहा हूं। इस बात को चीफ मिनिस्टर साहब जानते हैं, हम सब जानते हैं कि स्टेट का काम ढीला हैं.....

चौधरी बंसी लालः चौधरी रिजक राम जी कुछ और ही कह रहे थे। (हंसी)

चौधरी हरद्वारी लाल : ये बहुत कम बोले हैं, मुझे पता नहीं क्या कह रहे थें। जिस वक्त इनके 19 मिनिस्टर थे और हमारे 23 मिनिस्टर थे उस वक्त भी राज्य का काम ढीला था। यहीं नहीं, आज भी ढीला था। इस ढीले पन का कारण क्या हैं ? कारण मालूम करने के लिये चीफ मिनिस्टर साहब कुछ खास काम करें। कुछ प्रोसीजर ऐसे हैं जिन को बदलने से ठीक हो सकता हैं। कुछ इस किस्म केरूल्ज और और प्रोसीजर बने हुए हैं जिनसे ढीलापन चलता रहता हैं, कोई काम सिरे नहीं चढ़ता क्योंकि इसके साथ–साथ कुरप्शन हैं। स्पीकर साहब, मुझे एक बात जरूर कहनी पड़ेगी। अफसरान की भर्ती को जो सिस्टम हैं वह भी इन–ऐफिशिएंसी की ऐ वजह हैं। रिक्रूटमैंट एजेंसीज को लाजमी तौर पर री–आर्गेनाईज करें या इसको इतना मजबूत बनाए ताकि जो अफसरान की भर्ती हैं वह ठीक तरह से सिस्टेमैटिक ढंग से हो। कुछ अफसरान का रवैया बहुत खराब हैं। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा हैं कि आजादी मिलने के 24 साल बाद भी अफसरान का रवैया ठीक नहीं हुआ। पंडित जवाहर लाल नेहरू मर गए यह कहते कि अफसरान का रवैये में तबदीली होनी चाहिए। मुझे निहायत अफसोस हैं, स्पीकर साहब, अफसरान के रवैये आज भी वही हैं जो पहले होता था। अगर यह समझें कि हमने पब्लिक की सेवा करनी हैं, यह पब्लिक का काम हैं तब रवैये में तब्दीली

आ सकती हैं। एक आदमी जिस काम को दो दिन में कर सकता हैं वह एक दिन में भी कर सकता हैं। अगर वह यह समझे कि हम मालिक हैं, सरकार हैं तो पहले रवैया था वहीं रहेगा। स्टेट में इन–ऐफिशिएंसी इतनी हैं जिसका ठिकाना नहीं, यह हर एक आदमी का तजुरूबा हैं। मैं आपको छोटा सा तजरूबा बताता हू। 15 दिन की बात हैं, नतीजे निकलने के दो दिन बाद मेरे पास पैसों की कमी थी। खजाने में अढ़ाई सौरूपये जमा थे, मैनें समझा वह निकलवाकर लाऊं।

चौधरी बंसी लाल : सिर्फ अढ़ाई सौरूपये ही थे ? (हंसी)

चौधरी हरद्वारी लाल : मैं खजाने में गया, लिखकर दरखास्त बगैरा दे दी और मैंने कहा कि एक बजे आऊंगा और पैसे ले जाऊंगा क्योंकि दो बजे बैंक बन्द होता हैं। मैंने कहा कि एक बजे तक सारी तैयार होनी चाहिए। जब मैं एक बजे खजाने में गया तो देखते हैं कि एक बजे हैड क्लर्क ही वहां नहीं हैं। यह झज्जर कलां की बात हैं। एक कर्मचारी ने कहा कि हैड क्लर्क आया था लेकिन उसके पास फार्म नहीं हैं। मैंने कहा कि मैं फार्म कहां से छपवा कर लाऊं, आपको तैयार रखने चाहिए। वहां पर एक एस0 डी0 ओ0 था, वह एक शरीफ आदमी था, उन्होंनें किसी और आदमी की दरखास्त से फार्म निकलवाकर दे दिया ताकि मुझे कोई तकलीफ न हो।

चौधरी बंसी लालः आपको ऐफिशिएंसी की दाद देनी चाहिए।

चौधरी हरद्वारी लाल : आज सिस्टम इस किस्म का बन गया हैं कि आम आदमी तहसील या जिला के दफ्तरों में कोई काम आसानी से करवा नहीं सकता। स्पीकर साहब, मैं आप की मारफत गवर्नमैंट से पुर–अदब दरखासत करूंगा कि जब तक किसी ढंग से कुरप्शन और इन–ऐफिशिएंसी ऐडमिनिस्ट्रेशन से दूर नहीं जाएगी तब तक जनता को फायदा नहीं पहुच सकता। हमारा यहां पर डिसक्शन करने का भी कोई फायदा नहीं, अगर फायदा हैं तो वजीरो को हैं जो चण्डीगढ़ आ जाते हैं। जनता को पहले जितना दुःख था आज उससे ज्यादा दुःख हैं। जब कि कोई आदमी बगैर पैसे से या बगैर सिफारिश से किसी दफ्तर में अपना काम नहीं करवा सकता तो हमारा यहां डिस्कशन करने का कोई फायदा नहीं, हम बेशक यह कहकर खुश हो ले कि हमने इनकी नुक्ताचीनी की हैं लेकिन इसका कतई फायदा नहीं। इस चीज को दूर करने के लिए जो सहयोग हम दे सकते हैं वह हमें देना चाहिए और देंगे। एक ही नहीं, मैं दो गांव मिसालें देता हूं। स्पीकर साहब, आपको ताज्जुब होगा, पाच साल हो गए हैं, दो गांव हैं एक माजरी और गोहना, इन गांवों के नजदीक से नहर गुजरती हैं इसमें एक जगह पर पुल नहीं हैं। बरसात के मौसम में पानी आ जाता हैं, लोग बड़ी मुश्किल से गुजरते हैं। किसी ने कहा कि इस पर पुल बना दो, गवर्नमैंट ने कहा कि इतनारूपया

जमा करवा दो तो पुल बनेगा। पांच साल हो गए हैंरूपया जमा करवाए हुए लेकिन अभी तक वह पुल नहीं बना। चार दफा मैं जा चुका हू, मुझे शर्म आती हैं कि जनता को क्या जवाब दें। वे कहते हैं किरूपया भी जमा करवा दिया अब पुल क्यों नहीं बन रहा ?

चौधरी बंसी लाल : क्या पांच साल हो गए हैं ? इस बीच में तो आप भी आ लिए, आपने क्यों नहीं बनवा लिया ?

चौधरी हरद्वारी लाल : मुख्य मन्त्री साहब को यह चाहिए कि वे इन बातों को बड़ी संजीदगी के साथ ध्यान से सुनें और इन बातों पर एक्शन लें। इन–ऐफिशिएंसी की जो खराब चीज हैं वह ठीक हो सकती हैं। ये तीन चार मिसालें जो मैंने इन–ऐफिशिएंसी के सिलसिले में दी हैं, इनके इलावा मैं एक और चीज की तरफ सरकार की तवज्जुह दिलाना चाहता हूं। इन–ऐफिशिएंसी का एक बड़ा कारण यह हैं कि जो हमारे नये मुलाजिम हैं वे न लिख सकते हैं और न पढ़ सकते हैं। हालत ऐसी होने वाली हैं कि अगर यही हाल रहा तो आने वाले पांच सालों में पता नहीं क्लर्क की पोस्ट के लिए क्या क्वालिफिकेशन रखेंगें। मैंट्रिक पास तो काम दे नहीं सकता। ग्रेजुएट लें तो उस पर भी शक होता हैं कि न जाने वह लिख सके या न लिख सके। आज जो शिक्षा की दशा हैं उसकी तरफ खास ध्यान देना चाहिए। इस सिलसिले में मुख्य मन्त्री साहब को अलहदा मिल चुका हूं, कह चुका हूं। मैं उनसे यह जानना चाहता हूं, दकि किस जबान में अंग्रेजी में, हिन्दी में, उर्दू में– किस लहजे से उनके पास दरखास्त करूं, खुशामद से करू

या गूस्से से करूं, कैसे कहूं जिससे शिक्षा का स्टैंडर्ड ऊंचा करने की तरफ ध्यान दे। शिक्षा का इन्तजाम होना चाहिए.....

चौधरी बंसी लालः यह तरीका ठीक है।

चौधरी हरद्वारी लाल : अगर यह ठीक हैं तो मैं बिल्कूल सही रास्ते पर हूं। स्पीकर साहब, आप किसी स्कूल में चले जांए, शिक्षा की बुरी हालत है। मेरे गांव का स्कूल हैं जिसको हमने 1945 में बनवाया था। लोगों के पैसे से बनवाया था। वह स्कूल अच्छी संस्था बन गई थी, हर साल चार–चार वजीर्फ फर्स्ट क्लास और सेंकड क्लास के आते थे, लेकिन पिछले साल मैंने पूछा कि भाई कितने लड़के पास हुए ? बताया गया कि 136 लडके इम्तिहान देने गए थे और 26 पास हुए और 26 के 26 थर्ड डिविजन से पास हुए। मैं आपको बिल्कुल सही बताता हूं। यह एक प्राइमरी स्कूल हैं, वहां सात आठ सौ बच्चे हैं। वहां हैडमास्टर ऐसा हैडमास्टर था जिसको एक दफा नहीं दो दफा स्टेट अवार्ड मिला है। (इस समय मुख्य मन्त्री जी सदन से बाहर चले गये) अब मैं क्या बतलाऊंगा, मुख्य मंत्री साहब तो उठ कर चल पड़े हैं, मैं तो एक दो असल बाते कहने था। (विघ्न) –ऐजुकेशन मिनिस्टर साहब तो साबिक हो गए हैं। खैर, यह जो पालिसी आई कि हरेक को उसकी जगह से तबदील कर दें, यह हैडक्वाटर भी तबदील हो गया। वह एक बहुत शरीफ हैडमास्टर था, यहां के एक लेडी मैंम्बर हैं उनका रिश्तेदार है, मेरा तो कुछ लगता नहीं था, लेकिन वह भी उस पालिसी का शिकार हो गया। अब वह स्कूल एक

ऐजुकेशनल संस्था नही रही बल्कि यंग रफियन्ज का डैन बन गया हैं। वह स्कूल एक एजेकेशन संस्था नहीं रहीं बल्कि यंग रफियनज का डैन बन गया है। वह स्कूल 30–35 साल पुराना हैं जो बहुत अच्छा स्कूल था। इस किस्म की मिसालें की मिसालें दूसरी भी दी जा सकती हैं। हर जिले में, करीब–करीब हर गांव में इस तरह कि मिसाल आपको मिलेगी। स्पीकर साहब, आप किसी तरीके से मुख्य मन्त्री जी को इस बात के लिये रजामंद करें कि वे इस पालिसी में कोई न कोई तबदीली करें। ठीक हैं वे बड़े फैसले करने वाले आदमी हैं, अंग्रेजी में जिसे मैन आफ डिसिजन कहा जाता हैं, डिसिजन लेने की बड़ी कैपेसटी हैं उनकी ड्राइव भी हैं उनके अन्दर लेकिन इस किस्म के जो आदमी होते हैं वे जिद्दी भी बहुत होते हैं। जिद्द वे छोड़ दे तो बहुत अच्छी बात हो इस पालिसी में बड़ी तबदीली की जरूरत हैं वरना हरियाणा के अन्दर जहां तक देहाती शिक्षा का सवाल हैं वह खत्म हो जाएगी। शहरों में तो दूसरी बात हैं। वहां अच्छे स्कूल भी हैं, बुरे स्कूल भी हैं, और बच्चे वहां जाएंगे जहां अच्छे स्कूल हैं। देहातों में ऐसी च्वाइस बच्चों को नहीं हैं। तो आप की विसातत से साबिक जो हमारे शिक्षा मन्त्री हैं या चौधरी भजन लाल जी जो रह गए हैं और वैसे तो मुख्य मन्त्री साहब भी सुनेंगे आकर और पढ़ेगें भी थोड़ा बहुत, इन सबसे में अर्ज करूंगा कि इस पालिसी में जरूर तबदीली होनी चाहिए बल्कि इन टीचर्ज के साथ बातचीत कर लेनी चाहिए। पता नहीं क्या झगड़ा है या नहीं, मैं टीचर्ज के प्रैजिडैन्ट को जानता हूं, वह तो निहायत माकूल आदमी हैं। मुख्य मन्त्री जी

से मेरी बात हुई थी। इन्होंनें खुद माना हैं कि वह निहायत माकूल आदमी है। फिर मैं नहीं समझता कि उनसे बात करने में क्या हर्ज हैं ? अगर यह टीचर्ज वाला मसला हल हो जाए तो तभी हमारे पास कंटैन्टिड लौट आफ टीचर्ज हो सकता हैं और कम से कमरूरल साईड के अन्दर इस शिक्षा का थोड़ा बहुत असर बन सकता है वरना अगर यही हाल रहा तो जो बच्चे हमारे देहातो मे रहते हैं उनकी हालत कोई अच्छी नहीं हैं। आप किसी भी गांव में जाकर, स्पीकर साहब, खुद देख लें। एक बात खास तौर से देहाती स्कूलों के मुताल्लिक, स्पीकर साहब, मैं कहना चाहता हूं। असल चीज यह हैं कि तालीम के महकमे का, ऊपर से लेकर नीचे तक का, सारा ढांचा ही बदलने की आवश्यकता है। ऊपर से मेरा मतलब चौधरी माडू सिंह से नहीं हैं। मैं तो समझता हूं कि वजीर किसी किस्म का भी हो सकता हैं। (विघ्न) मैं तो तालीम के मुताल्लिक कुछ जानता था लेकिन अगर कोई न भी जानता हो तब भी वह चीज5 काबिले मुआफी हैं। वजीर के केस में तालीम वाली चीज काबिल मुआफी हैं। उसे अपने महकमे की ऐकस्पर्ट नालेज हो या न हो लेकिन उसको उसके नीचे जो अफसर हों वे कम से कम ठीक हों। महकमे का सबसे बड़ा अफसर ठीक होना चाहिए, उसके नीचे का अफसर जो हो वह ठीक होना चाहिए। इस सारे ढांचे का जब तक बदला नहीं जाएगा तब तक शिक्षा का सिलसिला बन नहीं सकता।

इसके बाद स्पीकर साहब, मैं डिवेल्पमैंट में जिक्र करूगा। डिवैल्पमैंट तीन चीजों पर मुनस्सर है। एक तो कुरप्शन और इन–ऐफिशिएंसी दूर की जाए, यह मैं अर्ज कर चुका हूं, वरना किसी शोअबे में डिवैल्पमैंट ठीक तरीके से हो ही नहीं सकती। दूसरे जनता का सहयोग हासिल हो। दस बीस साल पहले यह कहा करते थे कि जनता बड़ी इन–डिफरैन्ट हैं, पैथिटिक है और सहयोग नहीं देती है। आज तो जनता का सहयोग हर जगह, हर काम में हासिल हो सकता हैं बल्कि वह चाहती हैं कि किसी तरह से डिवैल्पमैंट हो। जनता ने जगह–जगह स्कूल बिल्डिंगें लाख–लाखरूपया खर्च करके, अपनारूपया इकट्ठा करके, खुद बना दी है। तीसरी चीज यह हैं जैसा मैंने अर्ज किया कि प्रान्त में शिक्षा का स्तर लाजमी तौर पर उठना चाहिए। आज हम यदि इस बात को महसूस नहीं करते हैं तो दस साल के अन्दर जरूर करेंगे। दस साल के बाद हमारा ऐडमिनिस्ट्रेटिव परसोनल जो हैं वह इस किस्म का होगा कि उससे आप काम नहीं करा सकेंगे। तो स्पीकर साहब, इन तीनों चीजों पर डिवैल्पमैंट इन्हसार हैं।

स्पीकर साहब, मुख्य मन्त्री साहब, अगर यहां होते तो दो चार अच्छी बातें भी मैंने कहनी थी।

श्री अध्यक्ष : उनके कमरे में लाउड स्पीकर लगा हुआ हैं।

चौधरी हरद्वारी लाल : वहां गए हैं तब तो ठीक हैं। मैं तो यह देखता हूं कि वे ज्यादातर लौबी में ही बैठे रहते हैं। खैर, बहुत सी ऐसी बात हैं जो पिछले चार साल में हुई हैं और जिनको लाजमी तौर पर प्रशंसा भी करनी चाहिए। अगर मैं यह नहीं कहूंगा तो फिर वाकई ही मैं उस किस्म का क्रिटिक बन जाऊंगा जो सही बात को गलत कहने लग जाए। ठीक काम हुआ हैं, मैं जानता हूं। हमारी ऐग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी हिसार के अन्दर, यह बिल्कुल मानी हुई बात हैं पिछले पांच साल के अन्दर बहुत काम हुआ। अब जो रिपोर्ट आई हैं उसमें लिखा हुआ हैं कि Agriculture University Hisar is the first Agriculture University in the country. मेरा ख्याल हैं कि आने वाले पांच साल के अन्दर वह हमारे देश में एक नमूने की यूनिवर्सिटी होगी। मैंने खुद भी देखा हैं और दूसरे लोगों ने भी देखा हैं। यह बिल्कुल तारीफ के काबिल काम हुआ हैं। उसके मुताल्लिक पता मुझे इस वास्ते हैं कि वहां के वाईस–चांसलर को मैं जानता हूं। मैं उनसे बात भी करता रहता हूं। वे कहते है कि वे इस यूनिवर्सिटी को इस वास्ते बना सके हैं कि चीफ मिनिस्टर की पूरी इमदादरूपयेकी ही नही बल्कि हर चीज की जिसकी भी उन्हें जरूरत हो, हासिल हैं। इन्होंनें उन्हें कहा हैं कि मैं कुछ नहीं जानता तुम इस यूनिवर्सिटी को बनाओ। बड़ी तारीफ की बात हैं। मुझे उम्मीद हैं कि वह भी बनेगी बशर्ते कि कोई मुनासिब किस्म का आदमी वहां जाए। सिर्फरूपया से कोई संस्था नहीं बनती।

एक सदस्य : आप चले जाएं।

चौधरी हरद्वारी लाल : वह मैं भी सोच लूंगा। खैर, मैं स्पीकर साहब, यह अर्ज कर रहा था कि सिर्फरूपयों से कोई संस्था नहीं बनती। सही किस्म का आदमी अगर वहां भेजा जाएगा, जैसा कि हिसार यूनिवर्सिटी में हैं और मैं निवेदन करता हूं कि हमें दूसरी यूनिवर्सिटी को भी ऐसा ही बनाना चाहिए।

चौधरी रिजक राम : दोनों को एक ही क्यों न कर दे ?

चौधरी हरद्वारी लाल : मैंने यह भी सुझाव दिया था कि दोनों को एक ही बना दिया जाए। दो कैम्पस हों हिसार और कुरूक्षेत्र। एक ही वाईस–चांसलर दोनों कैम्पस का इन्तजाम कर सकता हैं। उसमें खर्चा भी कम होगा।

मैं, स्पीकर साहब, मैडिकल कालेज रोहतक की भी तारीफ किए बगैर नही रहूंगा। मैडिकल कालेज, रोहतक बड़ा बदनाम हो चुका था। हालत यह थी, हैं वह हंसी की बात मगर सच्ची हैं। मेरा एक भानजा हैं। उसको अंग्रेजी शराब का ठेका मिल गया। मुझे दिलचस्पी थी कि उसे कितनी आमदनी होती हैं। एक रोज मैं वहां गया। मैंने उससे पूछा कि कौन–कौन सी शराब बेचते हो ? वह कहने लगा कि और तो यहां कि हैं, सोलन वगैरा की लेकिन कोई 6 बोतले स्कौच विस्की की हैं। मैं सोचने लगा कि स्कौच विस्की रोहतक मैं कौन पीता होगा! वह कहने लगा मेडिकल कालेज में जाती हैं। मैंने पूछा किस लिए ? उसने बताया

कि बीमार लोग आते हैं और कहते हैं मंहगी से मंहगी और अच्छी से अच्छी अंग्रेजी शराब दो हमने डाक्टर को पेश करनी है। यह हालत बन चुकी थी इस मैडिकल कालेज की। मुझे बेहद खुशी हैं कि खासकर पिछले तीन चार साल के अन्दर इस मैडिकल कालेज की जहनियत भी बदल गई हैं और वहां की हालत भी बदल चुकी हैं। मेरे एक अजीज ही इस महकमे के वजीर होते थे जो कि यहां मौजूद नहीं हैं। यह भी एक बहुत अच्छी बात हैं। जहां तारीफ करने की बात होगी 'स्पीकर साहब' मैं वहां तारीफ जरूर करूंगा, मैं इनका मुखालिफ नहीं हूं।

पब्लिक बिल्डिंग्ज पर भी, स्पीकर साहब, पैसा खर्चा गया हैं। बहुत सी पब्लिक बिल्डिंग्ज और चीजें ऐसी थी जो मैंने शुरू की थी। खैर, मेरे से भी कुछ इन्होंनें सीख लिया तो वह बहुत अच्छी बात हैं। मैंने रोहतक के लिए यह कहा था कि शहर के अन्दर जो लड़कियों का कालेज हैं उसकी जमीन को बेच दिया जाए और उससे जो 20–30 या 40–50 लाखरूपया आएगा उससे शहर के बाहर लड़कियों के कालेज की बिल्डिंग बना दी जाए। मुझे खुशी हैं कि शहर से बाहर जहां जेल थी उस जगह पर अब लड़कियों का कालेज बन गया हैं। हिसार में भी इन्होंनें ऐसा ही किया हैं। बड़ी अच्छी बात हैं। यह मेरी तजवीज चौधरी माडू सिंह जी को मिल गई होगी और उन्होनें ऐसा कर दिया। बड़ी अच्छी बात हैं। उन्होंनें ऐसा किया हैं तो मैं उनकी तारीफ ही करता हूं।

3.00 P.M.

यह पर रैस्ट–हाउसिज के बारे में भी बड़ी नुक्ताचीनी की जाती हैं मैं तो यह कहूंगा कि ये बड़ी छोटी बातें हैं। सभी लोग रैस्ट–हाउसिज में बैठते हैं। रैस्ट–हाउसिज की तो चौधरी रिजक राम जी को भी जरूरत हैं और मुझे भी हो सकती हैं, किसी मिनिस्टर को भी जरूरत हैं। आप से पहले जो मिनिस्टर थे उनको तो बहुत ही जरूरत थी। इनके बारे में क्रिटिसिज्म करना अच्छा नहीं लगता हैं। मैं तो यह कहूंगा कि इस किस्म की चीजों पर नुक्ताचीनी करना गलत बात हैं। जो भी रैस्टहाउसिज बनाए गए हैं ये सब के आराम के लिए बनाये गए हैं। यह बड़ा अच्छा काम सरकार ने किया हैं। मैं इसके बारे में भी उनकी तारीफ करूंगा। इस महकमे की और भी कई बातें बड़ी काबिल–तारीफ ही करूंगा। इस महकमे की और भी कई बातें बड़ी काबिले–तारीफ हैं। This si Department of tourism. The achievements of this Department are very much in evidence. टूरिजम डिर्पाटमैंट ने भी बड़ी भारी अचीवमैंट की हैं। जो भी बाहर के लोग ग्रैन्ड ट्रंक रोड से आते–जाते हैं, वे सभी हरियाणा की तारीफ ही करते है। वे अन्दर की तस्वीर को नहीं देखते हैं कि अन्दर क्या हैं, शिक्षा की क्या तस्वीरें हैं ? वे लोग इस डिर्पाटमैंट की अचीवमैंट को देख कर यह अन्दाजा लगा लेते हैं कि हरियाणा प्रदेश बहुत तरक्की कर रहा हैं यहां पर सड़के भी बड़ी–बड़ी और काफी अच्छी बना दी गई हैं जो देश के लिये अच्छी चीज हैं। मैं तो समझता हू कि यहां टूरिस्ट आये, हरियाणा को भी उनके आने से फौरन ऐक्सचेंज आयेगा। हमारी स्टेट का भी फौरन ऐक्सचेज मे हिस्सा होगा। मैं

इस बात की तारीफ करूंगा स्पीकर साहब, तारीफ तो इस बात की करूंगा कि हरियाणा मे जराय–आमदोरफत में बड़ी भारी तरक्की हुई हैं। यह भी बड़ी भारी बात हैं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि सड़के भी काफी तादाद में बन रही हैं। अब हमारे यहां पहले वाली बात नहीं रही हैं। अब तो हर गांव में सडके चली गई हैं। हम अब उस मुसीबत से बच गए कि फलां वजीर से मिलें कि हमारे हल्के में सड़के निकलवाओ। अब पहले वाली बात नहीं रही हैं। सब जगह सड़के पहुच गयी हैं या पंहुच जाएंगी एक बात इसके बारे में मैं जरूर कहूंगा कि इन सारी बातों को कन्सौलिडेट कर लेना चाहिए। कुछ हासिल करने के लिए कन्सौलीडेट कर लेना चाहिए। जो सड़के बहुत पहले की बनी हुई हैं और जो टूट गई हैं या खराब हो गई हैं उनकी भी मुरम्मत होनी चाहिए। मैं अपने ही हल्के की मिसाल देवा हू। हमारी सड़क सन् 1926 में बनी थी। यह रोड सांपला से छारा जाती हैं। अब तो यह बड़ी अहम सड़क का हिस्सा बन गयी हैं। अब तो वह सांपले से रिवाड़ी जाती हैं। मेरे ख्याल में इस सड़क की दस–पन्द्रह साल से कोई मु रम्मत वगैरह करते थे लेकिन गवर्नमैंट ने इसको मुरम्मत कराने की कभी तजवीज नहीं की । मैंने चीफ मिनिस्टर साहब से परसों परले रोज कहा था और उन्होंनें माना भी हैं कि वाकई ही यह सड़क काफी खराब है। उन्होंनें कहा था कि जब मेरी कार वहां से गुजरी तो उसको भी दिक्कत हुई। मैं इस सड़क की मिसाल इस वास्ते नहीं दे रहा हूं कि वह फौरन मुरम्मत के लिए ले ली जाये लेकिन जो भी पुरानी सड़के हैं उनकी मुरम्मत होनी

चाहिए । मैं तो यही गुजारिश करूंगा कि इस तरह सरकार का ध्यान जाना चाहिए। मैं समझता हूं कि इस शिकायत में भी बड़ा वजन हैं कि जो अब नई सडकें बन रही हैं उनमें ईटे आम किस्म की और हल्की किस्म की लगती है। इनके सुपरविजन के लिए भी कोई खास एजेन्सी मुकर्रर होनी चाहिए। अगर किसी को हम आज बनाते हैं ओर एक साल बाद वह टूट जाती है। आजकल ईटें बड़ी खराब क्वालिटी की लगायी जा रही हैं । इसमें चाहे महकमे के अफसरान का कसूर हो चाहे किसी और का हो।

एक सदस्यः वजीर साहिबान का भी कसूर हो सकता है।

चौधरी हरद्वारी लाल : हां वजीर साहिबान का भी कसूर हो सकता हैं लेकिन मूझे तो यह भी पता नहीं कि इस महकमे के कौन बजीर हैं। मैं बहरहाल यह जरूर कहूंगा कि जो भी सड़के नयी बन रही हैं वे ठीक तरह से बननी चाहिये। मैं एक बात और अर्ज कर दूं जो मेरे लीडर साहब ने फरमायी है उस बात में बड़ा वजन हैं। आज हरियाणा में केश प्रोग्राम की बड़ी जरूरत हैं। We are fighting against time. There is no doubt about that. लेकिन केश प्रोग्राम जहां आप करते हैं वहां पर कई किस्म की और भी एहतियातत बरतने की जरूरत हैं, सुपरविजन की भी बड़ी जरूरत हैं। जो भी ऐसे प्रोग्राम हो वे कायदे कानून के मुताबिक हों। जल्दी काम को करने के लिये टारगेट मुकर्रर कर दिये जाते है।

उस टारगेट को अचीव करने के लिये थे न सिर्फ ऐफिशिएंसी को सेक्रिफाइस करते है बल्कि और भी इस तरह की त्रुटियां है।

एक चीज जो खास तौर से यहां क्रिटिसाइज होती हैं उसमें हिस्सेदार नहीं बना चाहता हूं । स्पीकर साहब, आपकी तहसील भिवानी का यहां हाउस में काफी जिकर आता हैं। उस तहसील के बारे में बहुत कुछ कहा जाता हैं। वहां पर अब नहर भी चली गयी हैं, पीने का पानी का भी इन्तजाम हो गया हैं और बिजली भी चली गई हैं। यहां हाउस में कहा जाता हैं कि सब सिलसिला भिवानी तहसील में ही किया जाता रहा हैं। मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो भिवानी तहसील के निर्माण की नुक्ताचीनी करते हैं। अगर आप मैं भी चीफ मिनिस्टर होता तो मैं भी भिवानी में वहीं काम करता जो आज के चीफ मिनिस्टर बंसी लाल जी ने किया हैं। मगर मेरी किस्मत में चीफमिनिटरी नहीं है। (हंसी) हरियाणा के अन्दर सबसे ज्यादा अगर पिछड़ा हुआ और मदद का मुस्तहक इलाका हैं तो महेन्द्रगढ़ और भिवानी का हैं। इसके बाद दूसरे नवम्बर पर झज्जर तहसील आती हैं। चीफ मिनिस्टर साहब ने भी देख लिया कि झज्जर के लोगों में बढ़ी नराजगी हैं ! झज्जर तहसील में चार सीटें थीं, चारों सीटों में से एक सीट मिली हैं, वह भी चौधरी बंसी लाल जी की बड़ी कोशिश के बाद! वैसे तो सारे रोहतक जिले में बड़ी नराजगी हैं लेकिन हमारी तहसील में खासतौर से हैं। जहां तक भिवानी की तहसील का ताल्लुक हैं उसमें मैं खुश हूं वहां पर बड़ी तेजी के साथ निर्माण

हो रहा हैं और होना भी बड़ी जरूरी था। लेकिन जो और दूसरे इजला हैं उनके जो भी पसामान्दे इलके हैं उनकी भी डिवैल्पमैंट होनी चाहिए। प्रान्त के जिन जिलों में इस किस्म की चर्चा हैं कि वहां पर डिवैल्पमैंट का काम हुआ हैं वहां भी बहुत तेजी के साथ होना चाहिए। वैसे चौधरी माडू राम जी रोहतक जिले से बच निकले वरना बच निकलने की कोई सूरत दिखाई नहीं देती थी। (हंसी) जो भी भिवानी तहसील में निर्माण का काम हुआ हैं उसकी तारीफ करता हूं और साथ ही यह अर्ज करता हूं कि जो मुस्तक इलाके हैं और जहां डिवैल्पमैंट की जरूरत हैं उनकी तरफ भी ख्याल रखा जाना चाहिए।

श्री अध्यक्षः चौधरी साहब, जरा समय का भी ध्यान रखें। आपको बोलते हुए चालीस–पैंतालीस मिनट हो गयें हैं।

चौधरी हरद्वारी लाल : स्पीकर साहब, मैं तो इसी ख्याल में रहा कि कल से आप ने किसी को भी नहीं रोका था। जिसने बोलना चाहा बोलते रहे। मैं भी इसी ख्याल से बोल रहा था। अगर आप कहते हैं तो मैं जल्दी ही खत्म कर देता हूं।

मेरे लीडर साहब ने बिजली के बारे में कुछ बातें कहीं हैं। इस हाउस में इलैंक्ट्रिसिटी डिपार्टमैंट बड़ा बहस का मजमून बन गया हैं। मैं पांच साल से यही बहस सुनता रहां हूं। इस हाउस में बहस के दो ही मजमून रहे हैं एक चौधरी बंसी लाल और दूसरे बिजली बोर्ड के चेयरमैन मिस्टर साहनी। मैंने इसी

वास्ते शरू में भी कहा था और मुझे कल भी बहुत दु:ख हो रहा था जब यहां सरकारी मुलाजिमों के खिलाफ इस हाउस में बातें कही जा रही थी। मुझे दु:ख तो इस बात पर भी हुआ जब चौधरी भजन लान जी बोलने वाले साथियों को बन्द करना चाहते थें। वे हरेक बात मेंरूकावट डालने की कोशिश करते थे। यह गलत बात थी उनको ऐसा नहीं करना चाहिए था। इसलिये मैं यह अर्ज करूंगा कि इस हाउस की डिगनिटी को कायम रखने के हमें हाउस मे बातें करनी चाहिए। जो भी परमानेन्ट गवर्नमैंट सर्वेन्ट हो उनके बारें में या उनका नाम लें कर उनके खिलाफ असैम्बली मैं कोई बात नहीं कही जानी चाहिए।

चौधरी रिजक राम : नाम किसी का नहीं लिया गया था। चेयरमैन कहा था।

चौधरी हरद्वारी लाल : यहां हाउस में कुरप्ट चेयरमैंन इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड कहा था। मैं तो यही अर्ज कंरूगा कि आज से हमें इस बात का अहद कर लेना चाहिए। कि उनकी तरफ से या हमारी तरफ से ऐसी बातें नहीं कहीं जानी चाहिए। हमें उन अफसरों के नाम नहीं लेने चाहिए। हमें हाउस के रिवायत को भी कायम रखना चाहिए। मैं तो यहां तक कहने के लिये तैयार हूं कि Haryana owes i a great deal to this officer so far as the expansions of the Electricity Works is concerned. कल गवर्नमैंट की ओर से यहां हाउस में कुछ किताबें तक्सीम कराई गई थी। मैंने रात को वे किताबें देखी उनमें एग्रीकलचर डिपार्टमैंट के

स्टैस्टिक्स देखे थे। हो सकता हैं चौधरी रिजक राम जी ने बात कही हो उसमें वजन हो, लेकिन इतने गलत नहीं हो सकते।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : आन ए प्वांयट आफ आर्डर, सर। स्पीकर साहब, मैं आप से यह जानना चाहता हूं कि जब इस हाउस में किसी आफिसर को आइडैन्टीफाई करके, नाम लेकर या इस तरह से कह कर कि उसका पता लग जाए कि वह कौन हैं, हम बुराई नहीं कर सकते तो क्या बड़ाई की जा सकती हैं ?

चौधरी हरद्वारी लाल : बिल्कूल नहीं की जा सकती और उसका नाम भी नहीं आना चाहिये। यहां तो सिर्फ महकमें का सवाल हैं.....।

चौधरी रिजक राम : स्पीकर साहब, गुजारिश यह हैं कि जहां तक कारपोरेट–बौडीज के चेयरमैन या बोर्ड का ताल्लुंक हैं, उसके नाम लेने का तो नहीं लेकिन इस बात का फैसला अवश्य कर दें कि जो हरद्वारी लाल जी ने बात उठाई हैं, चेयरमैन या बोर्ड की जो इन्होंनें बडाई कर दी थी, can we discuss this or not? So far as I am conmcerned, I did not mention Mr. Sahnki by mame at all. The Chairmaman of the Board said in the Press. Conference something and is it permissible to criticise the action of the Chairman of the Corporate Body or not ?

श्री अध्यक्ष : चौधरी साहब, बात ऐसी हैं कि इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड एक कारपोरेट बौडी हैं। आप बोर्ड डिसकस कर

सकते हैं और उसकी नुक्ता–चीनी भी कर सकते हैं परन्तु यदि आप चेयरमैन का नाम ले कर या 'चेयरमैन' कह कर सम्बोधित करें, तो भी बात वही हैं, इसलिये बात यह हैं कि इस अफसर के बारे में इस हाउस में इल्जाम लगाना या उसे हाउस में डिसकस करना प्रौपर नहीं हैं। उसकी बड़ाई करना भी ठीक नहीं हैं।

चौधरी हरद्वारी लाल : स्पीरक साहब, आपने बजा फरमाया हैं कि बड़ाई करना भी बिल्कुल गलत बात हैं। दौलता साहब की बात को इस हाउस ने तो समझ ही है (हंसी) और मेरे ख्याल में उससे ज्यादा आब्जैक्टिव और फेयर आदमी बहुत कम मिलेंगें! इस बारे में मैने ही माफी मांग ली थी। मैं तो इस बात को सिर्फ इस वास्ते कहता हूं क्योंकि उसका यहां जिकर आया हैं, इस लिए मैने इस बात को कहना जरूरी समझा हैं।

लो वोल्टेज और पावर फेल्योर्ज की लाजमी तौर पर हमारे यहां शिकायत है। इसकी तहकीकात करनी चाहिए और इसका कोई इलाज भी निकालना चाहिए। मैं यह भी समझता हूं कि बिजली की एक्सपैन्शन ऐसी तेज रफतार से हुई हैं कि उसमें लो वोल्टेज और पावर फेल्योर्ज का होना नसैसरी हैं इसके साथ ही इस बारे में यह भी कहूंगा कि यह एक किसम की इल–प्लानिंग हैं। हमें काम उतना करना चाहिए जितनाए करने की हमारे में गुंजाइश हो। लो–वोल्टेज व पावर फेल्यार्ज का लाजमी तौर पर इलाज करना चाहिए क्योंकि देहातों में मैंने देखा है कि बिजली ऐसे फेल होती हैं कि न होने के बराबर है। इसके अलावा एक

और भी मुझे शिकायत हैं। जो कुछ कल यहां पर कहा गया था, उसमें बहुत ज्यादा वजन हैं। पता नहीं तालीम कम होने की वजह से , अनपढ़ होने की वजह से या किसी दूसरी वहज से, बिजली बोर्ड के लोग बेईमान हैं। सब के बारे में तो नहीं, नीचे के स्टाफ के मुताल्लिक ऐसी शिकायतें और जरूर हैं: जैसे मीटर रीडिंग की गलती हैं। इन शिकयतों को हम बोर्ड में भी नहीं भेज सकते.....

चौधरी रिजक राम : मैंने ये शिकायतें नहीं की।

चौधरी हरद्वारी लालः मैं यह नहीं कहता कि यह बात आप ने कही थी, यह चीज यहां पर किसी सदस्य न कही अवश्य थी। इन चीजों की तरफ सरकार को लाजमी तौर पर ध्यान देना चाहिए। एक और चीज, जो आज सवालात के घंटे में भी आयी थी, का जिक्र मैं करना चाहता हूं। मुझे भी यही खतरा हैं कि यहां पर पावर शौर्टेज का बहुत खतरा पैदा हो सकता हैं। अगर यह बात वक्त रहते सम्भाली नहीं गई तो हमारी सारी इकोनमी खराब हो जायेगी, इंडिस्ट्रियल इकौनमी भी और ऐग्रीकल्चरल इकौनमी भी! लेकिन इसके साथ–साथ मैं यह जरूर कहूंगा.....

श्री अध्यक्ष : आप कितना समय और लेंगें ?

चौधरी हरद्वारी लाल : दो–चार मिनट ही लूंगा। कल जो आपने किताब दी थी, उनमें मैंने देखा हैं। 1970–71 में तो 22 लाख टन से लेकर 28 लाख टन फूड ग्रेंन्ज पैदा हुए और 1971–72 में 60 लाख टन हो गये। इस बात का मैं इस वास्ते

जिक्र करता हूं, क्योंकि इसमें कई फैक्टर्ज हैं...फर्टेलाईजर्ज भी हैं और सीड्ज भी हैं ये फर्टेलाईजर्ज और सीड्ज पानी के बगैर इस्तेमाल नहीं हो सकते, यह बात बिल्कुल सही हैं। जहां तक नहरों के पानी का सवाल हैं, हमारी शिकायत हैं और बजा शिकायत हैं कि उसमें कोई बढौतरी नहीं हुई हैं। जितना पानी पहले से हमारे पास हैं भी, वह भी पता नही कैसे तकसीम होता हैं ? इसकी तकसीम में बहुत खराबियां हैं। फूड ग्रेन्ज की पैदावार में जितनी बढ़ौतरी हुई हैं, वह सिवाय इसके कि ट्यूबवैल्ज की मदद से हुई हैं और कोई बात नही हो सकती। ट्यूबवैल्ज के बारे में यह बिल्कुल सही शिकायत हैं कि ट्यूबवैल्ज की दरख्वासतो की डिस्पोजल की दरख्वसतों की डिस्पोजल में, उनकी मन्जूरी में बहुत टाईम लगता हैं। मेरे ख्याल में इसमें रिश्वत वाली बात भी बिल्कुल दूरस्त हैं। चीफ मिनिस्टर साहब को मैं आपकी विसातत से यह अर्ज करूंगा, जो अब यह मौजूद भी हैं, कि इन सारी चीजों की तहकीकात करायी जाए और वे किसी न किसी तरीके से पब्लिक की इन शिकायतों की तहकीकात करायी जए और वे किसी न किसी तरीके से पब्लिक की इन शिकायतों को दूर करे। यदि वे ऐसा करें तो यह एक बहुत ही अच्छी बात होगी। खास कर तीन बातें मैं अवश्य कहूंगा। एक बात तो डिवैल्पमैंट के काम में क्रैश प्रोग्राम की हैं। मैं अर्ज करूंगा कि इस मामले में हमें बड़ी एहतियात के साथ कोशिश करनी चाहिए। लेकिन साथ ही यह नहीं होना चाहिए कि ऐफिशियन्सी यारूल्ज वगैरा, सारे के सारे सैक्रीफाईस हो जाये। दूसरी बात यह हैं कि इसमें सुपरविजन की

सख्त जरूरत हैं। यही नहीं, हर लैवल पर सुपरवीजर की जरूरत हैं। सड़को में भी यह जरूरी है और बिजली में भी यह जरूरी है। तीसरी बात, मैं पहले भी कह चूका हूं, लेकिन उसको दोहरा दूं सिर्फ इसलिये कि अब मुख्य मन्त्री महोदय यहां तशरीफ ले आये हैं कि डिवैल्पमैंट के काम में सियासी मकसूद को कोई दखल नहीं होना चाहिए। चाहे वह भिवानी तहसील हो या चाहे झज्जर तहसील हो, चाहे आपोजीशन का हल्का हैं यारूलिंग पार्टी का , डिवैल्पमैंट के कामों में इस प्रकार का कोई दखल नही होना चाहिए। चौधरी साहब ने यह बात बिल्कुल ठीक कही थी कि इस काम के अन्दर न तो पोलिटिकल स्पोर्ट परचेज करनाी चाहिये और न ही कुछ और करना चाहिए।

एक बात का मै और जिक्र करना चाहता हूं। कल हमारे एक मौजूदा सदस्य ने तीन–चार पर्चिया दिखलाई थी। कि ये बैलट पेपर्ज हैं। मैं यह चाहूंगा कि इस चीज की बड़ी एहतियात के साथ तहीकीकात होनी चाहिए। इस एवान के मुख्तलिफ हिस्सों से यह शिकायत भी आई कि इलैक्शन बहुत अनफेयर हुए हैं। मैं यह शिकायत नही करता। मेरा वास्ता कोई 19–20 कांस्टिचुऐंसिज से पड़ा हैं, इस वास्ते मुझे इल्म हैं। इन कांस्टिचुएंसिज में मुख्तलिफ जिले पड़ते हैं, मैने खुद कैन्डीडेट्स से इस बारे में बात की हैं। हारे हुए कैन्डीडेट्स से भी और जीत कर आये हैं, उन से भी। कोई ऐसी नहीं हुई हैं, जिसे अनफेयर कहा जा सके। मैं खुद इस बात से डरता थाकि कहीं किसी की नराजगी का शिकार न बन

जाऊं लेकिन मुझे इस बात के कहने में खुशी होती हैं कि जहां तक मेरी कांस्टिचुऐंसीज या झज्जर की और कांस्टिचुऐसिज का सवाल हैं, उनमें कोई अनफेयरनैस नहीं हुई हैं और कोई भी किसी किस्म की ऐसी बात नहीं हुई जिसे गलत कहा जा सके। बल्कि यहां आने से पहले, वहां पर जो पुलिस इन्चार्ज थे, उनको चिट्ठी लिखकर आया हूं। I must congratulate you on the admirable role played by the Police in the District during the elections. मैंने उस में यह भी ऐड कर दिया था कि कहीं–कही–स्ट्रे केसिज हुए हैं– जैसें बहादूरगढ़ में एक सब इन्स्पैक्टर एस0 एच0 ओ0 था जिसने पैसा लेकर इलैक्शन में कुछ दिक्कत पेश करने की कोशिश की। I must congratulate the man again, "He was transferred with in two weeks". इसलिये मैं तो ऐसी शिकायत नहीं करता कि इलैंक्शन अनफेयर हुए हैं, बल्कि यह कहता हूं कि अगर इस तरह से इलैक्शन जैसे मैंने 20 कंस्टिचुऐसिज में देखे हैं, हुए हैं तो फिर तो यहां पर डैमोक्रेसी का मुस्तकबिल रोशन हैं लेकिन जब एक तरफ से इतनी गम्भीर शिकायत आये और यह दिखाया जाये कि ये पर्चिया हैं, यह बैलेट पेपर्ज हैं, तो उसकी तहकीकात अवश्य होनी चाहिए। मैं आपका मश्कूर हूं कि मुझे बोलने के लिए इतना वक्त दिया। हालांकि मैंने दो–चार बातें और कहनी थी, फिर भी मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा (सोनीपत): मानयोग स्पीकर साहब,

''हकीकत आशना हूं वाकफे इसरारे हस्ती हूं''

समझता हूं मगर दुनियां को समझाना नहीं आता।

आज अपोजीशन की तरफ से आनरेबल मैम्बर चौधरी हरद्वारी लाल के इस सदन

में ख्यालात, जजबात और तासरात सुनकर खुशी हुई और मैं समझता हूं कि मैं अपने फर्ज मनसबी की अदायगी में कोताही करूंगा अगर मैं इसको कम्पलीमैंट्स पे न करूं। हैल्दी डैमोक्रेसी के अन्दर आज अपोजीशन का होना बहुत जरूरी हैं। आज से पांच वर्ष पहले मैं भी उसी सीट पर बैठता था जहां मेरे भाई चौधरी रिजक राम जलवा अफरोज हैं। और चौधरी हरद्वारी लाल ने अच्छे मैम्बर का एक साबूत दिया हैं, बड़े खुबसूरत तरीके से, कंस्ट्रक्टिव क्रिटिसिज्म की हैं, जोकि होनी चाहिए। ऐसा करना अपोजीशन का फर्ज हैं, आपोजीशन की जिम्मेदारी हैं क्योकि अगर डेमोक्रैटिक सैटअप के अन्दर हकूमत या हकूमत की पार्टी के कान न खीचें जाएं, उनकी त्रुटियों की तरफ तवज्जुह न दिलाई जाए तो हुकमत का दिमाग खराब हो जाता हैं। जिस खुबसूरत तरीके से चौधरी हरद्वारी लाल जी ने अपना रोल अदा किया हैं, मैं एक बार फिर उनको कम्पलीमेंट्स पे करता हूं। आज की उस तकरीर के बारे में मुझे कुछ कहना जो आप ने की हैं। तीन–चार प्वाएंट्स की तरफ आप की विसातत से हाउस की तवज्जुह दिलानी हैं और वे हैं करप्शन, इन–ऐफिशिऐंसी, डिवैल्पमैंट वगैरह–वगैरह और मैं

भी मोहरे तसदीक सबत करने में हैं हिचकिचाऊंगा नहीं। करप्शन भी चलता हैं, इन–ऐफिशिऐंसी भी चलती हैं और डिवैल्पमैंट में कुछ त्रुटियां भी होती हैं और त्रुटियों की तरफ आप की तवज्जुह दिलाना बहुत अच्छा होगा। कल की तकरीर का जो स्टैन्डर्ड था उसके बारे में मैं कुछ हाशिया आराई नहीं करता, बरहाल हकीकत को हकीकत कहना भी जुर्म नहीं हैं। स्पीकर साहब, हरियाणा वजूद में आया था 1 नवम्बर 1966 को। बहुत कुछ कहा गया कि ट्रैजरी बैन्चिज की तरफ से डिफेक्शन को एनकरेज किया गया। पांच साल का अर्सा हुआ ज्यादा नहीं। डिफैक्शन कहां हुई हैं, किसने कराई, आया राम और गया राम के लफ्ज कब वाजूद में आये ? बी0 सी 0 से भी आया राम और गया राम के लफ्जो का प्रोपैगन्डा किया गया। वे कहते थे कि जब हरियाणा वजूद में आया, वह हरियाणा जहां प्रेम और मुहब्बत की मुरली बजती थी लेकिन हरियाणा के वजूद में आने के बाद वहां बुगजों अनाद के नाकूस फूंके गए। भाई को भाई का दुश्मन बनाया गया। हरियाणा पर कलंक लगा, बदनुमा दाग और आठ नौ महीने के बाद वह असैम्बली डिजाल्ब हो गई। डिस्सोल्यूशन के बाद मई, 1968 में हरियाणा में इलैक्शन हुए। कांग्रेस पार्टी फिर बरसरे इक्तदार आई और मौजूदा मुख्य मन्त्री चौधरी बंसी लाल ने अनाने हकूमतन की बागडोर सम्भाली। इस वक्त 48 मैम्बर कांग्रेस के थे और 33 मैम्बर आपोजीशन के। यह कहा गया कि अब कांग्रेस मैंम्बरान की तादाद घटी हैं। इसका तो मैं आगे चलकर जवाब दूगां लेकिन डिफैक्शन कब शुरू हुई और डिफेक्शन कब खत्म हुई इसके बारे

में मैं बताना चाहता हूं स्पीकर साहब, मैं आपकी विसातत से हाउस की तवज्जुह दिलाना चाहता हूं कि उन डिफैक्शन को जन्म देने वाला कौन था ? यह किसी से छुपी हुई चीज नहीं हैं। मौजुदा मुख्य मन्त्री से तो मैं कहूंगा कि डिफैक्शन को खत्म किया, हरियाणा को स्टेबिलिटी दी, एक मजबूती दी, आया राम और गया राम को खत्म किया, हरियाणा को स्टेबिलिटी दी, एक मजबूती दी, आय राम और गया राम को खत्म किया। अब अपोजीशन को शायद यह गिला होगा, यह शिकवा होगा कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं। मैं मुख्य मंत्री को कोई तारीफ नहीं करता (व्यवधान) But facts are facts and they must be squarely faced. डिफैक्शन उस वक्त शुरू हुई जब कांग्रेस के मैम्बरान ने उस वक्त के मुख्य मंत्री को उतारने के लिए हाउस में एक बराबर के मैम्बरान को स्पीकर के तौर पर खड़ा कर दिया। वह थी डिफैक्शन। लेकिन चौधरी बंसी लाल के हकूमत सम्भालने के बाद, बताइए किसी एक कांग्रेस के मैम्बर ने डिफैक्शन की हो। (व्यवधान) जहां मिठास होगी मक्खियां भिनभिनाएंगी।

श्री के0 एन0 गुलाटी : आन ए प्वायंट आफ आर्डरं कपिल साहब ने डिफेक्ट किया चौधरी बंसी लाल के राज्य के अन्दर। चेयरमैनशिप भी मिली और पैसा भी मिला कांग्रेस'ओ' को छोड़कर चौधरी बंसी लाल के पास गए। क्या यह डिफैक्शन नहीं हैं।

श्री अध्यक्ष : यह प्वायंट आफ आर्डर नहीं हैं।

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : चलो एक मिसाल तो दी।

चौधरी शिव राम वर्मा : यह कांग्रेस पार्टी का प्रचार कर रहे हैं या राज्यपाल के अभिभाषण पर बोल रह हैं।

चौधरी बंसी लाल : आपको कांग्रेस पार्टी के खिलाफ कहने के सिवाए और भी कोई बात हैं।

चौधरी शिव राम वर्मा : मैंने सरकार के खिलाफ बात की थी न कि कांग्रेस के खिलाफ।

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : स्पीकर साहब, मैं हाउस में डिफैक्श्ज्ञन का जिक्र नहीं करता और न डिफैक्शन का जिक्र करने की जरूरत थी लेकिन चूंकि गवर्नर ऐड्रैस पर इजहारे ख्यालात करते हुए फिर वह चीज छेड़ी गई जिस पर मोहरे खामोशी सबत की जाती, अगर उस चीज को रिफ्यूट न किया जाए, उसका जवाब न दिया जाए तो मैं समझूगा कि हमारे पार्ट पर कमजोरी होगी। चलिए अगर आप इस चीज से मुतमईन हैं तो मैं इसको यहीं खत्म करता हूं।

स्पीकर साहब, कल एक आनरबेल मैम्बर ने बोलते हुए इलैक्शन के बारे में बताया कि इलैंक्शन फेयर नहीं हुए। मुझे खुशी हैं कि उन्हीं बैन्चिज पर से आज एक माननीय सदस्य ने, उसी पार्टी के मैम्बर ने, पुरजोर लफ्जों में उसकी तरदीद की, क्यों तरदीद की, क्योंकि उनके अन्दर जुर्रत थी।

चौधरी हरद्वारी लाल : चन्द हल्कों के बारे में।

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : चन्द हल्कों के बारे में नही बल्कि पन्द्रह–बीस हल्कों के बारे में और मैं आपको फिर मोहरे तसदीक सबत करता हूं कि पन्द्रह–बीस हल्कों की आपकी वाकफियत हैं तो वाकफियत हम को भी हैं। बहरहाल यह कहा गया कि.....(व्यवधान)

चौधरी रिजक राम : कितनेरूपये मिले हैं ?

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : जितने भी कहों उतने ही लूंगा। जब आप इन बैन्चिज पर बैठते थे हमेशा लेते रहे हैं। कांग्रेस पार्टी में अगरन यही चीज रही हैं तो आपके दिखाए हुए रास्ते पर चल रहा हूं। मुझे तो पता नहीं बीस हजार तीस हजार या पचास हजार मिलें हैं लेकिन आप यह बताइए कि कितना लेते रहे हैं और आप ने कितने दिए हैं ?(व्यवधान) अगर हमारे अन्दर मिठास होगी तो हम आपको इधर खींच लेंगे। रिक्रटिंग अफसर यहां मौजूद हैं (व्यवधान) स्पीकर साहब, आम तौर पर आपोजीशन की तरफ से यह कहा जाता हैं कि कांग्रेंस पार्टी वाले गांधी और जवाहर के नाम पर राय लेते हैं।

श्री अमर सिंह : आन ए प्वाएंट आफ आर्डर, स्पीकर साहब, मैं आप कीरूलिंग काहता हूं कि क्या इस आनरबेल हाउस में कोई रिक्रूटिग अफसर बैठ सकता हैं ?

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : देखिए पुराने रिक्रूटिंग अफसर वे हैं और ने ये हैं।

चौधरी शिव राम वर्मा : माननीय सदस्य ने गांधी और नेहरू का नाम लिया हैं, कांग्रेस के साथ जोड़ा हैं लेकिन आप की सरकार शराब का इतना प्रचार बढ़ा रही हैं क्या आप को उनका नाम जोड़ना शोभा देता हैं ?

श्री बंसी लाल : आप पीनी बन्द कर दें शराब आप बन्द हो जाएगी।

(इस समय सभापतियों की सूची से एक सदस्य राव अभय सिंह पदासीन हुए)

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : चेयरमैन साहब, मैं अर्ज करना चाहता हूं कि 1971–72 के इलैक्शन के पहले आमतौर पर यह कहा जाता था, नुक्ताचीनी की जाती थी, बल्कि हकीकत भी थी कि कांग्रेस जीवित थी गांधी और जवाहर के नाम पर, गांधी और जवाहर के नाम का हवाला देकर राय ली जाती थी। आज से चौदह–पन्द्रह महीने पहले ही हमारी प्रधानमंत्री ने प्राईम मिनिस्ट्री छोड़–छाड़ एक दिलेराना कदम उठाया था क्योंकि हालात कुछ ऐसे हो गए थे कि वह अपने आप को कुछ भिची हुई समझती थी। उन इलैक्शन्ज में गांधी और जवाहर का नाम नहीं लिया गया, इन्दिरा का नाम नहीं आया बल्कि समाजवाद का एक प्रोग्राम आया और उसी प्रोग्राम को लोगो के सामने रखकर इलैक्शन लड़ा

गया। मेरे यह दोस्त जो इधर बैठे हैं वे भी मानेंगे कि पब्लिक झंझोडी जा चुकी थी। 1952 में यह बरसरे इक्तदार आई 1957 में आई, 1962 में आई लेकिन 1967 के अन्दर कांग्रेस के हाथ से कम से कम आठ आने सत्ता निकल गई बंगाल में हारी, बिहार में हारी, पंजाब में हारी, उड़ीसा में हारी, हरियाणा में खासा झटका लगा, तमिल नाडू में हारी। कोई आठ–नौ प्रान्तों में हारी क्योंकि पन्द्रह वर्ष तक लोगों के सबरो तहमुल का पैमाना हो चुका था।

चौधरी रिजक राम : चेयरमैन साहब, इस वक्त जो डिसकशन हो रही हैं वह गवर्नर ऐड्रैस पर और सरकार की पालिसी पर हो रही हैं, कांग्रेस पार्टी का तो यहां पर कोई सवाल ही नहीं हैं। We are not discussing the Congress Party. We are discussing the policies of the Government and the Governor's Address/

श्री0 के0 एन0 गुलाटी : चेयरमैन साहब, मेरे हल्के में गांधी जी के नाम पर वोट मांगे गये हैं, केन्डीडेट का नाम तक नहीं लिया गया।

Pandit Chiranji Lal Sharma: Hon. Member form the Opposition should be open to conviction. They want to disturb my line of arguments but I am not going to be disturbed. I am an Advocate. I know how to argue. लेकिन आप मेरी बात सुनने में क्यों हिचकिचाते हैं, सवाल हैं, फेयर इलैक्शन का, आपने हमारे ऊपर चार्जिज लगाए हैं। मैं इसलिए आप को जवाब देना चाहता हूं। आप इस वक्त दो मुमताज चीजें पेश करना चाहते हैं। You

are blowing hot and cold in the same breath. आप कहते हैं कि हमने खूब मुखालिफत की। मैं यह अर्ज करना चाहता हूं आप इल्जाम लगाते हैं तो कम से कम तरदीद तो न करें। सरकार पर यह इल्जाम लगाया जाता हैं कि इलैंक्शन में 5–6 वजीरों को हरा दिया। आप यह बताएं कि और भी कई वजीर थे, अगर हराना होता तो उनको भी हराया जा सकता था। मैं यह कह सकता हूं कि यह तो कांग्रेस की हरदिल अजीजी थी। चौधरी दल सिंह जी ने भी कहा था। मैं यह कह सकता हूं कि यह तो कांग्रेस की हरदिल अजीजी थी। चौधरी दल सिंह जी ने भी पहले कहा कि पहले 55 मैम्बर थे और आज आए हैं 52, तादाद घटी हैं। यह कांग्रेस का नक्शा इन्होनें खेंचने की कोशिश की थी। जब 68 में इलैंक्शन हुए तो कांग्रेस के 48 मैंम्बर थे, अपोजीशन के 33 आए थे और आज कांग्रेस का यह हाल हैं कि 81 में से 52 आए और उधर से केवल 29 (व्यधान).....।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : आप 28 ही गिनाईये, मुझे इनके साथ न गिनिये (हंसी)।

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : चेयरमैन साहब, बहराहल आप की विसानत से मैं अर्ज करता हूं कि 52 ऐसे मैम्बर हैं जोकि हजारों से जीत करके आये हैं, कोई 23 हजार से जीता है कोई 20 हजार से जीता हैं, कोई 10 हजार से जीता हैं, कोई 8 हजार से जीता हैं। 15 के करीब मैम्बर ऐसे हैं, जिनके मैं आंकड़े दे

सकता हूं जो राम–राम करे जीते। चौधरी रिजक राम जी 770 के करीब वोटों से ही जीत कर आये हैं।

श्री चरन दास : चेयरमैन साहब, आपोजीशन के मैम्बरों का तो कह रहे हैं। यह भी बता दो कि चौधरी रणसिंह 1700 वोटों से हारे हैं, श्रीमति प्रभा जैन 3500 वोटों से हारी हैं।

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : जो जीते हुए हैं, मैं तो उनकी बात कर रहा हूं। चेयरमैन साहब, मैं अर्ज कर रहा था कि गवर्नज ऐड्रैस पर यह चीज कहने की जरूरत नहीं थी लेकिन चूकिं आपोजीशन की तरफ से हम पर यह इल्जाम लगाया गया कि गवर्नमैंट की मशीनरी इस्तेमाल की गई, इसलिए हमें बोलना पड़ा। चेयरमैन साहब, ऐसी कोई बात नहीं, मैं जिन दिनों में आपोजीशन में होता था मैं भी लड़ता रहा। मैं ईमानदारी से सदन से कह सकता हूं कि गवर्नमैंट की मशीनरी इस्तेमाल करने का सवाल ही पैदा नहीं होता। चेयरमैन साहब, ला–एण्ड आर्डर की तरफ भी मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं, आपोजीशन के मैंम्बर बेताब हो जाते हैं, बेचैन हो जाते हैं, उनके अन्दर सहनशक्ति नहीं हैं कि अच्छी बात की बाबत भी कुछ कह सकें, बजाये इसके कि ये ला–एण्ड–आर्डर की तारीफ करें ये उल्टा क्रिटिसाईज करते हैं। ये लोग किसी किस्म के कोई कंक्रीट फैक्ट्स दें, कोई ऐजीटेशन बतांए तब तो हम मानें, मगर इनके पास कुछ हैं ही नहीं, बतायेंगे क्या ? चेयरमैन साहब, मेरे पुराने हल्के की दो–तीन मिसालें मेरे सामने हैं, 4 अप्रैल, 1969 को एक आदमी की किसी ने नजायज

तौर पर गेहूं काट ली। पुलिस ने पर्ची रजिस्टर नहीं किया क्योंकि उस वक्त के एम0 एल0 ए0 ने बीच में दखल दिया। मैंने चीफ मिनिस्टर साहब को दिल्ली में जाकर इस बारे में शिकायत की। मैंने कहा कि चौधरी साहब, इस तरह का वाक्या हो गया हैं, इस पर ऐक्शन लिया जाना चाहिए। चौधरी साहब का जवाब था कि मुझे फेक्ट्स दो, जो अफसर कसूरवार होगा उसे सजा दी जाएगी। मैंने इनको फेक्ट्स दिये तो इन्होंनें जल्दी ही उस पर कार्यवाही करवाई कि जिस अफसर ने कोताही की थी, उस अफसर को 24 घंटे के अन्दर–अन्दर उस जिले से तब्दील किया गया, काटा हुआ गेहूं वापिस दिलवाया गया। ऐसा देख कर उस वक्त के एम0 एल0 ए0 ने कहा की यह बड़ी बेइन्साफी हुई। दूसरी बात यह हैं कि तहसील सोनीपत के एक गांव पुगथला के सरपंच को कुछ आदमियों ने पीटा। मैंने इसकी शिकायत मुख्यमंत्री जी को की कि ऐसी बेइन्साफी नहीं होनी चाहिये। चीफ मिनिस्टर साहब ने एस0 पी0 को टेलीफोन किया कि अपराधी को सजा दी जाए। यह 30 जून की बात हैं और 1 जुलाई को , जब मैं अदालत में था तो मैंने उस आदमी को हथकड़ी लगी हुई देखी। चेयरमैन साहब यह सरकार इतनी अच्छी हैं कि जब भी इसको नोटिस में कोई ऐसी बात लाई जाती हैं तो एकदम ऐक्शन लिया जाता हैं। किसी की कोई चिट्ठी भी ऐसी नहीं रहती जिसका जवाब न दिया जाता हो तो फिर भी ये लोग ला–एण्ड–आर्डर को क्रिटिसाईज करते हैं, यह कोई अच्छी बात नहीं हैं। चेयरमैन साहब, कितनी बदनसीबी की बात है। कि कुरपश्न के सिलसिले में चीफ–मिनिस्टर साहब के

खिलाफ मेमोरैडम पेश किये गये हैं। लीडर आफ दी आपोजीशन ने जिक्र किया कि देखिये इतनी कुरपश्न हैं, चार्जिज लगाये गये हैं, लेकिन इन्कवारी नहीं होती....(व्यवधान)। चेयरमैन साहब, गवर्नर ऐड्रेस पर तकरीर करते हुए हम कुछ भी कह सकते हैं हम किसी बिल पर तो बोल रहे हैं। यह हकीकत हैं कि चार्जिज लगाते वक्त किसी की कलम पकड़ी नहीं जाती। चार्जिज लगाये जाते हैं। आम तौर पर जो मुख्यमंत्री आते हैं वे अपने पहले मुख्यमंत्री के खिलाफ इन्कवारी शुरू करवा देते हैं। लेकिन चौधरी बंसी लाल ने एसा न करके फ्राखदिली का सबूत दिया हैं। इनके आते ही आपोजीशन वालों ने जो काम शुरू किया वह यह हैं कि और तो कुछ हो या न हो लेकिन बंसी लाल को जरूर गिरा लें। मैं उनको बताना चाहता हूं कि सोने को जितना तपाया जाएगाा उतना ही ज्यादा वह चमकेगा और मेहन्दी को जितना रगड़ कर लगाया जायेगा वह उतना ही ज्यादा रंग देगी। इसी तरह से आपोजीशन द्वारा जितनी मुखालफित हुई सरकार उतनी ही ज्यादा ताकत पकड़ती चली गई। इसकी कम्पलीमैंटस मैं अपोजीशन को देता हूं। बंसी लाल की जो हकूमत की जो जड़े मजबूत हुई हैं वे इनके काम के सहारे हुई हैं। जब आपोजीशन हुकमत की जो जड़े मजबूत हुई हैं वे इनके काम के सहारे हुई हैं। जब आपोजीशन के मैम्बरों ने देखा कि इधर तो कुछ सौदा हैं नहीं तो कहने लगे कि चौधरी साहब हमें भी अपने साथ ले लो। जहां तक चार्ज शीट का सवाल हैं उस चार्ज शीट दिये जाने के बाद इन्होंनें जनता का फैसला लिया वरना चौधरी बंसी लाल डेढ़ सालों और कुर्सी पर रह सकते थे

किसी ने इनको हटाया नहीं था, इनकी मैजोरिटी थी लेकिन इन्होंनें कहा कि इन भाइयों ने मेरे खिलाफ चार्ज–शीट दी हैं इसलिये इसका फैसला हम जनता से ही लेते हैं। जैसे हमारी प्रधान मन्त्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने ऐबोलिशन आफ प्रिवी पर्सिज के सिलसिले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के सामने झुकाकर जनता से फैसला लिया उसी प्रकार चौधरी बंसी लाल ने यह दलेरी का कदम उठाया। अगर आपोजीशन द्वारा लगाये गये इल्जामत में सच्चाई होती और अगर उन इल्जामत पर हरियाणा की जनता विश्वास कर लेती तो चौधरी बंसी लाल को जनता खूटी पर टांग देती और उनकी पार्टी को भी खत्म कर देती। और भी दो तीन मिसालें हैं जो something for the first time in History हैं। पण्डित जवाहर लाल नेहरू जी को इलैक्शन के वक्त अपनी कांस्टिचुऐंसी में जाना पड़ा था और श्रीमति इन्दिरा गांधी को भी जाना पड़ा था। लेकिन चौधरी बंसी लाल अपने हल्के में नही गये न इलैक्श्ज्ञन कमिश्नर को लिखा कि मेरे हल्के में हरियाणा के इम्पालाईज की जगह सैन्ट्रल गवर्नमैंट इम्पालाइज को तैनात किया जाये ताकि किसी को काई गलतफहमी न रहै। इसके साथ–साथ आप परसेंटेज आफ वोट्स भी देख ले और उसका मुकाबला 1968 के इलैक्शन से कर लिया जाए, ये तो कुछ ऐसी बातें हैं जो आनरेबल मैंम्बर्ज आफ आपोजीशन ने कुछ पर्सनल लैवल पर जाकर की। हरियाणा की डिवैल्पमैंट का नक्शा खीचतें हुए इन्होंनें कुछ आंकड़े दिये। इनमें से दो भाई तो पहले वजीर भी रह चुके हैं जिनको कुछ तजरूबा भी हैं। जो बातें इन्होनें यहां की उनकी

तरफ मैं हाउस की तवज्जुह दिलाना चाहूंगा कि उनमें क्या वजन हैं। कई बुक–लैटस् और लिट्रेचर मैंट की तरफ से मैंम्बर साहिबान को कल सर्कुलेट किया गया । अगर उस लिट्रेचर के अन्दर और इन किताबों के अन्दर दिये गए फैक्ट्स को गौर से पढ़ा जाये तो इस चीज को बताते हैं कि हरियाणा बनने के बाद हरियाणा कहां पहुंचा। हरियाणा को हिन्दोस्तान के नक्शे में एक स्थान हासिल हुआ हैं जिसका सपने में भी ख्याल नहीं किया सकता था। चेयरमैन साहब, यहां पर इलैक्ट्रिसिटी डिपार्टमेंट को क्रिटिसाइज किया गया। चौधरी हरद्वारी लाल जी की स्पीच के बाद मैं उचित नहीं समझता कि उसके बारे में कुछ कहा जाये लेकिनद अगर कह भी दिया जाए तो वेजा नहीं होगा। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि अगर हरियाणा में यह सच्चाई हैं। कल एक माननीय सदस्य ने इलजाम लगाया था कि फरीदाबाद के नजदीक एक मांगट गांव हैं वहां पर बिजली नहीं हैं।

श्री के0 एन 0 गुलाटी0 : मैंने कहा था कि वहां पर केवल एक ही खम्बा हैं। अगर आप डिवैल्पमैट को ही ज्यादा बातें करते हैं तो फरीदाबाद में मच्छरों का हाल देखें कि कैसे लोगों को परेशान कर रखा हैं। क्या यही आपकी डिवैल्पमैंट हैं ?

गृह मन्त्री (श्री कन्हैया लाल पोसवाल): फरीदाबाद के मच्छर तो कई जगह पहुंच गये। (हंसी)

Mr. Chairman: Order please, no interruptiions.

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : मैं नहीं समझता कि मच्छरों का इलाज इस सदन में होता हैं। अगर फरीदाबाद में मच्छरों को कोई खास जगह मिलती हैं तो यह फरीदाबाद का कसूर हैं, इस सदन का या इस सरकार का कसूर नहीं हैं। मेरा ख्याल हैं कि मच्छरों को फरीदाबाद से विशेष प्यार हैं। यह सारा कसूर वहां के रहने वालों का हैं क्योंकि उन्होंनें वहां गन्द डाल रखा होगा इसलिये ये मच्छर वहां आते हैं। यहां पर यह स्टेटमैंट दिया गया कि यह गलत हैं कि बिजली सब गांवों में जा चुकी हैं। अगर आनरेबल मैम्बर इस चीज को नहीं कबूल करते हैं तो मैं उनको चैलेज करता हूं कि वे एक भी गांव ऐसा दिखा दें जहां बिजली न हों। बिजली ने तो हरियाणा में वह उन्नति की हैं जिसका सपने में भी ख्याल नहीं हो सकता था (इस समय उपाध्यक्ष पदासीन हुई) डिप्टी स्पीकर साहिबा, जबानी बहुत कुछ कहा जा सकता हैं लेकिन आकड़ो के सामने कहने वालो का मुह बन्द हो जाता हैं। जिस वक्त हरियाणा बना उस वक्त हमारी पोजीशन क्या थी ? उस वक्त हरियाणा केवल 1251 गांवों में बिजली लगी हुई थी । 1 नवम्बर, 1966 से लेकर 31 मार्च, 1967 तक चार महीने कोई काम नही हुआ। उसके बाद 31–3–68 तक एक साल के अर्से में एक गांव में भी बिजली नहीं लगी। 31 मार्च, 1968 को भी 1251 गावों मे ही बिजली थी। 31 मार्च, 1968 के बाद और आज से डेढ़ वर्ष पहले हरियाणा के गांव–गाव में चप्पे–चप्पे पर बिजली पहुंच गई। हरियाणा के 6659 गांव हैं और 6669 में ही बिजली हैं। मेरे पहले हल्के में चुलकाना और औलाना गांव हैं उनके पास मेरी जन्म भूमि

हैं मानक माजरा। उस गांव को एररजाइज करने के लिए गवर्नमैंट को 10 हजाररूपये खर्चे करने पड़े चूकिं गवर्नमैंट की यह पालिसी थी, गवर्नमैट ने यह स्टेटमेंट दिया था कि फलां तारीख तक हरियाणा के गांव–गांव में बिजली पहुंच जायेगी। पहले तो ये अपोजीशन वाले भाई कहा करते थे कि खम्भों पर तारें तो लगा दी हैं लेकिन उन में बिजली वगैरह कुछ नहीं हैं। तो हमारे मुख्य मन्त्री साहब ने कहा कि तारों को हाथ लगाकर देखो पता लग जायेगा। कि बिजली हैं कि नहीं। मैं फिर अर्ज करना चाहता हूं कि 6669 गांवों में से एक गांव भी ऐसा नहीं हैं जिसके अन्दर बिजली न हों। आप नम्बर आफ कनैक्शन के आंकड़े देख लीजिए। डिप्टी स्पीकर साहिबा, 31 मार्च, 1967 को 2,81,778 कनैक्शन्ज के आंकड़े थे और आज 4,91,450 हैं। आप अन्दाजा लगायें कि इंडिस्ट्रियल कनैक्शन्ज उस वक्त 9,749 थे आज 19,761 हैं। ट्यूबवैल्ज सारे हरियाणा में 21 मार्च, 1968 को 20,190 थे और आज एक लाख पांच सौ तेईस हैं। अगर इसके बावजूद भी यह कहा जाये कि बिजली के महकमें ने कुछ नहीं किया, बिजली बोर्ड यह हो गया वह हो गया हैं तो उसमें सदाकत नहीं मानी जा सकती। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मौजुदा चेयरमैन बिजली बोर्ड के जो हैं, मैं नाम नहीं लेता, उनके आने से पहले तीन एस0 ईज0 की एक परचेज कमेटी बनी हुई थी जो कि सारी परचेजिज करती थी । चेयरमैन साहिबा, ने ओहदा सम्भालने के बाद उस कमेटी को एबौलिश किया और जितनी परचेजिज की,रूल्ज के मुताबिक की, कमेटी के वक्त तोरूल्ज के खिलाफ कहा जा सकता था।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस अकेले बिजली बोर्ड की वजह से आज हरियाणा की 36 करोंड़रूपया साल की जमींदारों से आमदनी बढ़ी हैं। अब आप खुद ही अन्दाजा लगा लें कि बिजली बोर्ड ने तरक्की की हैं य नहीं की। मेरी पास सरकारी तौर से छपा हुआ चार्ट मौजूद हैं और यह किताब इस अमर की तलालत करती हैं जो कुछ मैंने अर्ज किया हैं। फिर वे कैसे कह सकते हैं कि यह गलत हैं। बिजली के महकमे की बाबत कहा गया कि आगे को यह हो जायेगा, कहत पड़ जाएगा और फिर कहा गया कि दरिया जमुना पर दो पावर हाउस बना दिये गए हैं, हरियाणा सरकार ने अपना हिस्सा नहीं मांगा, हिमाचल प्रदेश ने 25 फीसदी हिस्सा ले कर 30 लाखरूपए की बिजली बेच दी हैं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, बिजली का डेटा देखते हुए मैं पूरी जिम्मेवारी के साथ कह सकता हूं कि हरियाणा में तरक्की लाने के लिये जितना पार्ट प्ले बिजली बोर्ड ने किया हैं उतना शायद किसी दूसरे ने नहीं किया हैं। आज गांव–गांव सड़के चली गई हैं, ट्यूबवैल्ज लग गए हैं, हर तरह की सहूलियत मिल गई हैं और इतना कुछ करने के बाद भी हमारी सरकारने कोई खुश हैसियती टैक्स लगाने के सरकार ने दी हैं और फिर भी वे कहते हैं कि कुछ नहीं हुआ। डिप्टी स्पीकर साहिबा, अगर किसी भाई की लड़की की शादी हो तो उसको एक महीना पहले फ्रिक हो जाता हैंकि इतने पत्तल चाहियें, इतने सिकोरे चाहिए, इतना पेठा चाहिए, इतने चावल चाहिएं और इतनी चीनी चाहिए, इतने इन्वीटेशन कार्ड छपवाएंगे और धर्मशाला की इतने समय के लिए जरूरत होगी। मेरा कहने का मतलब यह हैं

कि पचास या सौ आदमियों की एक दिन रोटी देने के लिए वह महीना पहले परेशान होता हैं और जिस वक्त लड़की की शादी के बाद भेजता हैं तो सारी रात भर नींद नहीं आती। तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह छोटे पैमाने की प्लांनिग हैं जिसका मैंने जिक्र किया हैं, अब पांच साला प्लान जो सरकार बनाती हैं उसके लिये आप अन्दाजा लगाएं कि कितना स्ट्रेन उठाना पड़ता हैं, और कितना काम करना पड़ता हैं, तो कहने का मतलब यह हैं कि यह कोई आसान काम नहीं हैं। बिजली की डिवैल्पमैंट का जहां ताक ताल्लुक हैं वह एक प्लैंड तरीके से ही हो गई हैं। हां रौग बिलिंग और मीटर सड़ने की बात आई, मैं इस बात को मानता हूं और गवर्नमैंट को तवज्जुह इस बात की तरफ दिलाता हूं और डिप्टी स्पीकर साहिबा, अगर बिजली बोर्ड के अफसरान यहां पर जलवाअफरोज हो तो मैं उनको इस बात की तरफ तवज्जुह दिलाना चाहता हूं कि जो इस किस्म की शिकायत हैं उनको दूर करने की कोशिश करें। मैं ग्रिवैसिज कमेटी का मैंम्बर था वहां पर भी मैंने इस बात की तरफ तवज्जुह दिलाई थी। कमेटी किस वजह से जले या जो इस किस्म की देगर बातें कहीं गई हैं उनका जवाब मिनिस्टर साहब कन्सर्नड ही देंगें लेकिन मेरे पास जो फिगर्ज हैं छपे हुए हैं उनसे पता लगता हैं कि बिजली बोर्ड ने बहुत अच्छा काम किया हैं और हमारे बहुत से आदमी भी उस की वजह से नौकर हुए हैं।

इस के अलावा डिप्टी स्पीकर साहिबा, यहां पर कहा गया कि पानी की कमी हैं, हम भी इस बात को मानते हैं कि पानी की कमी हैं। पानी का जहां तक ताल्लुक हैं यह या तो आसमान से आएगा और या जमीन से आएगा। असल चीज तो यह हैं वह हमारे बस और सरकार के बस से बाहर है क्योंकि वहां तक हम पहुंच नहीं सकते।

श्री के0 एन0 गुलाटी : आन ए प्वायंट आफ आर्डर मैडम। डिप्टी स्पीकर साहिबा, सारा बंदोबस्त सरकार ही करती हैं। अगर वे नहीं कर सकते तो सरकार हमारे हाथ में एक महीने के लिये सौंप दी जाए, हमें एक महीने का मौंका दिया जाए हम सारे हरियाणा में पानी ही पानी कर देगें।

उपाध्यक्ष : गुलाटी साहब, यह आपका प्वांयट आफ आर्डर नहीं हैं। आप अपनी यह बात अपनी स्पीच करते वक्त कह सकते हैं। आप को इस तरह से हाउस की कार्यवाही में इन्ट्रप्ट करना चाहिए।

श्री के0 एन0 गुलाटी : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैंने तो पानी की ही बात कही हैं।

Deputy Speaker: Please do not disturb the Hon. Member. I say please sit down.

पंण्डित चिरंजीव लाल शर्मा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, दरअसल बात यह हैं वह आनरबेल मैम्बर इकोनमी में ज्यादा

विश्वास रखते हैं, कल इनकी तजवीज थी कि डिप्टी स्पीकर का ओहदा ही हटा दिया जाए और आज कह रहे हैं कि एक महीने का मौका दे देा तो सब जगह पानी ही पानी करके बेड़ा गर्क कर देंगे, मगर मैं उनको बताना चाहता हूं कि हम ऐसी गलती करने के लिए तैयार नहीं हैं। तो खैर डिप्टी स्पीकर साहिबा कल यहां पर लीडर आफ दी अपोजीशन की तरफ से कहा गया कि पंजाब में हमारे इंजीनियर्ज जब सर्वे करने के लिये गये तो उनको वहां पर घसीटा गया और हमारी सरकार ने उस बात के खिलाफ क्या किया हैं ? हरियाणा सरकार ने क्या किया हैं उसका जवाब तो वजीर मुतल्लिका ही देंगे लेकिन मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि पानी के सिलसिले में हमारी सरकार क्या कर रही हैं। यह बात जो मै कहने जा रहा हूं वह मेरी नहीं हैं बल्कि सरकार के फैक्टस एण्ड फिगर्ज कहते हैं और उनकी मुंह बोलती तस्वीर हैं। हरियाणा बनने से पहले यह हालत थी कि हमें पीने तक का पानी भी नसीब नहीं होता था लेकिन आज वह बात नहीं हैं। इसके साथ–साथ एक बाज जरूरी हैं और वह यह हैं कि जब तक हम यह नहीं देखें कि इस मकान के अन्दर कितने आदमियों की कपैसिटी हैं, उस में कपैसिटी तो हो पांच आदमियों की ओर घूसा दें 55 आदमी तो वह मरेंगे ही। ब्यास और रावी का जो पानी हमें मिलना हैं उसे लेने से पहले हमें अपनी नहरों को सम्भलना हैं, हमने देखना है कि उसमें पानी को सम्भालने के लिए हमारी नहरों की उतनी कपैसिटी है या नही हैं। ज्यादा पानी को अकामोडेट करने के लिए अभी देहली पैरेलल की लाईनिंग हुई हैं और लाईनिंग करने से

जो पानी सीपेज में जाया हो जाता था उसकी काफी मिकदार से बचत हुई हैं। देहली पैरलल की देहली तक लाईनिग करने की तजवीज हैं जिससे चार सौ क्यूसिक्स पानी बचेगा और उससे काफी एरिया को सैराब किया जा सकता हैं। इसी तरह सरसा ब्रांच हैं, भलाड़ ब्राच हैं, उन में सिलटिग हो चुकी हैं और रावी और ब्यास का पानी उन में डालने से पहले उनकी कपैसिटी बढ़ाने के लिए उनको ठीक करना पड़ेगा। कपैसिटी बढ़ाने के लिए और जो पानी हम को मिलना हैं उस को अकामोडेट करने के लिए हमें पहले साधन पैदा करने चाहिए। पानी बढ़ाने के साधन या तो आसमान से हैं, या जमीन से हैं। आसमान और बर्फ के पिघलने की बात भी हमारे बस की बात नहीं होती। ऐसी बात तो नहीं हैं **(4.00P.M)** कि कोई बम डालकर बर्फ को पिघला दें और पानी ले लें लेकिन वह सारे साधन जो पानी के हो सकते थे इस्तेमाल किये गए हैं, सरकार ने नहरों के इलावा ट्यूबवैल्ज लगाये हैं और इस तरह पानी बढ़ाया हैं। मैं हरियाणा की इरीगेशन ऐडवाईजरी कमेटी का मैंम्बर रहा हूं इसलिये मुझे कुछ इस बारे में पता हैं। तो मैं अर्ज कर रहा था कि जमीन से पानी निकाला गया हैं और अगर भेजा जा रहा हैं। कल एक मैंबर साहब ने फरमाया कि वहां वाटर टेबल चला गया हैं। डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं अर्ज करना चाहता हूं कि जितनी नहरें हैं इनके नहरों की लाईनिंग की जा रही हैं और वाटर टेबल को नीचा करने के लिए वहां टयूबवैल्ज लगाकर और फिर उस पानी को नहरों में डाल कर पानी को सप्लीमेंट किया जा रहा हैं ताकि आम के आम और गुटलियों के

दाम । लोगों को पानी भी ज्यादा मिले जहां जरूरत हैं और जमीन में जहां सेम से ही खराबी होंती हैं उससे भी निजात मिले। तो अब अगर इस अच्छाई के लिये सरकार की तरफ से यह कार्यवाही की जाए तो उसका सर्टीफिकेट यह मिलता हैं कि साहब हमारी तो बुराई कर दी पानी आगे चला गया वाटर टेबल नीचे चला गया। मैं अर्ज करना चाहता हूं कि हरियाणा सरकार एक–एक ट्यूबवैल की टैस्ट बोरिंग के लिये 80/80 हजाररूपये खर्चे कर रही हैं और सरकार की स्कीम हैं कि 1400 फीट की गहराई तक जा कर भी कंकरो से पानी निकालकर लोगों को देना चाहती हैं। माइनर इरीगेशन और ट्यूबवैल्ज की जो स्कीम हैं उस के सिलसिले में उस हमारी कमेटी के सामने उसके डायरैक्टर और एस0 ई0 आते रहे हैं और उन्होंनें हमें बताया कि किस तरह वह पानी बढ़ाने के लिये कमर कस कर लगे हुए हैं। आप अंदाजा लगायें कि जमीदारों के जजबात का एहतराम करते हुए गवर्नमैंट ने फैसला कर रखा हैं कि आने वाले दो चार साल में हरियाणा में चप्पा भर जमीन ऐसी न रहे जहां पानी की कमी की वजह से फसलों को नुकसान पहुचें। अगर आप सारे आंकड़े देखें तो आपको पता लगेगा कि कितनी प्रोडक्शन बढ़ी हैं। इस पैदावार को बढ़ाने के लिये पानी बढ़ा हैं तभी पैदावार बढ़ी हैं। पानी की मांग बढ़ाने के लिये एक और भी बात जिम्मेदार हैं। यह जो खाद चली हैं यह ज्यादा पानी मांगती हैं। खाद ज्यादा देंगे तो फसल ज्यादा पानी मांगेगी अगर पानी पूरा नही मिलेगा तो खाद बजाये फायदे के नुकसान देगी। तो इस खाद के वजह से पानी की मांग ज्यादा

बड़ गयी हैं। इतना करने के बावजूद यहां पर भी नुक्ताचीनी की गई हैं कि पानी की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया है। मैं समझता हूं कि बिजली के काम को पायाए तकमील तक पहुंचाने के बाद और सड़को के काम को पायेतकमील तक पहुंचाने के बाद पानी ही एक ऐसा मामला जिसकी तरफ हमारी सरकार का खास तौर पर ध्यान हैं और इनसे फैसला कर रखा हैं कि पानी देने की जो स्कीम हैं उसे अमली जामां पहनाना हैं। इस सरकार की और इस सरकार के अफसरों की कुब्बते इरादा और अलुलअजमी पर मुझे पूरा भरोसा हैं और मैं कह सकता हूं कि सरकार ने जो फैसला कर लिया हैं वह पायेतकमील तक पंहुच कर रहेगा। मैं अर्ज करना चाहता हूं कि जहां तक इस महकमा नहर का ताल्लुक हैं इसने निहायत अच्छा काम किया हैं पानी की सप्लाई को मीट करने के लिए.....

श्री अमर सिंह : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, मैडम। मेरास प्वायंट आफ आर्डर यह हैं कि हाउस में टाईम की तरफ ध्यान दिया जाये और उसकी लिमिटेशन मूकर्रर की जाये ताकि सभी को बोलने का मौका मिले। यह नहीं होना चाहिए कि एक मैंबर तो घंटा सवा घंटा बोलता जाये लेकिन इधर के मैंम्बरान को टाइम ही न मिले। आप की तरफ से इस बारे में स्पैसिफिकरूलिंग आनी चाहिए कि कितना समय एक मैंबर को मिलेगा ताकि बोलने वाले को पता हो कि उसे कितना टाइम मिला है।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस प्वायंट आफ आर्डर के साथ मैं भी अपनी बात जोड़ना चाहता हूं कि हाउस में 12 मैंगर कांग्रेस (ओ) के हैं। हम इन्डिपैंडैट्स हैं और दूसरे भी हैं। कांग्रेस (ओ) ही यहां सोल आपोजीशन नहीं हैं। तीन दिन से हम देख रहे हैं कि आप का इन्डिपैंडैंट्स की तरफ ध्यान ही नहीं जाता हैं

उपाध्यक्ष : मैं अभी टाइम निकलवा देखती हूं कि इधर और उधर से कितना–कितना टाइम लिया गया हैं।

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमारी सरकार का एक कसूर जरूर रहा हैं कि वह इन भाइयों को जो इस तरह की नुक्ताचीनी करते हैं वहां अपने खर्च पर वह सब कुछ दिखाने के लिये नहीं गई हैं और अपने खर्च पर यह भाई जायेंगें नहीं। अगर यह वहां जाकर देख आयें तो ऐसी बातें नही करेगी। हमारी ज्वायंट पंजाब में वहां से सागर राम गुप्ता होते थे और यह अमर सिंअ जी भी कहा करते थें कि पानी नहीं हैं हम मर गये और उधर हम सोनीपत के उस इलाके में पानी डूब पड़े थें। ड्रेन नं0 6 और 8 ने वह तबाही मचा रखी थी कि क्या बताऊं। 15 जुलाई, 1970 को हमारे डिफैंस मिनिस्टर बाबू जगजीवन राम जी ने जब जुई कैंनाल का उद्घाटन किया तो मैं पहली दफा वहां उस इलाका में गया था और इत्तफकान मुझे उस इलाके को देखने का मौका मिला। मैं इन भाइयों से कहता हूं कि देखिए वहां जा कर कि क्या करिश्मा हुआ हैं और देखने की बात

हैं। बहुत से भाइयों ने वहां जाकर देखा नहीं हैं अगर वहां जाकर देख आयें तो वसूक से कह सकता हूं कि यह नुक्ताचीनी करने का नाम नहीं लेगें कि वहां भिवानी के इलाका में यह कर दिया वह कर दिया। मैं कहता हूं कि भिवानी, लोहारू और महेन्द्रगढ़ में भी इन्सान बसते हैं और वह भी हरियाणा को ही पवित्र भूमि हैं और उनको भी पाने के पानी का हक हैं। एक तरफ तो लोग पानी में डुबते रहें और दूसरी जगह लोग पीने के पानी के लिये तरसते रहें यह कहां के इन्साफ की बात हैं। बंसी लाल जी ने इस बारे में वह काबले तारीफ काम किया हैं जो शायद आज तक नहीं किया हैं। एक तरफ लोगों को पानी की तबाही से बचा दिया और दूसरी तरफ उन लोगों को जो पीने का पानी के लिये तरसते थे पानी दे दिया। आप वहां जाकर जरूर देखें जो वाटर रिजर्वायर बना हैं और वह इतनी तेजी के साथ बना हैं कि उसकी दुनिया में मिसाल नहीं मिलती । यह सारा काम एक रिकार्ड टाईा में हुआ हैं। राजस्थान के बोरडोर तक के गांव में पानी पंहुच गया हैं और राजस्थान के गांवो के लोग वहां आकर पानी भरते हैं। हमारे सोनीपत का एक लड़कार वहां ऐस0 डी0 ओ0 लगा हुआ हैं। उसने हमें बताया कि भिवानी में यह हालत थी कि अमीर धनाढ्य लोग दो–दो अढाई–अढाई सौ घड़े पानी के भर कर रख लेते थे , टैकों में पानी स्टोर कर लेते थे और लोग जौहड़ो का पानी पीते थे। जब वहां पहली बार नहर गई ओर उसमें पानी चला तो वह सनी देखने के काबिल था, लोग जश्न मना रहे थे और खुशियां मना रहे थे। अब तक यह सुनते थे पहाड़ो से दरिया और

नहरें निकलती हैं लेकिन वहां भिवानी में पहाड़ो पर नहरों को चढ़ा कर बहा दिया गया हैं। 108 फीट की बुलंदी पर जुई कैनाल पहुंचाई गई हैं और इस स्कीम पर इतनी तेजी से काम हुआ हैं कि सरे तसलीम खम होता हैं। एक रिकार्ड अरसे में 45 मील लम्बी बाकायदा लाईड कैनाल तैयार कर दी और पानी पहुंचा दिया। कहा गया हैं कि यहां से पानी काट कर वहां दिया गया हैं। यह बात गलत हैं। यह तो फल्ड वहां ले जाया गया हैं जो आये साल तबाही करता था। 1964–65 में ड्रेन न0 8 ने वह तबाही मचाई थी कि तोबा ही भली। मैं पंजाब फल्ड़ कट्रोल ऐडवाजरी कमेटी का मैबर था और मैंने इस नाते सारे जिलों में जा कर देखा हैं और भिडवास बगैरहा इलाको में जाकर देखा हैं मुझे याद हैं कि हम फलैचर साहब के साथ किश्तियों में बैठ कर जाया करते थे। उस वक्त चौधरी रिजक राम जी आई0 पी0 एम0 हुआ करते थे इनको सारा पता हैं। तो मेरे कहने का मतलब यह हैं कि सारे फल्ड वाटर को डायवर्ट करके इन्दिरा गांधी और चक्रवर्ती कैनालज में डाला गया हैं। जिस स्पीड से यह काम हुआ अगर इसी स्पीड से चलते रहे और अगर इस सरकार की टांग खीचने की कोशिश न की गई हो क्योंकि सरकार को अटैनशन डाईवर्ट होगी तो आप देख लेना अगले पांच साल के अन्दर हरियाणा में कही से यह आवाज आयेगी की फलां जगह पानी नही मिला। मैं सरकार से कंहूगा कि सरकार इन अपोजीशन के मैंबरो साहबान को एक दफा वह सारी चीज खुद ले जाकर दिखा दें तो फिर यह कभी नुक्ताचीनी नहीं करेंगे। चौधरी हरद्वारी लाल जी भी

इसी लिये कम्पलीमैंट्स पे कर रहे थे क्योंकि वह वहां जाकर देख आये हैं। अगर इन आपोजीशन के भाइयों का एक बार दौरा करा दिया जाए तो फिर गुलाटी साहब भी यही कहेंगे कि वाकई वहां काबिले तारीफ काम हुआ हैं।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, रोड्ज की बाबत बहुत कुछ कहा गया। स्टेट में जितने काम ज्यादा से ज्यादा और अच्छे होंगे उतनी ही उनके बारें में नुक्ताचीनी जरूर होगी, क्योंकि जहां भी काम होगा कुछ न कुछ तो खामी जरूर होगी, आटे में नमक खाया पीया तो जायेगा। मैं इस बात की तरदीद नहीं करता कि खामियां नहीं होगी। हमारी सरकार ने, हमारे मुख्य मन्त्री ने यह ऐलान कर दिया कि 26 जनवरी, 1973 तक हरियाणा में कोई ऐसा गांव नहीं छोड़गे जहां सड़के न हो। जब यह ऐलान किया गया था तो पंजाब वाले बड़े सटपटाये। उन्होंनें कह दिया कि केवल छः फुट चौड़ी सड़क बनाकर हरियाणा से आगे चलो और इससे पहले सड़के बनाओ हमारे चीफ इंजीनियर कहने लगे कि पंजाब वालों ने ऐसा कर दिया। इस पर मुख्य मन्त्री जी ने कहा कि स्पैसिफिकेशन के मुताबिक जितनी थिकनैंस की सड़के हैं, चाहे वे 8 फुट बननी हैं, चाहे 9 फुट बननी हैं, उसी हिसाब से बनाई जायें जितनी स्पैसिफिकेशन की वे हैं। हमने पंजाब का मुकाबला नहीं करना हैं, जो काम करना हैं ठीक ढंग से करना हैं। यह ठीक हैं, कहीं कहीं पीली ईटें इस्तेमाल जरूर हुई होगी। 25 सितम्बर, 1971 को मुख्य मन्त्री जी सोनपत में गए। उन्होनें वहां पर एक हौस्पिटल का

उद्घाटन करना था। वहां पर डिप्टी कमिश्नर, तहसीलदार, नायब–तहसीलदार वगैरा बड़े आफीसर्ज खड़े थे, उनके सामने शिकायत की गई कि सड़को पर पीली ईटें डाली गई हैं। इन्होंनें कहा कि जहां पर भी पीली ईटे। बिछाई गई हों, फौरन रिपोर्ट करें, फौरन एक्शन लूगां। अब आप बताएं कितने आनरेबल मैम्बर ऐसे हैं जिन्होंनें गवर्नमैंट की तवज्जुह इस तरफ दिलाई हैं कि फलां जगह पीली ईटें बिछाई गई हैं या गलत काम हुआ हैं? किसी ने शिकायत की हो और गवर्नमैंट ने उस शिकायत पर कोई एक्शन न लिया हो तो गवर्नमैंट उसके लिये मूलवे–इल्जाम ठहराई जा सकती है। चेयरमैन साहब, 1947 के बाद जो मौजूदा हरियाणा था उस समय हरियाणा में 1895 किलो मीटर सड़को की लम्बाई थी और 19678–68 मई तक 5150 किलो मीटर थी। और आज मार्च, 1972 में 12,551 किलो मीटर हो गई। अब आप अन्दाजा लगाए कि गवर्नमैंट का यह स्टैड़ यह पोजीशन कि 26 जनवरी, 1973 तक गांव–गांव में सड़के होगी काबिले तारीफ हैं । गांव–गांव में बिजली पहुंच गई, मदरसे हो गए ऐग्रीकल्चर के साधन और पानी के साधन हो गएण और क्या चाहिए?

डिप्टी स्पीकर साहिबा, हाउस में पर कैपिटा इन्कम जिक्र आया। हमारी आर्थिक हालत क्या हैं, हमारी एग्रीकल्चर प्रोडक्शन की क्या हालत है, इसके सम्बन्ध में कुछ आंकड़े पेश करना चाहता हूं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, 1965–66 में प्रोडक्शन 19.85 लाख टन से बढ़ कर 20 लाख टन हुई थी औरी जब

अवोवमेंट इतनी हो गई हैं कि 1971–72 में 47.81 लाख टन प्रोडक्शन हुई हैं।

उपाध्यक्षा : आप कितना टाईम और लेंगे ?

पंण्डित चिरंजीव लाल शर्मा : थोड़ा सा लूगां। अगर आप दूसरे मैम्बर साहिबान से कम्पेयर करेंगें तो पता चलेगा कि मैंने इनसे बहुत कम टाइम लिया हैं। प्रोडक्शन में जो इम्प्रूवमैंट हुई हैं यह नहरों पानी की सप्लाइ और बिजली के विकास की वजह से हुई हैं। नहर और बिजली की मेहरबानी से ही इतनी जबरदस्त ट्रमेंडस प्रोग्रैस की जा रही हैं।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, यहां पर अन–एम्पलायमैंट का जिक्र आया। The question of unempoyment is vast aaute only in Haryana but all over country. लेकिन हरियाणा में इस प्रोब्लम को सोलब करने के लिये क्या–क्या कदम गवर्नमैंट ने उठाये हैं वह मैं आपको बताता हूं। 1970–71 में 3,2746 आदमियों को रोगार दिया गया जिनमें आफिसर भी होंगे, क्लर्क भी होंगे, तहसीलदार भी होगें, पटवारी भी होगे, लेवरर्ज भी होगे और दूसरे लोग भी होगे जिसको रोजगार मिला हैं। यह इन्फलेशन ऐसा नहीं जिसको कह दिया जाए कि कि गलत हैं, अगर गलत हैं तो इसको तरवोद करें। अगर मैं यह कहूं कि जमीन गोल नहीं चपटी हैं तो यह चपटी नहीं हो जाती। मैं इसकी तरदीद नहीं कर सकता कि अन–ऐम्पालायमेंट नहीं हैं, देश में जरूरत से ज्यादा

अन–ऐम्पलायमैट हैं लेकिन दूसरे सूबो के मुकाबले में कम हैं। हरियाणा में हजारों लड़के हर महीने भर्ती होते हैं, एंड फिगर्ज के साथ कहनी चाहिए। इकोनोमिक सर्वे आफ इडिया ने हर डिपार्टमैंट के बारे में अलहदा–अलहदा सर्वे करके छोटे–छोटे लीफ लैट्स तकसीम किए हैं लेकिन इनको कोई पढ़ता ही नहीं। मुश्किल यह हैं कि पढ़े वगैर कह देते हैं कि अन– एम्पालायमैंट हैं। हम कब कहते हैं कि नहीं हैं लेकिन इस प्रौब्लम को हल करने के लिए, सौलब करने के लिए जो साधन अपनाये जा रहे हैं उन का इनको पता नहीं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, ये दो चार बाते थी जिनको अपोजीशन के मैम्बरान ने गवर्नर साहब के एड्रैस पर बोलते हुए क्रिटिसाईज किया। इन सब का मैं जवाब दे चुका हूं।

ऐजुकेशन का जहां तक ताल्लुक हैं, हरियाणा में ऐजुकेशन सिस्टम का जिक्र आया कि यहां ऐजुकेशन सिस्टम फेल हो गया। मैं विदाउट रिजर्वेशन एंड हैजिटेशन यह कहने की जुर्रत करता हूं कि हरियाणा मैं ऐजुकेशन सिस्टम में डिटिरिओरेशन आ गई हैं। सिस्टम खराब हैं इसके कारण क्या हैं, इस बात की गवर्नमैंट को एनेलाईजेशन करनी चाहिए। पढ़ने वालों को सुविधा देने की गवर्नमेंट की जिम्मेदारी हैं। अगर हरियाणा में तालीम के लिहाज से कमजोरी आती हैं तो सारे हरियाणा में हर फील्ड में कमजोरी आएगी। जैसा कि चौधरी हरद्वारी लाल जी ने कहा, मैं उन के साथ सहमत हूं कि तालीम के अदारे में जो त्रुटियां हैं वे दूर होनी चाहिए।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं सोनीपत के बारे में, जहां कि मैं नुमायंदगी करता हूं, उसके बारे में जरूर कहूंगा। सोनीपतत 70 हजार लोगों केा कस्बा हैं.....

उपाध्यक्षा : आप अपनी स्पीच का जरा शार्ट करें, और आदमियों ने भी बोलना हैं।

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : बस एक मिनट मे खत्म करता हूं। वहां पानी की बड़ी जबरदस्त कमी हैं जैसे भिवानी के इलाके में पानी की दिक्कत होती थी .....(व्यवधान)

आवाजें: यह प्वायंट पहले आ चुका हैं.....(व्यवधान)

पंण्डित चिरंजी लाल शर्मा : डिप्टी स्पीकर साहिबा, पानी की सप्लाई का सवाल हैं। जो टैंक बना हुआ हैं, वह बहुत पुराना हैं और जब आबादी तकरीबन 70 हजार हो गई हैं। मैं हकूमत की तवज्जुह इस तरफ दिलाना चाहता हूं कि सोनीपत के चप्पे–चप्पे में पीने का पानी मुहैया किया जाए जो कि लोगों को ग्रेटैस्ट रिक्वायरमैंट हैं। वहां पर हमारी बहु–बेटियों का आपस में जूत बजता हैं पानी के लिए, इस बात का पहले हाउस में जिक्र नहीं आया था इसी लिए मैं कह रहा हूं। मैंने चीफ मिनिस्टर साहब से अर्ज की थी तो उन्होंनें कहा था कि यह जरूर किया जाएगा। इन शब्दों के साथ, डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपका धन्यवाद करता हूं। जो आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

उपाध्यक्षा : मैं आनरबेल मैम्बर्ज से रिक्वैस्अ करूंगी कि टाईम का ख्याल रखें क्योंकि बैंक–बैंचिज के मैंम्बरों ने भी बोलना हैं, उनको भी टाईम देना हैं। (व्यवधान) (कई मैंम्बर बोलने के लिए खड़े हो गए) अब श्री प्रताप सिंह दौलता बोलगे।(व्यवधान) ।

Chaudhri Partap Sing Daulta (Beri): Madam, I will confine Myself entirely to the Governor's Address. I would not touch any point which has been missed or omitted. I will strictly confine to what is contained there in. In the first paragraph we find reference to elections. Yes, elections were fair. Sor far as the conduct of thge officers who sere conducting the elections, is concerned it was fair and the elections were fair. But I cannot give such a clearance chit which Mr. Hardwari Lal wnated to give them. Elections were not fair so far as the elected Executive of the State was concerned. The Chief Minister went from constituenct to constituecny and he told frankly as he is very straightforward in putting his things. अगर आपको बिजली पानी चाहिए ता इसकौ वोट दो। अगर आपको बिजली नहीं चाहिए तो दीजिए जिसको वोट देना चाहो। जब एक स्टेट का हैंड इलैक्टोरेट के सामने दो में से एक तजवीज रखता हैं कि अगर आपको हल्के की डिवैल्पमैंट चाहिए तो जिसकी तरफ मैं उंगली करता हूं आप उसको वोट दें दें, वह इलैक्शन फेयर नहीं हैं, वह इलैक्शन फेयर नहीं हैं। (विरोधी दल की तरफ से तालियां)

दूसरी बात जो मैं कहता हूं कि इलैक्शन फेयर नहीं था वह यह हैं कि कोई भले ही कितनी इन्कार करे लेकिन हम उस

स्टेज पर आ चुके हैं जब मुल्क में वन पार्टीरूल ऐस्टैब्लिश हो चुका हैं। यह ठीक हैं कि कांस्टिच्यूशन ने हमें पार्लियामैंटरी डैमोक्रेसी दी हैं, दुरूस्त हैं लेकिन पंडित जवाहर लाल नेहरू और बहिन इन्दिरा गांधी जी, इन दोनो ने जिस तरह मुल्क की इकौनमी और पोलिटिक्स को शेप दी हैं वह सोशलिस्ट मुल्कों के लैवल पर चली जा रही हैं और जिस तरह सेरूस में वन पार्टी गवर्नमैंट हैं, चाईना में वन पार्टी गवर्नमैंट हैं, हकीकत हिन्दुस्तान में भी वन पार्टी गवर्नमैंट हैं, आज के दिन। जब वन पार्टी गवर्नमैंट की स्टेज आ जाए जैसी की आज आई हुई हैं तो उस पार्टी के सी0 एम0 का, जो उसका हैड हैं, जिसने टिकटें देनी हैं, उसकी बड़ी भारी जिम्मेदारी इस बात की हो जाती हैं कि वह बैस्ट टेलैन्ट चुने। बदकिस्मती से बन पार्टी की सारी डिसऐडवान्टेजिज तो यहां मौजूद है ंमगर ऐडवानट्ज एक भी नही हैं। सोशलिस्ट देशों में बैस्ट टेलैट के लिए आठ–आठ, दस–दस आदमी एक कांस्टिचुऐंसी के लिए भेजते हैं लेकिन यहां एक तमाशा होता हैं। वाईस–चांसलर के मुकाबले में भट्ठे वाला, जिसके पास लाखोंरूपया होता हैं, खड़ा कर दिया जाता हैं। यह कोई फेयर इलैक्शन हैं ? यह पार्टी के हैड की जिम्मेवारी हैं कि टिकट बांटते वक्त यह देखें कि जो जिस कांस्टिचुऐंसी को रिप्रैन्जैंट करता हैं उसका पोकेट ही भारी नहीं होना चाहिए, उसके दिमाग में भी कुछ होना चाहिए। टिकटें इस हिसाब से बांटी गईरूलिंग पार्टी की कि वे टिकटें फेयर इलैक्शन के कंड्यूसिव नहीं थी।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : डिप्टी स्पीकर साहिबा, आन ए प्वायंट आफ आर्डर। टिकटों के मामले में इनको कहने का कुछ हक नहीं हैं क्योंकि गवर्नर ऐड्रैस में टिकटों का कहीं भी मैन्शन नहीं हैं। (विघन एवं शोर)

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : डिप्टी स्पीकर साहिबा, आन ए प्वांयट आफ आर्डर का जवाब तो, आपने देना होता हैं लेकिन जो प्वायंट इन साहब ने रेज किया हैं उसके बारे में निवेदन यह हैं कि.....When a point has been raised with regaed to the elections and the fairness or unfairness of the elections has been questioned I can refer to those conditions which are not conducive to the fair elections. So, it is directly relevant to the point. तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं अर्ज कर रहा था कि इलैक्शन फेयर था, हरद्वारी लाल जी जायज हैं, जहां तक सरकारी मुलाजिमों का ताल्लुक हैं। इलैक्शन अनफेयर नहीं था जहां तक उन लोगों का ताल्लुक हैं जो एक पार्टी हकूमत मुल्क में ऐस्टैब्लिश करने के बाद टेलैन्ट चुज करने की कोशिश नहीं करते हैं और अगूठा टेक आदमियों के मुकाबले में। पढ़े लिखे आदमियों के मुकाबले में आठवी पास, आठवीं फेल, जिनकी जेब में पैसा हों, यहां लाने की कोशिश की जाती हैं। ऐसे आदमियों के बारे में , आपका तो डिप्टी स्पीकर साहिबा जरूर याद होगा, एक बहुत बड़े जलसे में नेहरू जी ने कहा था कि लोगों का हक हैं कि वें, अगर हमने किसी को गलत टिकट दे दिया हैं, उसे कैंसल करके सही किस्म के आदमी को अपना वोट दे। यदि वही प्रोग्राम वह जनता

के सामने रखता हैं और उनसे जाकर के कहता हैं कि मुझे यह पर्टिकुलर प्रोग्राम पसन्द हैं जो इस उम्मीदवार के पास हैं और जनता ने उस उम्मीदवार को उसके इलेक्शन मैनिफैस्टों के ऊपर चुनती हैं तो वह पहले दिया हुआ है टिकट कैंसल हैं और वह दूसरा आदमी फिट हैं। तो यह हैं जहां तक मैंने इलैक्श्ज्ञन के बारे में सबमिशन करनी थी।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, नम्बर दो बात जो दूसरे पैराग्राफ में कहीं गई हैं वह बड़ी इम्पोटैट हैं। इस पैराग्राफ में लिखा हैं :–

" I offer my best wishes and hope and pray that your combined wisdom and energies will be directed towards the building up of a progressive and prosperous State".

क्या ऊंचा आदर्श हैं ? गवर्नर साहब, फरमाते हैं, चाहते हैं हमसे कि

The combined wisdom of the House and combined energies of the House Should be directed for the development of making of a progressive State.

डिप्टी स्पीकर मोहतरिमा, इसके मायने यह हैं कि ऐडमिनिस्ट्रेशन पर किसी एक इंडिविजुवल की या महदूद इन्फ्राद की, लिमेटेड आदमियों की छाप नहीं पड़नी चाहिए। ऐडमिनिस्ट्रेशन पर तमाम हाउस के ख्यालात, तमाम हाउस के जजबात की रिफ्लैक्शन हो। मैं अदब से अर्ज करूंगा कि यह बहुत

जरूरी हैं। मुझे पता नहीं हैं कि यह सैनटैन्स किसने लिखा हैं ? अगर गवर्नमैंट ने गर्वनर साहब को लिख कर दिया हैं तो शायद गवर्नमैंट को ध्यान नहीं था। अगर गवर्नमैंट साहब के सैक्रेटरी ने सजैस्ट किया हैं, यह तो बेस डैमोंक्रेसी का। मैं डिप्टी स्पीकर मोहतरिमा, अर्ज करूंगा कि इस तमाम हाउस की कंबाइन्ड कंबिनेशन को तो बेशक ऐडमिनिस्ट्रेशन पर रिफ्लैक्ट न होने दें आजरूलिंग पार्टी की तो कंबाइन्ड विशिज की रिफ्लैक्शन गवर्नमैंट पर हो। जाने दीजिए।रूलिंग पार्टी को भीं। जो कैबिनेट सिस्टम हैं जिसकी बुनियाद पर यह सारा कांस्टिच्यूशन हैं, जो ट्यूडर्ज के जमाने में बड़ी मुश्किल से डिवैल्प हुआ था वह हिन्दुस्तान में धीरे–धीरे, डिप्टी स्पीकर मोहतरिमा खत्म हो रहा हैं। प्रताप सिंह कैरों जी के बहुत गुण थे। मगर उन्होंनें इसको खत्म करना शुरू किया था। उनमें कुछ कमियां थी। वे खत्म हुए। आगे आए पंडित भगवत दयाल जी। उन्होंनें अब तो यह खत्म हो गया हैं इस स्टेट में भी और दूसरी स्टेट्स में भी। कोई यह स्टेट अकेली जिम्मेवार नहीं हैं। मैं बड़े अदब से अर्ज करना चाहता हूं कि कैबिनैट सिस्टम की वर्किन्ग नहीं हैं आज के दिन।

Now-a- days, the image of our C.M. is not the image of an elected democratic party's head. But his image is either of a Subedar or a Raja of feudal age. He is surrounded by his noblemen, his courtiers and sometimes by jesters. In the present days, unprecedented concentration of power in one individual is the most dagerous thing to democracy, to the working of the Parliamentary democracy, to the Cabinet

system to the supremacy of the party over the individual who is put in the power.

डिप्टी स्पीकर साहिबा, रशियन सिस्टम की ओर हम जा रहे हैं। वन–पार्टी गवर्नमैंट ऐस्टैब्लिश हो रही हैं। वहां पर जो पार्टी की इतनी ताकत होती हैं कि ऐग्जैक्टिव के हैड पर उनका पर्मानैन्ट चैक होता हैं। यहां क्या चैक साहब ? आपकी गवर्नमैंट है या चाहे हमारी गवर्नमैंट हैं, हम सब इसके पार्ट हैं, वे हमारे भी सी0 एम0 हैं और उनके भी सी0 एम0 हैं। मैं अर्ज किया जाता हैं कि आज के दिन इस तमाम हाउस की कंबाइन्ड विजडम तो दूर रहीं,रूलिंग पार्टी की भी कंबाइन्ड विजडमरूल नहीं करती और कैबिनेट की भी कंबाइन्ड विजडमरूल नहीं करती। अखबार स्टेटसमैन के चंडीगढ़ के जो कौरैसपोन्डैट हैं, उन्होनें हमारे सी0 एम0 की, जो वे डिजर्व करते हैं, बड़ी तारीफ की हैं अपने ऐडीटोरियल में पंजाब से हरियाणा को कंपेयर करते हुए वे कहते हैं कि he is dynamic. उनके काम करने के तरीकों की उन्होंनें बहुत तारीफ की हैं जिसके वे मुस्तहक हैं। यह कोई इन पर मेहरबानी नहीं की उस अखबार वाले ने, उस कौरेसपौन्डैन्ट ने। इस अखबार का स्टैन्डर्ड भी अच्छा है और कौरैसपौडैन्ट भी अच्छा हैं। उसने लिखा हैं कि हरियाणा की गवर्नमैंट के क्या मायने हैं..... ..वह अंगेजी में हैं, मैं उसका तरजुमा किए देता हूं। दो तीन अफसर हैं। जितनी तनखाह लेते हैं उससे ज्यादा काम करते हैं लेकिन हरियाणा जिस भावना से बना था, जिस मतलब के लिये बना था उससे उनकी इमोशनल इनवौल्वमैन्ट नहीं हैं। दो तीन

अफसर जो नौन–हरियाणवी ओरिजन के हैं और दो तीन मिनिस्टर ही कैबिनेट में से जो उनके कंफिडैन्स के हैं, उसने भी तारीफ की हैं उन मिनिस्टरों की। मैडम, मैं तो उन मिनिस्टरों का बहुत ही मदहा हूं। रणजीत सिंह कोई पढ़ा लिखा नहीं था लम्बा–चौड़ा लेकिन बड़ा भारी ऐडमिनिस्ट्रेटर था। मैं यह नहीं कहता कि सी0 एम0 के कंफिडैन्स के एक या दो ही मिनिस्टर हैं उनमें कोई कम सूझ के आदमी हैं लेकिनप मैं जो कह रहा हूं वह यह कह रहा हूं कि इस सैनटेन्स के मायने जहां तक गवर्नर साहब ने यह जो सैनटेन्स पुट किया हैं कि कंबाइन्ड विजडम आफ दी हाउस, यह तो दूर रही, कंबाइन्ड विजडम आफ दीरूलिंग पार्टी भी दूर रही, मैं तो अदब से अपने डाइनेमिक, फोर्सफुल सी0 एम0 से यह कहूगा कि वे कैबिनेट सिस्टम को दुबारा बहाल करें जो प्रताप सिंह कैरों ने तोड़ना शुरू किया था, भगवत दयाल ने तकरीबन तोड़ के रख दिया था और इन्होनें तो उठा करके बिल्कुल क्रियाक्रम ही कर दिया, छोड़ा हीं नहीं हैं।

तीसरी बात, जो अगले पैराग्राफ में लिखी गई हैं, डिप्टी स्पीकर मोहतरिमा वह बार से ताल्लुक रखती हैं, लडाई से ताल्लुक रखती हैं। मैं अपनी उस उमर में, बदनसीब हूं। मैं बहुत ही छोटा था। मैं पैदा नहीं हुआ था उस लडाई की बात सुनने के लिए। मैं बाद में पैदा हुआ, मैं बड़ा खुश–किस्मत हूं मैडम। मैं ऐसे वक्त में पैदा हुआ जब कि हिन्दोस्तान की प्राईम मिनिस्टर एक बड़ी काबिल प्राईम मिनिस्टर हैं। एक इतने काबिल प्राईम

मिनिस्टर के वक्त में मैंने जन्म लिया मैं इसके लिए अपने आपको सौभाग्याशाली एवं अच्छे कर्मो वाला आदमी समझता हूं। कहने को कुछ कहा जाए लेकिन कोई नहीं समझता था कि बंगला देश की लड़ाई की तरह कोई लड़ाई होगी। यह ठीक हैं कि 'ऐपिक' में, रामायण में इस तरह की लड़ाई का वर्णन हैं। लड़ाई किस लिए लड़ते हैं ? या तो किसी का इलाका फतह करने के लिए या किसी पर हमला हो जाए जैसा चाईना ने हम पर फोर्सड हमला किया था। इस किस्म की लड़ाई जो इन्दिरा गांधी जी ने अपने वक्त में लड़ी किसी दूसरे देश के लोगों के लिए, अपनी फौजें वहां भेज कर उस मुल्क को आजाद कराने के लिए और फिर जिस तरह से रामायण में रामचन्द्र जी रावण के भाई विभीषण को राज दे आए थे उसी तरह से उनको उनको राज सौंप के वापिस चले आना बहुत बड़ी चीज हैं। मैं तो कहूगां कि आइडियलिज्म की लड़ाई अगर कहीं पहली बार लड़ी गई हैं तो वह हिन्दोस्तान में लड़ी गई हैं।(तालियां) हिन्दोस्तान ने अपने ऐक्सचैकर से, खजाने से आइडियलिज्म की लड़ाई लड़ी। अगर मैं अपने फौरन मिनिस्टर सरदार स्वर्ण सिंह को ट्रिब्यूट पे न करूं तो भी मैं अपनी ड्यूटी फेल हूंगा। शक्ल से देखने में सीधे–साधे देहाती जाट ही नहीं बल्कि मजहबी से मालूम होते हैं लेकिन जब वे यू0 एन0 ओ0 में पहुचते हैं भुट्टो से या किसी और से नैगोशियट करने के लिए तो दूसरे ढंग रह जाते हैं। वे इतने सकिल्ड नेगोशियेटर हैं कि सब लोग हैरान हो जाते हैं कि इनके मुह से क्या निकल रहा हैं और वे एक मिनट में ही उनसे घबरा जाते हैं। उनको कोई भी

आदमी प्रोवोक नहीं कर सकता, गुस्सा नहीं दिला सकता। इसी तरह से अगर मैं अपने डिफैन्स मिनिस्टर बाबू जगजीवन राम को भी ट्रिब्यूट पे न करूं तो भी मैं अपनी ड्यूटी में भूल करूंगा। मैडम डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं पाकिस्तान का रेडियो सुनता हूं, मैडम मैं इमोशनली पाकिस्तान हूं, मेरी उम्र पाकिस्तान में कटी हैं, मेरा स्कूल पाकिस्तान में हैं, घर पाकिस्तान में हैं और मैं उनमें से नहीं हूं जो जाति–पाति में यकीन रखते हैं। वे लोग समझते हैं कि जो लोग पाकिस्तान से आये हुए हैं उनमें अरोड़ा और खतरी ही पाकिस्तानी में हैं, वे रिफ्यूजी हैं और जाट रिफयूजी हो ही नही सकता। मैं बहुत बड़ा रिफ्यूजी हूं इस सैन्स में। मेरा दिल लाहौर में और मिंटगुमरी में हैं। मेरा वहां पर स्कूल हैं, मेरा वहां पर गांव था। इसलिए मैं पाकिस्तान के रेडियो को बाकायदगी से सुनता हूं। पाकिस्तान वाले मजाक उड़ाते थे हमारे डिफैन्स मिनिस्टर साहब का कि मैं झाड़ू लेकर आऊंगा और लाहौर में झाड़ू दूंगा।

श्रीमति चन्द्रावती : आन ए प्वायंट आफ आर्डर मैंडम, मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि दौलता साहब फौरन अफेयर्ज पर बोल रहे हैं या राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मैडम, मैं बहिन जी का प्वायंट आफ आर्डर क्लियर कर देता हूं। मैं पैराग्राफ तीन पर बोल रहे हैं या राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर।

उपाध्यक्षा : बहिन चन्द्रवती जी का कोई प्वायंट आफ आर्डर नहीं था बल्कि यह जरा सा जोक था, मजाक था।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मैं प्राउड फील करता हूं अपने डिफैन्स मिनिस्टर साहब पर, जिसका पाकिस्तान रेडियो मजाक उड़ता था उसने हमारे सिपाहियों और जनरल्ज की विशिज की कदर की। मैंडम, मैं एक बात और भी कहना चाहता हूं कि एक स्टेज ऐसी भी आयी जब हमारे जनरलज यह महसूस करने लगे कि हम बंगलादेश के साथ हैं लड़ाई में लेकिन अपने सिपाहियों के साथ इन्साफ नहीं कर रहे हैं। उन सिपाहियों को सिविलियन ड्रैस पहन कर मुक्तिवाहिनी के साथ भेजा जाता हैं और वे मारे जाते थे। जनरल्ज ने यह कहा कि यह हमारा काम नही हैं। हमारे बच्चे मर रहे हैं। हम यह बरदाश्त नहीं कर सकते। हमको ढाका पहुचने का हुक्म दिया जाये। हम इतनी जल्दी पंहुचेंगे जितनी जल्दी बारात के लोग पहुचते हैं। जनरलज ने कहा कि आप डरिये नहीं हम ढाका को एक दो हफ्ते के अन्दर ही फतह करके ला देंगें। इस बात पर बाबू जगजीवर राम जी भी डट गये। एक छोटी कमेटी हैं और उस कमेटी से फैसला लिया और बड़े ताकतवर आदमियों के ख्यालात के खिलाफ फैसला किया कि हमारे सिपाही अब सिविलियन ड्रैस में नही जायेगा। अब वह आर्डिनरी ड्रैस में जो हमारे सिपाही की हैं उसमें जायेगा। सिपाही–सिपाही की तरह से लड़ेगा। उन नौज्वानों ने दो हफ्ते के अन्दर ही वह कुछ कर दिखाया जो दुनियां की तवारीख में लिखा

जायेगा। तो मैं इस ट्रिब्यूट कै साथ गवर्नर साहब के पैराग्राफ थ्री से पूरी तरह से इत्तफाक करता हूं और पूरी स्पोर्ट करता हूं।

आज हिन्दुस्तान की इस वार में अपनी प्राईम मिनिस्टर ने, सैन्ट्रल गवर्नमैंट ने जो फैसला किया जिसका उनके साथ डायरैक्टली कन्सरन था और उन आम सिपाहियों ने जिन्होंनें कुर्बानियां दीं, देश का नाम ऊंचा किया हैं उनके साथ मैं अपनी भावनाओं को पैराग्राफ तीन के साथ पूरी तरह से जोड़ता हूं।

मैडम आगे चल कर गवर्नर साहब ने डिवैल्पमैंट का जिक्र किया हैं।

उपाध्यक्षा : दौलता साहब आपका टाईम हो गया हैं इसलिए आप अपनी स्पीच जल्दी ही खत्म कर दें क्योकि बहुत से मैम्बर्ज ने भी अभी बोलना हैं

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मेरी यह अर्ज हैं कि जहां तक इन्डिपैन्डैट मैंम्बर्ज का ताल्लुक हैं मैं अकेला ही मैंम्बर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं । इसलिए फेयर डिस्ट्रब्यूशन होनी चाहिए।

श्री उमेद सिंह : मैडम, मैने भी बोलना हैं।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : अगर आप बोलना चाहते है तो आप भी बोलें। लेकिन अब तो मुझे बोलने दें। स्पीच के स्वाद को क्यों खराब करते हो...(हंसी)

उपाध्यक्षा : आपके केवल तीन मिनट बकाया हैं।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : मोहतरिम डिप्टी स्पीकर साहिबा, जहां तक डिवैल्पमैंट की बात हैं, मैं इस बारे में कोई संकोच नहीं करता, डिवैल्पमैंट हुई हैं। वैसे मैं अपने सी0 एम0 साहब का बड़ा क्रिटिक भी हूं और बड़ा एडमायरर भी। मुझे इस बात कोई गलतफहमी नहीं हैं कि मैं उनसे पहले असैम्बली में चुना गया और वह बाद में चुने गये हैं क्योकि वे पैदा ही बाद में हुए थे इसलिए बाद में ही चुने जाते थे। मुझे इस बारे मे कोई बहस नहीं हैं। मैं तो उन लोगों में से हू और मानता हूं कि देहात से उठा हुआ, खेतों से उठा हुआ बालक पढ़–लिख कर आगे आए। आज जो यह लौट, प्रेजेंट लौट हैं उनमें हमारा सी0 एम0 सब से ऐफिशिऐन्ट हैं, इनटेलीजेन्ट है और दिलेर भी हैं। ये सभी बातें सही साबित हुई हैं (तालियां) इन सब बातों पर मुझे कोई ऐतराज नहीं हैं लेकिन इसके साथ–साथ मैं यह भी कह दूं कि सारा डिवैल्पमैंट का क्रैडिट सी0 एम0 साहब को देने के लिये तैयार नही हूं थोड़ा सा क्रैडिट मैंडम आपकी ईजाजत से अपने लिए भी लेना चाहता हूं। सन् 1968 में पहली बार मैंने पार्लियामेट में हरियाणा का जिक्र किया था। जब मैने हरियाणा का जिक्र किया उस समय पार्लियामेंट में पजाबी सूबे पर बहस हो रही थी। हरियाणा का नाम सुनकर पंडित जी बहुत हंसे। पंडित जी मुझे अकसर चिट देकर बुला लिया करते थे। उन्होंनें मुझे बुलाया कि तुम यह क्या हरियाणा–हरियाणा कहते हों। मैंने तो हरियाणा लफ्ज सुना हैं लेकिन वह तो एक टाउन हैं जो होशियारपुर जिले में हैं। मैंने पंडित जी से कहा कि अगर हरियाणा बन गया तो सारी ही

प्रौबलम दूर हो जायेगी। आप पंजाबी सूबा न बनाइये, हिमाचल बना दीजिए। पंडित जी कहने लगे कि आप भी तो वही बात कहते हो जो अकाली कहते हैं। मैंने कहा पंडित जी अकाली बेचारों को कुछ पता ही नहीं हैं। अगर हरियाणा बन जाये तो हरियाणा का इलाका और कांगडे का इलाका उठ खड़ा होगा। उस टाईम पर उनको यह पता ही नहीं था कि वे घाटे में रहेंगे। पंडित जी का नोट आज तक इन्दिरा बहिन के पास हैं। उसके बाद मैंने नान–आफिशियल रैजोल्यूशनर मूव किया तो वे हंसते थे। (घंटी) मैडम, मैं डिवैल्पमैंट के बारे में अर्ज कर रहा हूं ज्यादा टाईम नहीं लूगां। मैं तो यह कहूगा कि हरियाणा के भाग तो उसी दिन खुले थे जब प्रैजेन्ट चीफ मिनिस्टर साहब की मुखालिफत के बावजूद, भगवतदयाल की मुखालिफत के बावजूद, श्री गुलजारी लाल नन्दा जी की मुखालिफत के बावजुद, भी हमारा हरियाणा प्रदेश बना। जिन लोगों ने हरियाणा के बनाान में कामयाबी हासिल की थी उन्हीं लोगों ने हरियाणा की डिवैल्पमेंट की नींव रखी थी। हरियाणा की डिवैल्पमैंट का सारा क्रैडिट डायनेमिक चीफ मिनिस्टर साहब को नही जा सकता।

अगला पैराग्राफ लैन्ड रिफार्म का हैं। लैन्ड रिफार्म के बारे में भी कुछ नहीं कहना चाहता हूं क्योकि लैन्ड रिफार्म का एक अलग से सैशन होगा, मैं उसमें ही बोलूंगा। इस वक्त तो मैं इतना ही बोलना चाहता हूं कि लैन्ड रिफार्म के नाम से काफी मजाक हो चुका हैं। अब किसान के साथ, जमींदार के साथ, हरिजनों के

साथ मजीद मजाक की गुंजाइश नहीं हैं अगर आप लैन्ड रिफार्म करना चाहते हैं, ओनरशिप बदलना चाहते हैं तो एक फौजी को और ना–बालिंग को छोड़कर कानून बना दीजिए। यह तीन लाईन का कानून काफी होगा। इसके खिलाफ न हाईकोट में रिट हो और न टैनैट दु:खी हो और न ही लैन्ड एलाटी दु:खी हो। जो जहां हल चलाता हैं, तीन साल की गिरदावरी जिसके नाम हैं वही मजाक वही उसका मालिक समझा जायेगा। अब जब कि कांस्टीच्यूशन में अमैंडमैंट हो चुकी हैं तो कानून बनाने में कोई डिफिकल्टी नहीं हो सकती। आप कम्पलीट तौर पर लैन्ड टू दी टिलर दीजिए। यह तो है सही मायनो मे लैन्ड रिफार्म। बाकी हरिजनों को बहकाना और पांचवे साल वोट लेना कि यह कर रहे हैं वह कर रहे हैं यह ठीक नहीं हैं। उन गरीबों को मुडी दिखाये जाना और वोट लेते जाना यह कोई लैन्ड लेता हुआ अगले पैराग्राफ पर आता हूं । इस पैराग्राफ में ग्रोवर की फूड ग्रेन की प्राइसीज फिक्स कराने के बार मे जिक्र किया गया हैं। मैडम, मैं इस हाउस में जनसंघ पार्टी के मैम्बरों की रियल आपोजीशन समझता हूं। मैं दो पार्टी को सही समझता हूं एक जो सोशलिज्म के हक में हैं सी0 पी0 आइ0 और कांग्रेस आदि और दूसरी वह जो उसके अपोजिट हैं। कांग्रेस पार्टी ने कोई भी सीट नहीं हारी सिवाए दो जनसंघ सीटों के। जहां तक विशाल हरियाणा का सम्बन्ध हैं वह भी सोशलिज्म में यकीन रखती हैं। उसका भी सोशलिज्म का ही प्रोग्राम था। जहां तक मेरे बारे में पूछा जाता था कि आप कौन सी सीट पर बैठे हैं ? इस बारे मैं यह कहूगां

कि मैंने जनता से यह कह कर वोट मांगे हैं कि मैं ही इन्दिरा का चेला हूं बाकी तो कुछ नहीं हैं। (हंसी) मेरा मुखालिफत कांग्रेस (ओ0) ने की, कांग्रेस (ओ0) के प्रधान की मुखालिफत शुरू से आखिर तक रहीं। मैं तो डट कर कहता हूं कि मैं पक्का कांग्रसी हूं। जिसको कांग्रेस का टिकट मिला हैं यह बोगस हैं और मैं कांग्रेसी हूं। इलैक्शन के समय में मैंने कहा था कि मैं सजाए–आफता कांग्रेसी हूं इसलिए कांग्रेस का टिकट मुझे नहीं मिला न मांगा। अब मैं पांच साल भुगत चुका हूं, एक साल रिमीशन तो जेल मे भी मिल जाती हैं। मैंने किसी को गलतफहमी में नहीं रखा, मैंने डेट कर लोगो से कहा कि मैं सजा–याफता कांग्रेसी हूं, मेरी एक साल की मियाद बाकी हैं। पहले भी मैंने डिफैक्शन नहीं किया था। मैंने भगवतदयाल को वह सबक सिखाया था कि जो वह डिजर्व करता था। डिफैक्शन इलैक्शन के बाद नहीं हुई थी। इलैक्शन में चौधरी श्रीचन्द की और मेरी चौधरी हरद्वारी लाल जी की नहीं जो उनके दोस्त थे, डट कर मुखालिफत की थी। उन्होंनें हमारे मुकाबले में एक–एक और कैंन्डीडेट खड़े किये जिनको चालीस–चालीस हजाररूपया दिया और हमें कुछ भी नहीं दिया इसलिए यह डिफैक्शन इलैक्शन से पहले हुई थी। कुछ बहादुरों ने जिनकी बगावत करने की ट्रैडीशन रही हैं उन्होंनें उन्हें उठा कर परे फेंक दिया। मुझे आज तक कोई पछतावा नहीं हैं। पांच साल सजा भुगत ली एक साल और भुगत लूंगा लेकिन हूं कांग्रेसी।

अगली बात जो मैं कह रहा था वह फेयर प्राइसिज के बारे में हैं। हाईकोर्ट में प्रैसीडेन्ट कोट होते हैं, यहां भी होते हैं। यह वही फोरम हैं। मैं इस गवर्नमैंट को जो इनके प्रैडिसैसर्ज थें चौधरी छोटू राम और सरदार बलदेव सिंह, उनके विषय में बताना चाहता हूं। हमारे बहादूर चीफ मिनिस्टर साहब ने जो बुजदिलाना लाईन ली हैं कि फूड प्राइसीज मुकर्रर करना तो सैन्टर का काम हैं। वही मुकर्रर करती हैं। यही बात लार्ड बेवल ने एक बार सरदार बलदेव सिंह जी से कही थी। आपको याद भी होगी। आप तो इस टाईम पर मैम्बर होगी, मैं तो उस वक्त स्टुडैन्ट हुआ करता था और असैम्बली में वैसे ही शामिल हुआ करता था। यह बात सैन्टर ने सरदार बलदेव सिंह जी से कह दी और इन्होंनें अपनी कैबिनेट में आ कर बता दी लेकिन उस वक्त सर छोटू राम ने कहा कि अगली मीटिग में मैं जाऊंगा। वे मीटिंग में गये और उन्होंने सैन्टर कैंबिनेट को जाकर बताया कि वह गवर्नमैंट क्या हैं जो जमीदार के रेसक्यू पर नहीं आ सकती है जब कीमते गिरी हुई हो ? एकरूपये तीन आने के हिसाब से गेंहू बिकता था उस गवर्नमैंट की यह कोई जस्टिफिकेशन नहीं हैं कि वह गवर्नमैंट लडाई का बहाना लगा करके सातरूपये मन गेंहूं मोल ले ले। जब इस गवर्नमैंट के प्रैडिसैसर्ज की स्ट्रैन्थ मौजूदा हैं। तो यह गवर्नमैंट भी सेन्टर की गवर्नमैट से जाकर कह सकती हैं कि जमींदार इतने फालतू नहीं हैं। फूड प्राइसिज के बारे में इस गवर्नमैट को जमींदार का साथ डट कर देना चाहिए।(इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए)

मैडम.....बहिन जी.....(हंसी).....बहिन जी, मैं ज्यादा वक्त नहीं लेता.....(हंसी).....। अध्यक्ष महोदय, मैं माफी मांगता हूं मैंने ख्याल नहीं किया। मैंने आपको बैठे देखा नहीं।

श्री अध्यक्ष : कोई बात नहीं।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : स्पीकर साहब, मैं सिर्फ एक मिनट में खत्म कर रहा हूं। क्रिटिसिज्म सुजैशन के साथ होना चाहिये। मैं चीफ मिनिस्टर साहब से अर्ज करना चाहता हूं कि अब वह वक्त आ चुका हैं कि जब उनको इस बारे में नवर्स होने की जरूरत नहीं हैं कि यह गवर्नमैंट टूटेगी। यह गवर्नमैंट तो अब टूट ही नहीं सकती। यह तो इलैक्शन में जो कुछ होना था, वह हो लिया, अब घबराने की जरूरत नहीं हैं। अपोजीशन वालों के पास इलैक्शन मैंनीफेस्टी में कांग्रेस के खिलाफ कुछ कहने को नही थां। अपोजीशन वाले जनता को दो ही बाते कह कर आये कि हम बंसी को डिगायेंगे। मैं उन लोगो में से था, जिसने यह कहा कि मैं डिगाने की तो कोशिश करूंगा, न डिगेगा तो हाथ जोड़ कर उसके आगे जाकर खड़ा हो जाऊंगा और राजी कर लूंगा। मैं पहले एम0 एल0 ए0 की तरह अपने हल्के का सत्यानाश नहीं होने दूंगा। इसलिये मेरी अर्ज यह हैं कि अब वक्त आ गया हैं जिसमें सी0 एम0 साहब को नौरमल तरीके से प्रोसीड करना चाहिए। हरियाणा से डिफैक्शन भी, जिसको यह बगावत से भी बुरी चीज कहते हैं, अब खत्म हो चुकी हैं। अबरूलिंग पार्टी में कोई भी इस टाईप का आदमी नहीं हैं जो इस गवर्नमैंट को गिराने में

दिलचस्पी लेता हों। जनसंघ वाले दो मैंम्बर, क्या गिरायेंगें (हंसीं)। कैसे गिरा सकेंगे, यह दो जनसंघ वाले ? सी0 एम0 साहब को चाहिये कि वे अब नौरमल तरीके से चलें। उन्होनें उपनी कैबिनेट बहुत अच्छी छांटी हैं.....(व्यवधान)

कृषि मंत्री (श्री भजन लाल) : चौधरी रिजक राम, गिराने की कोशिश कर रहे हैं।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : रिजक राम जी, अगर कोशिश न करें, तो बहुत अच्छा हैं। (विघ्न)

श्री अध्यक्ष : इनको बोलने दीजियेगा।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता : अब मैं यह समझता हूं कि जो कैबिनेट का कांस्टीच्यूशन हैं, वह जाति–पाति की बिना पर नहीं वर्ग की बिना पर होना चाहिए। वह बहुत ही अच्छा किया हैं। हरियाणा में तीन ही वर्ग हैं। पहला वर्ग हरिजन एण्ड बैकवर्डज का हैं। वह 20 परसैंट बनता हैं। कहीं–कहीं 21 परसैन्ट भी बनता हैं। उनको रिप्रेजैटेशन मिल चुका है। निहायत ही काबिल आदमी को रिप्रेजैटेशन मिल चुका हैं। फिर साहब, उनके बाद आते हैं: फार्मर्ज–जिनका यह इलाका हैं। चीफ मिनिस्टर साहब भी इसी स्टौक में से हैं और दूसरे मैम्बर भी निहायत काबिल मीठे, कर्टीयस और एफिशिऐंट इनमें से लिये जा चुके हैं। और साहब जो कास्ट हिन्दू से बड़ा ओहदा दिया जा चुका हैं। कोई जरूरत नहीं अब हरियाणा में, एक भी मिनिस्टर और लेने की ? (तालियां)

तीनों तबके रिप्रैजेन्ट हो चुके हैं। कोई और मिनिस्टर बनाने की जरूरत नहीं, कोई जरूरत नहीं मिनिस्ट्री को बढ़ाने की। 52 वे हैं ही। 14–15 ने हमने अर्जी दे रखी हैं। 62–63 हो जायेंगे; इसलिये कोई डरने की जरूरत नहीं हैं। (तालियां) पांच वर्ष बेफिकर हो कर हरियाणा को डिवैल्प करें हम सब साथ देंगे। इन शब्दों के साथ स्पीकर साहब मैं बैठता हूं।

श्री गुलाब सिंह जैन (हिसार) : स्पीकर साहब, गवर्नर महोदय के ऐड्रैस पर थैक्स का जो मोशन मूव हुआ हैं, मैं उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

श्री अध्यक्ष : बाबू जी, मेरी एक प्रार्थना हैं। साढ़े पांच बजे तक मैम्बर साहिबान इस पर मोशन पर बोलेगें और उसके बाद चीफ मिनिस्टर साहब ने उसका जवाब देना हैं, आप थोड़ा सा समय का ख्याल रखें।

श्री गुलाब सिंह जैन : स्पीकर साहब, आप मुझे जितने मिनट देंगे, मैं उतने ही मिनट बोलूगा।

श्री अध्यक्ष : आप 10 मिनट के लिये बोले तो अच्छा हैं।

श्री गुलाब सिंह जैन : स्पीकर महोदय, चूंकि आपने मुझे 10 मिनट का ही समय दिया हैं, मैं कोशिश करूंगा कि मैं अपनी बातों को संक्षेप में अर्ज कंरू। गवर्नर साहब के एड्रैस में इलैक्शन के बारे मे कहा गया हैं कि हरियाणा में इलैक्शन बड़े शान्तिपूर्वक ढंग से हुए हैं। हमारे अपोजीशन के कुछ भाइयों ने

इस बात का चैलेन्ज किया हैं। यहां पर अपोजीशन के एक सदस्य चौधरी दल सिंह , ने बड़े ड्रामैंटिक तरीके से कुछ बैलट पेपर्ज पेश किये। मैं उनसे यह अर्ज करना चाहता हूं कि मैं उनको कांस्टीच्यूशन और इलैक्शन के बारे में काफी तजुर्बेकार समझता हूं कि जब बैलट पेपर्ज छपते हैं, तब उनमें से कितने बैलट पेपर्ज खराब होते हैं। पिछली दफा जब लोक सभा के चुनाव हुए तब जनसंघ वालों ने इस बारे में काफी शोर मचाया था। उस समय चंडीगढ़ की प्रैस से काफी वैलट पेपर्ज ऐसे मिले थे, जो खराब छपे थे।.....

चौधरी दल सिंह : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर। (शोर)

श्री अध्यक्ष : क्या आप प्वांयट आफ आर्डर पर खड़े हुए हैं ?

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, बाबू जी ने इस बात का जिक्र किया हैं कि छपते वक्त उतने ही बैलट पेपर्ज खराब हो जाते हैं, मैं उनसे यह कहना चाहता हूं कि जो बैलेट मैने पेश किये हैं, वे उन्हें देख सकते हैं और वे खराब बैलट पेपर्ज में से नहीं हैं।

श्री अध्यक्ष : यह प्वांयट आफ आर्डर नहीं हैं। आप यह बात बाद में कह सकते हैं।

श्री गुलाब सिंह जैन : चौधरी साहब, मैंने अर्ज किया हैं वह बिल्कुल ठीक किया हैं कि जब प्रैस में बैलट पेपर्ज छपते हैं तब उनमें से कुछ बैलर्ट पेपर्ज ऐसे होते हैं, जो खराब हो जाते हैं.....

श्री अध्यक्ष : बाबू जी, आप चेयर को ऐड्रैस कीजिए।

श्री गुलाब सिंह जैन : स्पीकर महोदय, माननीय सदस्य ने कुछ बैलट पेपर्ज यहां पेश किये हैं और यह कहा हैं कि इलैंक्शन अनफेयर हुए हैं। उसके बारे मे मैं आपके द्वारा मैंम्बर साहब को यह अर्ज करना चाहता हूं कि लोक सभा के चुनाव के बाद भी जो पार्टियां इलैक्शन में हारी थीं, उन्होनें अपनी झेंप मिटाने के लिए इस प्रकार के आरोप लगाये थे। इस बात को साबित करने के लिए कई पार्टीयों ने यह चर्चा शुरू कि थी कि कांग्रेस पापुलर तो हैं, लेकिन इसने गलत तरीके इस्तेमाल किये हैं। आपको मालूम हैं कि जनसंघ वालों ने यह एलीगेशन भी लगाया था कि बैलट पेपर्ज पर स्टैम्पिंग किसी खास स्याही से होकर आयी थी। इस मामले को हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक ले जाया गया। देश की सबसे बड़ी कोर्ट ने उसको ऐग्जामिन किया। हमारी हाईऐस्ट कोर्ट आफ ला ने यह फैसला दिया कि यह बात गलत हैं। मैं अपोजीशन के भाइयों से यह अर्ज करना चाहता हूं कि उन्हें अपनी डिफीट जैसे और सदस्यो ने कहा हैं, ग्रेसफुली ऐक्सैप्ट कर लेनी चाहिए। उनकी डिफिट इसलिये नहीं हुई कि इलैक्शन में कुछ अनफेयरनैस या हेरा–फेरी चाहिए। उनकी डिफीट

के तीन कारण थे। एक तो हमारी प्रधानमंत्री को जो देश को ऊपर ले जाने का कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम था, उसको लोगों ने अपनाया। दूसरे इस मुख्य मंत्री की लीडरशिप में जो डिवैल्पमैंट कांग्रेस पार्टी के प्रोग्राम को रिजैक्ट कर दिया। उन्होंनें तमाम देश के अन्दर उनकी सरकार का इस्तेमाल करके देख लिया था आपोजीशन उन्हें स्टेबल गवर्नमैंट देने में कामीयाब नही हुई। जनता यह चाहती थी कि एक दफा फिर देश में स्टेबल गवर्नमैंट बनें। इसीलिए आपने देखा कि हरियाणा में ही नहीं, सिवाय एक दो छोटी स्टेट्स को छोड़कर जहां के अपने लोकल इशुज थे, सारे भारतवर्ष में कांग्रेस पार्टी को बहुमत मिला। इसका कारण यह नहीं था कि इलैक्शन में कोई अन–फेयरनैस हुई या गवर्नमैंट की इन्टरफीयरैन्स थी। मैं तो यही कहता हूं कि जनता ने केवल कांग्रेस पार्टी के प्रोग्राम को अपनाया और मुख्य कारण यह भी था कि जनता स्टेबल गवर्नमैंट चाहती थी। हमारे प्रधानमंत्री का नारा यह था कि आल इंडिया कांग्रेस पार्टी ही एक ऐसी पार्टी हैं जो देश को स्टेबल गवर्नमैंट दे सकती हैं। स्पीकर साहब, लीडर आफ दी अपोजीशन ने, इसके अलावा, एक दो–बातों की सरकार को बधाई भी दी हैं। मैंने उन्हें यहां पहली दफा बोलते हुए सुना हैं। उनके बारे में मैंने यह सूना था कि वे बड़े स्वीट हैं, बड़ा मीठा बोलते हैं। इस बात का कोई शक नहींकि वे बहुत ही मीठे तरीके से बोले लेकिन कई बातें एक होशियार वकील की तरह इस किस्म की कह गये जिनके मायने बड़े डीपरूटिड थे। स्पीकर महोदय, मैं समझता हूं कि जिस वक्त डिवैल्पमैंट या तरक्की की बात हम करते

हैं, उस वक्त हमें उसको साबित करना पड़ता हैं। इसके लिये आंकड़ै का सहरा लिया जाता हैं। आंकड़े ही हमारा बेस होते हैं जो यह बताते हैं कि हमने पिछले सालो में क्या तरक्की की हैं। चौधरी साहब ने बड़ी होशियार के साथ सबसे पहले उस बेस कोरूट आउट करने की कोशिश की। उन्होंनें यह कहा कि ये आंकड़े गलत हैं। लेकिन गलत क्यों हैं, इसका उन्होनें कोई आधार नहीं बताया जैसे किसी चीज के बारे में जब हम कोर्ट में कुछ कहते हैं तोरूलिंग पेश करते हैं, वैसे ही हम तरक्की के बारे में इन किताबों को गल्त नहीं कह सकते। उन्होनें एक बहुत ही होशियार वकील के तौर पर उस सिलसिले में दलील देने की कोशिश की। मेरी अर्ज यह हैं कि आखिर हम इन्सान हैं, गल्ती होना मुमकिन हैं। हो सकता हैं कि कहीं किसी जगह कोई छोटी–मोटी आंकड़ो की गल्ती हो, कहीं पर कोई पैसेज में गल्ती हों। लेकिन उनका बेसिज जरूर हैं। आखिरकार हमारे यहां डैमोक्रेटिक सैट अप आफ गवर्नमैंट हैं। इसमें लोग हर और इम्प्रूवमैंट चाहते हैं। हरेक चीज का रिकार्ड रहता हैं और उसका कोई न कोई बेस जरूर होता हैं। हम यह भी देखते हैं हर साल आमदनी और खर्च की बैलेन्स शीट बनती हैं। अगर हम उस बैलेन्स शीट के मुताबिक देंखे कि हरियाणा बनने से पहले हरियाणा की क्या पोजीशन थी और हरियाणा बनने के बाद अब क्या पोजीशन हैं, तो हमें कुछ पता लग सकता हैं। मैं सदन का ध्यान उस तरफ नहीं ले जाना चाहता हूं। लेकिन एक बात मै जरूर कहना चाहता हूं कि अगर हम '' हरियाणा अचीवमैट्स

–1968–71'' को देखने की कोशिश करें तो पता चलेगा कि वाकई हरियाणा में डिवैल्पमैंट हुई हैं। इस डिवैल्पमैंट का श्रेयरूलिंग पार्टी को ही जाता हैं, जिसकी विसातत से आज हरियाणा आगे आ पाया हैं। क्या इलैक्ट्रिसिटी, क्या रोड्ज और क्या होस्पिटल, कोई भी ऐसा दायरा नहीं हैं जिसमें हम आगे न बढ़े हो। आप 1968 से 1971 तक के फैक्ट्स एण्ड फिग्र्ज लें, आपको सब कुछ नजर आयेगा।

स्पीकर साहब, एक खास बात लीडर आफ दी अपोजीशन ने कैनाल्ज के बारे में कही। उसके बारे में उन्होंनें मजाक बनाया। उन्होंनें कहा कि आज किसानों को यह दिलासा दिया जाता हैं कि उन्हें रावी और ब्यास से पानी मिलेगा। उन्होंनें अपनी तकरीर में कहा कि रावी ब्यास से कैसे पानी मिलेगा। स्पीकर साहब, ब्यास लिंक का कंस्ट्रक्शन, ब्यास डैम का कंस्ट्रक्शन उस कम्पोजिट पंजाब में एक मिनिस्टर थे। स्पीकर साहब, मैं आपका ध्यान इस तरफ दिलाना चाहता हूं कि उस वक्त हमारे केस को इग्नोर किया गया। 72 मिलियन एकड़ फीट वाटर डिस्ट्रिब्यूट होना था। हमारा हक पांच लाख मिलियन एकड़ का बनता था लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता हैं कि उस वक्त जो हमारे पास लीडर थे जो आज आपोजीशन में बैठे हुए हैं, ने इस केस की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और आज हमारे चीफ मिनिस्टर साहब को एक हारे हुए केस को, एक बैड केस को फाइट करना पड़ रहा हैं। मैं यकीन दिलाना चाहता हूं कि उस

वक्त की तरह केस को इग्नोर नहीं किया जा रहा हैं और आज की सरकार उस केस को मजबुती के साथ लड़ रही हैं। मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि इस सरकार ने थोड़े से साढ़े तीन साल के अर्से में बड़ी सूझ–बूझ के साथ इतने सारे प्रोजैक्टस बना दिये हैं। लोहारू कैनाल प्रौजैक्अ बनाया हैं, जुई कैनाल प्रौजैक्ट बनाया हैं और इसी किस्म के दूसरे प्रौजैक्ट हैं। जो भी प्रौजैक्ट बने हैं उनसे हरियाणा में बहुत ही तरक्की हुई हैं और हमने नहरें खोदी हैं।

स्पीकर साहब, आपको मालूम होगा कि वाटर डिस्ट्रिब्यूशन के लिए एक कमेटी बनी हुई हैं। वे लोग हरियाणा में आए तो जो कैनाल्ज यहां बनाई गई हैं उनको देखकर बड़े प्रभावित हुए। उन्होनें जब यह देखा कि कैनाल्ज खुदी हुई हैं लेकिन पानी के बगैर सूखी है तो हमारा केस और भी मजबूत हुआ और इन्होने कहा कि वाकई हरियाणा को पानी मिलना चाहिए। स्पीकर साहब, यह बात सच हैं कि हरियाणा के पास अपना कोई दरिया नहीं हैं और यह भी एक ऐस्टैब्लिश्ड फैक्ट हैं कि जिस प्रान्त में से दरिया गुजरता हैं, पानी का सारा हक उसी का नहीं बनता। अगर ऐसा होता तो राजस्थान को तो एक बूंद भी नहीं जाता। हमारे यहां तो फिर भी कम से कम जमुना का कुछ हिस्सा गुजरता हैं, बरसाती नदियां हैं लेकिन राजस्थन का क्या होता। पानी का डिस्ट्रिब्यूशन फेयरली हों, यह सैन्ट्रल गवर्नमैंट का कार्य हैं और उस पर जो हमारा राईट बनाता हैं, वह हमको

अवश्य मिलेगा। यह ठीक हैं कि हमारे पैरिनियल नहरें नहीं हैं, अभी हम बरसात के पानी को ही देते हैं। अपोजीशन के मैम्बरों को तो इस बात की तारीफ करनी चाहिए कि इस सरकार ने कितने प्रौजैक्ट बनाए हैं। लिफ्ट इरीगेशन की स्कीम को कितने अच्छी तरह से चलाया हैं। 200–250 फुट पानी को ऊपर ले जाया गया हैं। वह प्रौजैक्ट भी जो इस सरकार से पहले बने थे, उनकी तरफ भी हमारे आपोजीशन के भाईयों ने, जब वह पावर में थे, कोई ध्यान नहीं दिया। उनके सुधार के लिए कोई कदम नही उठाए गए। स्पीकर साहब, मैं आपकी विसातत से अर्ज करना चाहता हूं कि इस गवर्नमैंट ने चौधरी बंसी लाल की लीडरशिप में कितनी सूझ–बूझ से काम करके आज हरियाणा के किसानो को पानी मुहैंया किया हैं। यह ठीक हैं कि शायद कैरिज कैनाल के बारे में पंजाब वालों ने कोई आपत्ति की हो लेकिन स्पीकर साहब, अपोजीशन के दोस्तों को मालूम होना चाहिए कि आज मजबूत सैन्टर हैं। हमारे यहां फैडरल टाईप की गवर्नमैंट हैं लेकिन रैजिड्युअरी पावर्ज आज भी सैन्टर के पास हैं। ज्यों ही हमारे इस पानी की तकसीम का फैसला हो जाएगा, डिस्ट्रिब्यूशन का फैसला हो जायेगा, कोई वजह नहीं हैं कि हमें कैरिज कैनाल बनान के लिए पंजाब के भाई रोक सके। स्पीकर साहब, एक–दो–बातें अपोजीशन के लीडर ने और कहीं हैं.....।

श्री अध्यक्ष : आपका समय हो गया हैं।

श्री गुलाब सिहं जैन : स्पीकर साहब, डैमोक्रेसी के बारे में कहा गया कि डैमोक्रेसी खत्म हो रही हैं। मेरे दोस्त न कांग्रेस पार्टी के मैंम्बरों के ख्यालात का कोई ख्याल रखा जाता हैं और न कैबिनेट के सदस्यो के विचारों पर ध्यान दिया जाता हैं। मैं सदन को बताना चाहता हूं कि जहां तक सदन में सूझावो का ताल्लुक हैं मैं आनरेबल मैम्बर्ज का ध्यान हमारा जो बजट सैशन हुआ था, उसकी ओर दिलाना चाहता हूं। उस वक्त गवर्नर ऐड्रैस पर बोलते हुए चीफ मिनिस्टर ने कहा था कि अपोजीशन की तरफ से यदि कोई भी सूझाव ऐसा होगा जो कि वाकई हरियाणा की डिवैंल्पमैंट के लिए होगा तो हम उसको जरूर मानेंगे और आज भी जब यहां चर्चा चल रही थी तो उन्होनें खुले शब्दों मे से था कि अपोजीशन के मैम्बरों की तरफ से अगर कोई सूझाव आएगा तो उसको जरूर मानेगें। जहां तक पार्टी की बात हैं मैं दौलता साहब को बतलाना चाहता हूं कि कांग्रेस पार्टी का कोई मैटर भी ऐसा नहीं हैं जिसमें चीफ मिनिस्टर साहब खुद फैसला करते हो। हर बात को पार्टी में रखा जाता हैं और फ्री और फेयर डिस्कशन होता हैं और जो फैसला होता हैं उसके मुताबिक काम होता हैं। जहां तक कैबिनेट का सवाल हैं कैबिनेट के हर सदस्य की बात को कैबिनेट मीटिग में वजन दिया जाता हैं, चीफ मिनिस्टर उनके सुझावों को बिल्कुल इग्नोर नहीं करते। इस तरह की बात कहना कि चीफ मिनिस्टर अपनी मर्जी से काम करती हैं, इसका कोई बेसिज नही हैं। वे तो पूरे डैमोक्रेट हैं। वे कामनमैन से ऊपर उठे हैं। जिसने अपना सारा जीवन दोस्तों को सहयोग देने में गुजारा हो उसके दिमाग में

डिक्टेटरशिप कैसे आ सकती हैं। यह ठीक हैं कि वह अपोजीशन की धमकियों से डरते नहीं हैं, किसी गलत बात को मानते नहीं हैं और चेलेन्ज को हमेशा कबूल करते हैं।

डिवैल्पमैट के बारे में बात कही गई हैं कि डिवैल्पमैट तेजी से हो रहा हैं लेकिन उसमें बड़ी गल्तियां हो रही हैं। अपोजीशन के लोगों को मैं बतलाना चाहता हूं किरूस जिस वक्त जार के पंजो से आजाद हुआ और वहां जब डिवैल्पमैंट हुआ तो वहां एक डिसिजन किया गया कि बेशक हमारी मशनरी क्रूड हैं, हमारी मशीनरी इतनी सोफिस्टिकेटिड हैं और फाइन शक्ल में नजर नहीं आती लेकिन वह उतना ही अच्छा करती हैं। जैसा कहा जाता हैं जस्टिस डिलेड डिनाईड । यही बात डिवैल्पमेंट पर भी लागू होती हैं। अगर आप एक मकान बड़ा खुबसूरत बनाते हैं, बड़ी चुन–चुन कर उसमें ईटे लगाई जाती हैं, अगर वह मकान आपकी जिन्दगी में पूरा न हो तो उसका फायदा ही क्या हैं। तेजी से डिवैल्पमैंट करने में कुछ गल्तियां रह गई हैं। चीफ मिनिस्टर साहब तो कहते हैं कि अगर कहीं गल्तियां रह गई हैं तो बताई जांए हम उनको दूर करेगें। अपोजीशन के भाइयों ने कहा सड़क खराब बनी हैं, बिजली में खराबी हैं। मैं इस बात को मानता हूं कि जब इतनी तेजी से काम हो, और इतना बड़ा हो तो कुछ ना कुछ तो खराबी रह जाती हैं। स्पीकर साहब, मुझे अपनी प्रोफैशन के सिलसिले में हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों में जाने का मौका मिलता हैं। मैंने जो डिवैल्पमैंट वहां देखी हैं, मैं दावे के साथ कह

सकता हूं कि हमारे हरियाणा में डिवैल्पमैंट देश के दूसरे हिस्सों से कहीं अच्छा हैं। हरियाणा की सड़को की हालत उनसे कहीं अच्छी हैं। थोड़ी बहुत खराबी रह जाना स्वाभाविक हैं। मुझे बोलना अभी और था लेकिन समय कम हैं इसलिए मैं खत्म करता हूं जो धन्यवाद का प्रस्ताव हैं उसका समर्थन करता हूं।

चौधरी दल सिंह द्वारा व्यक्तिगत स्पष्टीकरण

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, एक–दो बातें मेरे बारे में कहीं गई हैं मैं उनके बारे में पर्सनल ऐक्साप्लेनेशन देना चाहता हूं। जहां तक इलैक्शन के फेयर होने या अनफेयर होने का ताल्लुक हैं इस पर काफी चर्चा हो चुकी हैं, बार–बार इस बात को दोहराने से कोई फायदा नहीं हैं। जहां तक बैलट पेपर का सम्बन्ध हैं, मैं कहना चाहता हूं कि बैलट पेपर आपके पास हैं, आप इंक्वायरी करवा लें मैं कहता हूं कि वे बिल्कुल जैनुअन हैं।

श्री अध्यक्ष : पर्सनल तो आपके खिलाफ कोई बात नहीं की हैं।

चौधरी दल सिंह : कहा गया हैं कि यह गलत फाड़कर लाई गई हैं।

श्री अध्यक्ष : लेकिन आप के खिलाफ तो कोई बात नहीं कही गई हैं।

चौधरी दल सिंह : मैं यह कह सकता हूं कि ये बैलट पेपर जैनुडन हैं और जिसने मेरे पास भेजे हैं उसने लिखा हैं कि अगर 100–50 और चाहिए तो भेज सकता हूं।

श्री गुलाब सिंह जैन : इस बात की कम्पलेंट आप इलैक्शन कमीशन से करिए।

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, इन्होनें अपने बारे में कुछ नहीं बताया। मैने 19 ट्रैक्टरों के बारे में कहा था।

श्री गुलाब सिंह जैन : मैंने आपके ऊपर तो कोई ऐलीगेशन नहीं लगाया हैं।

बैठक के समय में वृद्धि

श्री अध्यक्ष : बोलने वाले काफी साहिबान हैं अगर सदस्यगण चाहें तो सदन का समय बढ़ा दिया जाए। (सभी सदस्यों ने इसके लिए स्वीकृति दी) एक घंटा सदन का समय बढ़ाया जाता हैं।

राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा (पुनरारम्भ)

(5.00P.M) दलीप सिंह (कनीना) : स्पीकर साहब, यहां पर डिवैल्पमैंट के बारे में बड़ी चर्चा हो रही हैं, इसमें कोई दो

राय नहीं हैं , कोई शक वाली बात नहीं हैं। पंजाब में जब हम सम्मिलित थे तो हमारे हक हमे नहीं मिलते थे। हम इस बारे मैं लड़ते रहे कि हमारे हक हमें मिलें। हमारा पैसा हमारे हरियाणा में लगे। हरियाणा बनने के बाद अब चार–पांच से यह पैसा हरियाणा में लगने लगा हैं तो लोगों को यह महसूस होने लगा कि हरियाणा में तरक्की होने लगी हैं। यह ठीक हैं कि गांव–गांव में बिजली पहुंच गई हैं, सड़कों का काम भी तेजी से हो रहा हैं लेकिन इसके साथ कुरप्शन, भ्रष्टाचार कितना बढ़ गया हैं जिसका कोई ठिकाना नहीं हैं। जहां तक प्रोडक्शन का सवाल हैं, वह तो एरिथमैटीकल तरीके से 1,2,3,4 की रेशों से बढ़ती हैं और जो अबादी हैं वह ज्योमैट्रीकल तरीके से 2,4,8,16,32,64 की रेशों से बढ़ती हैं। इसी तरह से इनकी डिवैल्पमैंट जो हैं वह तो एरिथमैटीकल तरीके के अनूसार हुई और कुरप्शन जो हैं, वह ज्योमैंट्रकल से बढ़ती जा रही हैं। स्पीकर साहब, आप किसी भी जगह चले जाएं किसी भी महकमे में चलें जाएं बगैर पैसा दियें, आप का कोई काम नहीं हो सकता। इस तरह किसान और मजदूर को परेशानी उठानी पड़ती हैं। स्पीकर साहब, एक ओर तो हरियाणा में बेकारी हैं और दूसरी तरफ क्या हो रहा हैं कि एस0 एस0 बोर्ड में जे0 बी0 टी0 की सिलैक्शन के लिये एक टीचर से 500–500रूपया लिया गया और एप्वायंटमैंटस कैन्सल की गई, जिनको बाद में कोर्ट में चेलेन्ज किया गया वह सारी की सारी एप्वायंटमैंटस कैन्सल की गई, जिनको बावजूद वह एस0 एस0 बोर्ड अब भी हरियाणा में मौजूद हैं, इसको तोड़ा नहीं गया हैं क्योकि

इनके अपने आदमी वहां पर बैठे हुए हैं । आप इस सारी बात की इन्कवारी करवांए और कसूरवार लोगों को सजा दिलवाएं लेकिन अभी तक इस बारे में कोई ऐसा पग नहीं उठाया गया हैं। मेरे कहने का मतलब यह हैं कि आप किसी भी कोने में चले जाएं, किसी भी महकमें में चले जाएं, कुरप्शन ही कुरप्शन हैं। स्पीकर साहब, शिकायते भी की जाती हैं तो उस पर कोई गौर नहीं किया जाता हैं। हरेक अफसर इनके नीचे दबे देबे काम करते हैं उन अफसरों का इतना साहस नहीं हैं कि वे किसी काम के लिये इन्कार कर सके। यहां पर तो वन मैनरूल हैं, वन पार्टीरूल हैं। यह बात तो ठीक हैं कि आज कांग्रेस पार्टी बहुमत में हैं लेकिन मैं यह कहना चाहूगां कि जो इलैक्शन हुए हैं, वह फेयर इलैक्शन नहीं थे । सारे बडे–बड़े अफसरों ने चाहे यह आई0 ए0 एस0 हैं, चाहे एच0 सी 0 एस0 हैं खुले तौर पर इनको मदद की हैं जैसे कि वे खुद कैन्डीडेट हों। वे बेचारे इन से डरते रहते हैं। सीधे इन लोगों के साथ जीपों में बैठकर प्रचार करते रहे। इस बारे में हम ने इलैक्शन डिपार्टमैंट से शिकायत की, तारें भी दी गई, पर उन तारों का कोई एकनौलिजमैंट नहीं मिला। किसी की भी कोई सुनवाई नहीं क्योंकि व अफसर इनके अपने महेन्द्रगढ़ से आये हैं। मैं आपको मिसाल दे सकता हूं । स्पीकर साहब, यह कितने शर्म की बात हैं कि एस0 एच0 ओज0 और थानेदारों के जरिये कुछ आदमियों को जबरदस्ती विदड्राल के लिये पकड़ा कर लाया गया। कहने का मतलब यह हैं कि इन्होंनें हर तरफ अन्धरे ही अन्धरे मचा रखा हैं। स्पीकर साहब, इसके साथ–साथ मैं लैन्ड रिफामर्ज

के मुताल्लिक कुछ कहना चाहता हूं कि हम आप की नीति से सहमत हैं। अच्छा हैं पेप्सू और गैर–पैसू ऐक्ट को मिला कर बना दिया जाये, इसकी पहले ही जरूरत थी। साथ ही साथ लैन्ड की सिलिंग को भी कम किया जाना चाहिए। ये किसानो की तो आमदनी की हद मुकरर्र करना चाहते हैं कि किसी के पास 20–30 एकड़ भूमि से ज्यादा न हो। अगर यह चीज की जानी हैं, तो एक वर्ग के साथ ऐसी बात नहीं होनी चाहिए सभी वर्गो के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए, चाहे कोई पूजीपति हैं, चाहे कोई बिजनैसमैन हैं, चाहे कोई फैक्टरी का मालिक हैं। सीलिंग तो इन्कत पर होनी चाहिए। एक आदमी सिनेमा से एक लाखरूपया कमता हैं। सिनेमा से जो लोग पैसा कमाते हैं, वे दो भी बन सकते हैं, तीन भी बन सकते हैं, वह शूगर मिलें भी लगा सकते हैं। उनकी इन्कम पर कोई सिलिग नहीं पर जो गरीब किसान बेचारा मेहनत करता हैं, जो अपनी मेहनत की कमाई से जमीन खरीदता हैं, उस पर सीलिग लगाना यह बड़ा अन्याय हैं। स्पीकर साहब, कानून सब के लिये एक होने चाहियें। सीलिग आप जरूर लगाईये, किसी के साथ कोई भेदभाव न किया जाए। सभी के साथ एक जैसा व्यवहार हो । मेरी आप के जरिये सरकार से प्रार्थना हैं कि सीलिंग को कुछ कम कर दें। स्पीकर साहब, गवर्नर साहब ने अपने ऐड्रैस में फरमाया हैं कि पश्चिमी यमुना नगर आवर्धन परियोजना पर 13.50 करोड़रूपया खर्च किया जायेगा। इसके दोनों तरफ ट्यूबवेलज लगाए जाऐगें और फिर ट्यूबवेलज के जरिये पानी नहर में डालेगें तब वह पानी हिसार रोहतक और

करनाल के जमीदारों को आबयाने के रेट पर सप्लाई होगा। यह पानी उन्हें मिलना चाहिए पर मिलना एक रेट से चाहिए। यह बात तो ठीक हैं लेकिन महेन्द्रगढ़ के किसानों के साथ ऐसा क्यों किया जाता हैं कि उसको पानी नहीं मिलता। बैंकों से वे बेचारे कर्जा लेते हैं, वे उस पर ब्याज भी देते हैं, उसके बाद वे कुएं बनाते हैं, बिजली खर्च करते हैं फिर कहीं उस बेचारे किसान को जमीन के लिये पानी मिलता हैं, इतना कुछ अपने पास करने के बावजूद भी वहां के किसान को जमीन के लिये पानी नहीं मिलता हैं। इस तरह वहां के किसानों के साथ भेदभाव क्यों किया जाता हैं ? मेरी आप के जरिये सरकार से प्रार्थना हैं कि वहां के किसानों को बिजली बहुत कम रेट पर दे, जो उन्होंनें लोन ले रखा हैं, वह उनको फ्री दिया जाए ताकि वहां के किसान लोग अपनी खुशहाली की और बढ़ सके। स्पीकर साहब, डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ़ वह जिला हैं जिसके वीर अभी हाल की लड़ाई में शहीद हुए हैं, उन्होंनें अपने देश के लिये कुर्बानियां दी हैं। पिछली दफा भी मैंने यह प्रार्थना की थी कि शहीदों की विधवाओ को जो पैसा मिलेगा। चीफ मिनिस्टर साहब ने पिछली बार वायदा भी किया था कि हम कैश भी देगें, पर अभी तक वह वायदा पूरा नहीं किया गया। मै आपकी मार्फत चीफ मिनिस्टर साहब से यह कहूंगा कि वह अपने वायदे को पूरा करें। जिन शहीदो की पत्नियों को बौन्ड्ज दिये गये है, उनको केश देने की व्यवस्था की जाए।

श्री अध्यक्ष : राव साहब, आप दो मिनट और बोल सकते हैं बहुत से मैंम्बर बोलना चाहते हैं।

राव दलीप सिंह : स्पीकर साहब, बस मैं एक दो बाते और डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ़ के बारे में कहना चाहता हूं। महेन्द्रगढ़ में सरसों की फसल बिल्कुल तबाह हो गई है ंऔर इसके बारे में में आज तक सरकार से कोई कार्यवाही नहीं की कि इसका क्या कारण हैं। इसमें कौन आदमी जिम्मेदार हैं। मेरी आप से प्रार्थना हैं कि इस फसल के तबाह हो जाने से जो लोगों को बड़ी परेशानी हुई हैं, लोगों का जो बड़ा नुकसान हुआ हैं, इसको ध्यान में रखते हुये, जो लोन्ज वगैरह किसानो ने लिये हुए हैं, उसकी रिकवरी को अभी बन्द करवाया जाए। ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए। वहां का किसान आज बहुत परेशान हैं। मेरी यह प्रार्थना हैं कि वहां के किसान को रिलीफ मिलनी चाहिए। इसके साथ–साथ महेन्द्रगढ़ में जहां तक पानी का ताल्लुक हैं वहां पर ऐसे गांव है जहां 3–3 मील से पानी लाना पड़ता हैं। 20–22 सालों की आजादी के बाद भी अगर पानी की हालत हो तो यह बड़े अफसोस और शर्म की बात हैं। गवर्नर साहब के ऐड्रैस में यह कह गया हैं कि हम पानी जल्द से जल्द मुहैया करेंगें। मेरी यह प्रार्थना कि महेन्द्रगढ़ जिले को पीने का पानी जल्द से जल्द मुहैया करेंगे। इसके साथ–साथ मेरी यह भी प्रार्थना हैं कि वहां पर मिल्क सप्लाई की स्कीम चलाई जाये। ताकि वहां के जो गरीब किसान , मजदूर या गरीब हरिजन हैं जिनके पास भैंसे हैं वे

अपना दूध वहां पर सप्लाई कर सकें। पिछली दफा किसानो ंकी पैदावार की फेयर प्राइस देने के लिये चीफ मिनिस्टर साहब ने कहा था कि हम कोशिश करेंगे लेकिन अब तक इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया हैं। मेरा निवेदन हैं कि किसानों को उनकी पैदावार की सही कीमत मिलें। अगर उनको सही कीमत नहीं मिलेगी तो वे मर जायेंगे। इसके इलावा हमारे जिले में पानी बहुत नीचा होने की वजह से पानी की कमी हैं। इसलिये मेरी प्रार्थना हैं कि वहां पर जो एम0 सी0 जी0 की स्कीम हैं बिल्कूल नहीं होनी चाहिए और उसकी जगह वहां पर स्पैशल रेट्स होने चाहिए ताकि वहां के लोगों का भला हो सके। इन शब्दों के साथ मैं अपना स्थान लेता हूं।

श्रीमती प्रसन्ना देवी (इन्दरी) : आदरणीय स्पीकर साहब, मित्तल साहब ने जो गर्वनर महोदय के अभिभाषण का धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया मैं उसका समर्थन करती हूं। अभी हाल में और बहुत सी दूसरी स्टेटों में चुनाव सम्पन्न हुए। हमारे हरियाणा में चुनावों के समय काफी शान्ति व्यवस्था बनी रही इसके लिये मैं हरियाणा की जनता और सरकार को बधाई देती हूं। हरियाणा और हिन्दूस्तान की जनता ने हमारे देश के प्रधानमन्त्री श्रीमति इन्दिरा गांधी की समाजवाद की नीति का समर्थन किया जिसके फलस्वरूप हिन्दोस्तान में कांग्रेस की हकूमत आई। कल यहां पर बोलते हुए कुछ माननीय सदस्यों ने हरिजन भाइयों के लिये बड़ी हमदर्दी जाहिर कीं। स्पीकर साहब, मैं आपको बताना चाहती हूं कि

इलैक्शन होने से एक–दो दिन पहले और एक–दो दिन बाद मेरे हल्के के 8–10 गावों के ऐसी घटनायें हुई कि जो हरिजन कांग्रेस के समर्थन में थें उनको पीटने की कोशिश की गई थी और एक दो जगह तो पुलिस तक की नौबत आई। यह सब होने के बाद ठंडक पड़ी। एक तरफ तो ये भाई यहां हाउस में हरिजनों का पक्ष लेते हैं और दूसरी तरफ इस तरफ के तरीके अख्तियार करते हैं जैसे राव वीरेन्द्र सिंह के वक्त में बहादुरगढ़ में इलैक्शन में हुआ था। इसके साथ–साथ गवर्नर साहब के ऐड्रैस में भूमि सूधार का जो जिक्र आया हैं यह एक बहुत ही अच्छा कदम हैं और इससे मैं समझती हूं गरीब आदमियों को कुछ न कुछ राहत मिलेगी और समाजवाद में उनको भी बराबरी का अधिकार मिलेगा। चूंकि हम चाहते हैं कि समाजवाद आये और एक दूसरे में कोई फर्क न रहे इसलिये जहां गावों की सम्पत्ति पर सीलिंग लगाई जाये वहां शहरी पर भी सीलिंग लगाई जाये, जैसे गावों की सम्पत्ति या जमीनो ंका हिसाब किताब फिक्स किया जाये उसी तरह से शहरी सम्पत्ति या जमीनों का भी फिक्स किया जाये। हरियाणा में बहुत से गांवों में कस्टोडियन की जमीने हैं जो कि हरिजनों को नीलाम की जाती हैं। उस नीलामी का जो फायदा हरिजनों को होना चाहिए वह नहीं होता। इसका एक कारण तो यह हैं कि नीलामी में मुकाबला होने की वजह से नीलामी ऊंची चढ़ जाती हैं। गरीब आदमी उस वक्त तो मुकाबले में जमीन ले लेते हैं लेकिन बाद में जब उनको किश्त देनी पड़ती हैं तो बड़ी मुश्किल हो जाती हैं । इसके लिये मैं सरकार से प्रार्थना करूंगी कि कोई ऐसा तरीका

निकाला जाये जिससे उन गरीब हरिजनों को फायदा हो सके। मेरा सूझाव हैं कि सस्ती कीमत फिक्स करके लाटरी सिस्टक से उनकी जमीन दी जाये। अगर गरीब आदमी को हमने आगे बढ़ाना हैं तो उस के लिये हमे थोड़ा कन्सैशन देना पड़ेगा। जिस आदमी ने नये सिरे से खेती शुरू करनी हैं उसकी मदद की जानी बहुत जरूरी हैं। मेरा निवदेन हैं कि उसकी किश्त इतनी ज्यादा न हो जाये कि जितनी वह कमाई करे उससे ज्यादा उसको किश्त देना पड़ जाये। मैं चाहती हूं कि जिस गांव की जमीन नीलाम होनी हो उस गांव के बहुत दूर तक के या तगड़े आदमी उस जमीन में न पड़े बल्कि जिनका हक बनता हो उन्हीं को ही जमीन दी जाये।

हमारी सरकार ने पिछले दिनों एक हरिजन कल्याण निगम बनाया जोकि बहुत ही सराहनीय कदम हैं । हरिजन और दूसरे भाई जो पिछड़े वर्ग से ताल्लुक रखते हैं या जो बे–जमीन हैं वे इतन पिछड़े हुए हैं कि थोड़े पैसे से या थोड़ी मदद से उनका काम नही चल सकता। इसलिये मैं सरकार से प्रार्थना करती हूं कि जिस तरह आप ने सड़को और बिजली के काम को बड़े पैमाने पर और बड़ी तेजी के साथ किया हैं उसी तरह से इन भाइयों की भी ज्यादा पैसे रखकर मदद की जाये। एक हल्के मे अगर दस–पांच आदमी ही फायदा उठायेगें तो उससे बात नहीं बन सकती हैं। इसमें अगर ज्यादा पैसा रखा जाये खासकर पशु पालने के लिये तो जिन आदमियों को कोई दूसरा काम भी हैं जैसे चमड़े का काम हैं उनके लिये भी ज्यादा से ज्यादा पैसा रखा जाये। मैं

यह तो नहीं कहती कि एक ही साल में या एक ही दिन में हम सब भाइयों की कमी दूर कर सकते हैं। लेकिन उनके लिए अगर पैसे की मात्रा बढ़ा दी जाए तो वे रोजी कमाने लायक हो सकते हैं डिप्टी स्पीकर साहब, मैं मानती हूं कि हमारी सरकार ने गांवो में चौपाल बनाने के लिये पिछले साल हरिजनों को पैसे दिये। यह बहुत जरूरी था क्योकि हरिजन भाई इस तरीके से गुजारा करता हैं कि उस के पास एक ही कोठरी होती हैं जिसमें वह खुद उसकी बहिनें, भाई, बेटी या पोता और माता गुजरा करते हैं। अगर कोई मेहमान उसके यहां आ जाये तो उसको बहुत मुश्किल हो जाती है। इसलिये मै आपके जरिये सरकार से प्रार्थना करती हूं कि ऐसी स्कीम बनाई जाये कि आने वाले पांच सालों तक कोई भी गांव ऐसा न रहे जहां हरिजनों की आवास की व्यवस्था न हो। हर गांव में चौपालो का इन्तजाम हो जाये। हमारे गर्वनर महोदय ने अभिभाष में कहा हैं कि हमने इस साल जो खत्म होने जा रहा हैं एक हजार करीब मकानों का निर्माण किया हैं। मेरा निवेदन हैं कि इतने मकानों से ही काम नहीं चलेगा, और बनाये जाये। मेरे हल्के में 90 फीसदी लोग कच्चे मकानों में बैठे हैं। ऐसे लोगों के लिये जरूरी हैं कि उनकी लम्बे टाईम के लिये और ज्यादा तादाद में लोन दिया जाये या इसके लिए कोई ऐसी स्कीम बनाई जाये कि हर साल इलाके के अन्दर या हर जिले के अन्दर 100—50 गांव में मकान बनाये जाये। इस तरह से करने से उन सब भाईयों का भला हो जायेगा जो अपने मकान खुद नहीं बना सकते हैं। इस स्कीम को लागू करने के लिए अगर सैण्ट्रल गवर्नमैंट से भी मदद

लेनी पड़ी तो लेनी चाहिए। स्पीकर साहब, इसमें कोई शक की बात नहीं कि पिछले चार सालों में हरियाणा ने विकास के कार्य मं इतनी तरक्की की हैं कि आज हर तरफ तरक्की दिखाई देती हैं। बिजली को ले लीजिए, देहातों में जो बिजली गई हैं उससे लोगों को फायदा हुआ हैं और ट्यूबवैलों को बिजली मिलने से अनाज की पैदावार काफी बढ़ी हैं। मुझे करनाल के जिले का आपने हल्के का पता हैं जहां पर पहले एक फसल नहीं हो सकती थी अब वहां पर किसान दों फसले ठाठ से बड़ अच्छे ढंग से पैदा करते हैं। तो यह सब खुशहाली की निशानी हैं। इसी तरह जो सड़को की स्कीम हैं जिस वक्त पूरी हो जायेंगी उस से भी किसानों में और ज्यादा खुशहाली आएगी और वह अराम से अपना अनाज मण्डियों में पंहुचा सकेंगे और आने जाने में हर तरह का सुख मिलेगा। इस से साफ जाहिर हैं कि हरियाणा सरकार ने जनता के लिये तरक्की का बहुत ज्यादा काम किया हैं और अगर मैं यह कहूं कि देश में हम दूसरी स्टेंटों की निस्बत आगे हैं तो यह कोई गलत बात नहीं होगी।

इसके बाद मैं आप के द्वारा अपनी सरकार से प्रार्थना करना चाहती हूं कि जैंसे हमारी सरकार ने स्कूल बहुत से खोल कर शिक्षा की सुविधा दी हैं, गांव–गांव को सड़क के साथ जोड़ने की स्कीम हैं और 26 जनवरी, 1973 तक हर गांव सड़क से मिल जाएगा उसी तरीके से मैं यह चाहती हूं कि अस्पतालों और पशुओं के अस्पतालों का प्रोग्राम चलाने की जरूरत हैं। मैं निवेदन

करना चाहती हूं कि बहुत से गांव ऐसे हैं, मेरे हल्के में , जहां कि पशुओं का इलाज का कोई प्रबंध नहीं हैं। इंदरी और कुन्जपुर को छोड़कर कर मेरे हल्के में दो सौ पचास गांव और हैं। वहां किसी भी गांव में डिसपैंसरी तक नहीं हैं, इसलिये मैं प्रार्थना करूगी कि वहां पर पांच–पांच या दस–दस गांवों का केद्र बनाकर पशुओं के इलाज के लिये अस्पताल खोले जाने चाहिए ताकि लोग जब जरूरत पड़े अपने पशुओं का इलाज कर सकें। इसके साथ ही साथ हैल्थ की स्कीम पहले से कुछ बढ़ी हैं लेकिन वह काफी नही हैं, अभी इसको और बढ़ाने की जरूरत हैं। इस सम्बन्ध में सरकार ने पहले जितना प्रबन्ध किया हैं उससे पूरा काम नहीं चल पाता। इसलिये मैं आप के जरिये अपनी सरकार से निवेदन करना चाहती हूं कि वे चाहे केन्द्रीय सरकार से सहायता ले या किसी और ढंग से इन्तजाम करें हमारे इलाके में हस्पतालों का और पशुंओ के हस्पतालों के खोलने का जल्दी से जल्दी इन्तजाम करें।

श्री अध्यक्ष : बहज जी आप दो मिनट और बोल ले।

श्रीमति प्रसन्न देवी : स्पीकर साहब, मेरा इलाका ऐसा हैं जिस में हर साल जमुना नदी से बाढ़ आ जाती हैं। पिछले साल मेरे हल्के में 50 के करीब गांव बाढ़–ग्रस्त हो गए थे और कई गांवो की सौ सौ एकड़ के करीब जमीन भी बह गई थी। इसमें कोई शक नहीं कि हमारी सरकार काफी तेजी के साथ काम करने लग रही हैं लेकिन फिर भी मैं प्रार्थना करना चाहती हूं कि बारिश का सीजन आने में तीन महीना बाकी रह गए है उस से

पहले बाढ़ से बचाने के लिए जो काम हो रहा हैं उस को पूरा किया जाना चाहिए। इस वक्त जो लोग जमुना किनारे बस रहे हैं वे बेचारे अभी से ही डर महसूस कर रहे हैं कि कहीं पिछले साल की तरह उनका फिर से बाढ़ आने से नुक्सान न हो जाए। इसलिये मैं चाहती हूं कि 30 जून तक जहां पर पहले बाढ़ से नुकसान हुआ था उस इलाके को बाढद्य से बचाने के लिये जो काम होना हैं वह पूरा कर दिया जाए।

इसके इलावा बेकारी को दूर करने के लिए हरियाणा सरकार ने दूसरे राज्यों के मुकाबले में काफी अच्छे कदम उठाए हैं। खास तौर पर हरिजनों और दूसरे पिछड़े हुए वर्ग के लोगों को मौजूदा सरकार के टाईम में अपने हक हकूक मिले हैं लेकिन उस के बावजूद भी मैं प्रार्थना करूंगी कि जितनी भी स्कीमें और चालू हो सके, छोटे धन्धों के लिये, छोटी इन्डस्ट्रीज के लिये वह चालू की जाये ताकि जो गरीब लोग हैं जिने पास गुजारे के लिए जमीन नहीं हैं उनको रोजगार मिल सके। जैसे सरकार ने सड़कों का काम शुरू किया हैं उससे काफी लोगों को रोजगार मिला हैं, इसी तरह से और भी अगर विकास की स्कीमें चलती रहेगी तो कम से कम गरीब आदमियों को अपना पेट पालने के लिए रोटी मिलती रहेगी। और साथ ही साथ सूबे की तरक्की भी होती रहेगी। पीने के पानी के लिए हमारी सरकार ने काफी कदम उठाए हैं, इस में कोई शक की बात नहीं कि हमारे हरियाणा में बहुत सा ऐसा इलाका था जहां पर बहुत गहरा खोदने पर भी पानी नहीं

मिलता था और कुछ इलाका ऐसा था जहां तीन–तीन सौ फुट खोदकर पानी निकलना पड़ता था और वह भी कई बार खारा निकल पड़ता था। लेकिन हमारी सरकार ने पीने के पानी का इन्तजाम करने के लिए बहुत तेजी के साथ कदम उठाए हैं। करनाल के जिले कैथल का इलाका हैं वहां सिचाई के लिये ट्यूबवैल कामयाब नहीं हो सके, इसलिए पीने के पानी की समस्या अभी पूरी हल नही हुई। हमारी सरकार को चाहिए कि पीने के पानी के साधनों के लिए और तेजी से कदम उठाए। गवर्नर साहब, के अभिभाषण में देखते हुए महसूस होता हैं कि हमारा हरियाणा जिसने पिछले चार सालों में हरियाणा को दूसरे सूबों के मुकाबले में नम्बर एक पर खड़ा कर दिया हैं और इसके साथ ही साथ गवर्नर साहब का भी धन्यवाद करती हूं जिन्होंनें ऐसा अच्छा अभिभाषण दिया जिसको देखकर महसूस होता हैं कि हमारा हरियाणा और तेजी के साथ तरक्की करेगा।

चौधरी अब्दूर रजाक खां (फिरोजपुर झिरका) : मोहतरिम स्पीकर साहब, गवर्नर साहब के ऐड्रैस में पहला जिक्र इलैक्शन के बारे में किया गया। मैं समझता हूं कि गुजरी बात को ज्यादा तफसील के साथ कहने से वक्त जाया करने के इलावा और कुछ हासिल नहीं होता। इस के बारे में बहुत कुछ कहा जा चुका हैं कि कैसे इलैक्शन हुए, किस को फायदा पहुंचा, किस को शिकायतें हैं, मैं इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहता। मैं जनाब स्पीकर साहब आप की मारफत हाउस से एक ही बात कहूंगा कि

जो कुछ पहले हो गया वह तो वक्त निकल गया लेकिन जब इलैक्शन हो जाने के बाद जो कुछ आगे हो रहा हैं उस चीज को रोकने का इन्तजाम होनी चाहिए। इस वक्त यह चीज हो रही हैं कि जिन लोगों ने दबाव में आकर कांग्रेस को वोट देने से इन्कार किया था और अपनी जमीर को सामने रखते हुए वोट दिये थे उनको अफसर लोग तंग कर रहे हैं कि तुमने हमारे कहने के मुताबिक वोट क्यों नहीं दिये थे। अब इलैक्शन गजट भी हो चुके हैं, और सरकार भी बन चुकी हैं तो यह चीज नहीं होनी चाहिए कि अफसर लोगों से बदला ले कि तुमने हमारी मर्जी के मुताबिक और अपनी खुद की मर्जी के खिलाफ वोट क्यों नही दिये थे। जब हिन्दुस्तान में आईन के मुताबिक लोगों को यह हक हैं कि वे जिस को ठीक समझें अपनी राय दें तो फिर उनके ऊपर इस तरह का जो अब दबाव डाला जा रहा हैं और तंग किया जा रहा हैं वह मुनासिब बात नहीं है। मैं किसी खास अफसर के खिलाफ या किसी और शख्स के खिलाफ शिकायत नहीं करता, महज इतनी ही गुजारिश करूंगा कि सरकार एक सरकूलर करके सब अफसरान को भेज दें कि वे किसी को इस बहाने पर अब तंग न करे। इस के इलावा सब वुजरा साहिबान और मैबर साहिबान पब्लिक मीटिगज में जा कर ऐलान करें कि किसी को इस बात की बिना पर तंग नहीं किया जाएगा कि उस ने अपनी मर्जी अपने चयास के कैडीडेट को वोट क्यों नहीं दिया हैं। इस वक्त जनाब स्पीकर साहब हालत यह हो रही हैं कि अगर कोई पब्लिक डाक्यूमैंट तसदीक कराने के लिए किसी अफसर के पास जाता हैं तो वे

उसको फेक देते हैं। यह निहायत शर्म की बात है। स्पीकर साहब, आप सरकार को कहें कि वह अपने अफसरान को चेक करे कि वे लोगों के साथ इस तरह का सलूक न करें। हरियाणा में इलैक्शनज जिन खुशगवार हालत में हुए उसके लिये जहां सरकार के सर पर सेहरा हैं वहां जनता भी मुबारिकबाद की मुस्ताहिक हैं। जनता ने समझदार ढंग से अपनी राय को इस्तेमाल किया हैं और जनता की दानशमंदी से राय का इस्तेमाल होने के बाद उनके भेजें हुए हम सब यह बैठे हैं। जनता की दानशमंदी से राय का इस्तेमाल होने के बाद उनके भेजे हुए हम सब यहां बैठे हैं। जनता की बनाई हुई सरकार और मैंबरान को यह बात नहीं भूल जानी चाहिए कि यह राय उन्होंनें दी हैं, वह उनके पास जनता की अमानत है और अगर हमने उस अमानत को ठीक ढंग से इस्तेमाल न किया तो वह इसे वापस भी ले सकती हैं। अब भी आप देखते हैं कि बहुत से लोगों को यहां आने का मौका नहीं मिला हैं ओर दो तीन महीने पहले जो चेहरे यहां नजर आते थे अब नहीं आ सके हैं । मैं अर्ज करता हूं :

''जिंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर

बादशाही कीरूत रोज आती नहीं।'

जनता ने बादशाही का ताज इन बैठे हुए मैंबरान के सर पर रखा हैं और जनता आप से तवक्कुह रखती हैं कि उनको इन्साफ मिलेगा लेकिन मैं दावे के साथस कह सकता हूं कि सारी

जनता को इन्साफ मिला नहीं हैं। अगर सारी स्टेट में जनता को मसावी इन्साफ मिला होता और हर जगह डिवैल्पमैंट के काम किये होते तो जैसे चौधरी साहब अपने हल्का में नहीं गये वहां तकरीर तक नहीं की और जीत गये उसी तरह से दूसरे कांग्रेसी टिकट होल्डर्ज भी अपने हल्कों में न जाते और जीत कर आते। ठीक हैं कुछ मैंबर तो डिवैल्पमैंट के कामों की कामयाबी की वजह से जीत कर आये हैं लेकिन सार इस वजह से नहीं आये। कईयो ने बड़ी–बड़ी परेशानियां बरदाश्त की हैं लोगों के आगे बहुत हाथ पांव जोड़े हैं तब जाकर बहुत माइनर मैजारिटी से जीत कर आये है। कुछ ऐसे हैं जो 10/10 हजार की मैजारिटी से आये होंगें लेकिन बाकी बड़ी मामूली मैजारिटी से आये हैं। तो मैं हाउस के सारे मैंबरान से अपील करूंगा और उनको मश्वरा दूगां कि वह जनता के साथ इन्साफ करें और यकसां सलूक करें क्योंकि जनता आज कल बहुत परेशान हैं आप उन की सुनवाई करे। मैं अर्ज करना चाहता हूं कि हकूमत के साथ कुछ रहने से जनता की परेशानियां नजर नहीं आती थी आप आपोजीशन में आकर देखें उनको सब कुछ नजर आ जायेगा कि रिश्वत ली जाती हैं। चौधरी साहब को और सारे मैंबर साहिबान को जनता का सेवा का मौका मिला हैं और हमने यहां बड़े होकर हलफ लिया कि हम जनता को इन्साफ देंगे। अगर सबको इन्साफ मिलता होता तो क्या वजह हैं कि रोजाना स्ट्राइक होती हैं और दूसरे झगड़े होते हैं ? इसकी वजह यह हैं कि इन्साफ नहीं मिलता हैं, किसी को पूरी तनखाह नहीं मिलती, किसी को अलाउंस नहीं मिलते हैं और किसी और

को कुछ है। कुछ मैंबर साहिबान की तरफ से कहा जाता हैं कि सरकार को इन बातों की इत्तलाह नहीं दी जाती हैं। मैं कहता हूं कि कौन कहता हैं कि इत्तलाह नहीं दी जाती हैं ? दी जाती हैं आवाज उठाई जाती हैं लेकिन सरकार को कुछ कामों से फुरसत नहीं हैं और कुछ कामों से ज्यादा दिलचस्पी हैं। मैं अर्ज करता हूं कि सरकार को जनता की तरफ से ताकत मिली हैं जनता के मुफाद के लिये सही इस्तेमाल किये जाये जनता के मन को प्यार से जीता जाये और ऐसे हालत सारे सूबा में पैदा किया जायें कि जिस तरह लीडर आफ दी हाउस अपने हल्का में गये बगैर जीत कर आ गये दूसरे मैंम्बरान को भी अपने हल्को में जाना न पड़े और जनता काम देख कर ही अपनी राय दे दे। आप लोगों की दुआ ले ओर उनकी बददूआ का शिकार न हों। हम देखते हैं कि कुछ लोग ऐसे यहां मौजूद थे जिनके नाम सेरूह कांपती थी लेकिन आज उनकी यहां शक्ल नजर नहीं आती। (इस समय सभापतियों के सूची में से एक सदस्य प्रिसींपल ईश्वर सिंह पदासीन हुए) चैयरमैन साहब, मैं एक बात की तरफ और जो अब हाल में ही हो रही हैं ध्यान दिलाना चाहता हूं और उसकी वजह से 90/95 फीसदी किसान लोग तकलीफ में हैं। किसान खेती के काम से फारग होकर इन दिनों शादियों के काम निपटाते हैं और शादियों के लिये चीनी की जरूरत पड़ती है। लेकिन यह काबिले अफसोस बात हैं कि सरकार ने फैसला कर दिया हैं कि शादियों के लिये चीनी का कोटा नहीं मिलेगा। जिस जनता ने वोट देकर इनकी सरकान बनाई हैं उसी के खिलाफ यह फैसला करते हैं कि

शादियों के लिये उनको चीनी नहीं मिलेगी और यह उनको ओपन मार्किट में ब्लैक की चीनी खरीदने पर मजबूर कर रहे हैं। यह सरकार ऐसा करके बड़े–बड़े लोगों और मिल ओनर्ज के घर भरना चाहती हैं और जनता को लुटवाना चाहती हैं। इसका बदला तो अब अगले इलैक्शन में ही लिया जा सकता हैं क्योंकि अब तो यह गद्दी पर बैठ ही गये हैं। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि वह जनता की आवाज सुने और शादियों के लिये फाराखदिली से चीनी का कोटा दे और दूसरा जो 750 ग्राम पर–हैड का कोटा हैं उसे चाहे कम कर दे और अगर बंद करना पड़ तो बंद कर दे लेकिन शादियों के लिये चीनी का कोटा फराखदिली से दिया जाए क्योंकि हमारे इलाके के लोग गरीब और ब्लैक में चीनी खरीद कर शादियों नहीं कर सकते।

एक बात मैं महकमा जरायत के बारे में अर्ज करना चाहता हूं कि इसमें निहायत सुस्त रफतारी से काम चलता हैं। हमारे यहां सबसे बड़ी कैश क्राप सरसों की फसल हैं और खास तौर पर गुड़गांव जिला का दरोमदार सरसों की फसल के होने पर हैं। लेकिन इस दफा उसे बीमारी लग गई और हम ने बहुत शोर मचाया कि उसे बचाया जाए लेकिन कई मौके पर सुनवाई नहीं हुई। जब हम कह–कह कर थक लिये तो बाद में उस वक्त हैलीकाप्टर दवाई छिड़कने के लिये भेजा गया जब बीमारी सरसों को खा गई। इस वजह से जहां 20/25 मन सरसों एकड़ की होती थी वहां अब 10/12 किलोग्राम निकली। मैं कहना चाहता हूं

कि हरियाणा के किसान को इसमें कोई 10 करोड़रूपये का घाटा पड़ा हैं। इसके इलावा मण्डियों में जो लोग काम करते हैं उनका काम मारा गया और उनका लेन देन खत्म हो गया। इसके इलावा बहुत से लोगोंने शादियां करनी थी वह उनको मुल्तवी करनी पड़ेगी और जिन्होनें पक्के मकान बनाने थे वह मुल्तवी करने पड़गें और जिन्होंनें पक्के मकान बनाने थे वह मुल्तवी करने पड़ेगें (घंटी) आप तो चेयरमैन साहब बड़े फाराखदिल हैं जरा और टाईम दें दे।

श्री सभापति : आपका समय हो गया हैं अब दूसरों को भी बोलना हैं। आप एक मिनट मे खत्म कर दें।

चौधरी अब्दुर रजाक खां : मुझे दो तीन मिनट दे दें मैं मोटी–मोटी बातें ही करता हूं। हमारे होडल, पलवन और हथीन में जो अगरा कैनालज आती हैं वह यू0 पी0 सरकार के जेर कबजा हैं और जो बहने का रास्ता हैं वह मिट्टी से पूर हो रहा हैं। पानी टेल तक तो क्या पहुंचना हैं हथीन तक भी नहीं पहुचता हैं और लोगों को मुफ्त हरियाणा को आब्याना देना पड़ता हैं। पानी तो मिलता नहीं लेकिन आब्याना देना पड़ता हैं यह तो बहुत बेइन्साफी की बात हैं। फिर आप देंखें यू0 पी0 के मुकाबले में हरियाणा में आब्याना भी दुगना लिया जाता हैं। मेरी गुजारिश हैं कि इन नहरों को यू0 पी0 से अपनी तहवील में लेकर सिल्ट आउट करके लोगों को आबपाशी के लिये पानी दिया जाये और यह जो पानी भी नहीं दिया जाता और आब्याना भी दुगना लिया जाता हैं

इसकी तरह ध्यान दिया जाये। यू0 पी0 सरकार ने हरियाणा बोर्डर के साथ–साथ एक बांध तामीर किया हैं। पिछली दफा मैं हाउस में इस बात का जिक्र कर चुका हूं लेकिन सरकार की तरफ से इस तरफ तवज्जुह नहीं दी गई। उस बांध मे न रेगुलेटर हैं, न साईफन हैं और न पानी निकलने का कोई नैचुरल रास्ता हैं। इस बांध के बन जाने कसे समाना, होडल, हाथीन, पलवल वगैरा ब्लाक इफैक्ट होंगे। इस पानी को रोका जाना चाहिए। गुलाटी साहब ने कहा पानी–पानी कर देंगे.....(व्यवधान).....ऐसा पानी की हमें जरूरत नहीं हैं जो बरबाद करें.....(व्यवधान)..... .....

श्री सभापति : आपका टाईम हो गया हैं, आप बैठ जांए।

चौधरी अब्दुर रजाक खां : थोड़ा सा टाईम दे दें। सरकार इसके बारे में जानकारी हासिल करके लोगों को फ्लड से बचाए। इसके इलावा मेरे इलाके में दो तीन गांव, तहसील फिरोजपुर झिरका, रायसीना, तहसील गुड़गांव ऐसे गांव हैं जो पोलिटिकल सफरर के हैं। इन गांवों के नौजवानों ने मुल्क की हिफाजत के लिये कुर्बानियां हर तरह के जुलमोतशद्द देश के लिए सहे, इनको कम्पेन्सेट करना चाहिए। पोलिटिकल सफरर के बारे में तफसीी से पिछले सैशन में कह चुका हूं। आज मैं इतना ही अर्ज करना चाहता हूं कि ऐसे लोगों को कम्पन्सेट किया जाए। इनको कब तक महरूम किया गया। सरकार इस तरफ तवज्जुह दें,

किसी के साथ इस तरह का डिस्क्रिमीनेशन नहीं होना चाहिए। (घंटी)

श्री सभापति : आपका टाईम हो गया

चौधरी अब्दुर रजाक खां : थोड़ा सा हरिजनों के बारे में अर्ज करना चाहता हूं। हरिजनों के लिए बजट में जोरूपया रखा गया हैं वह पूरे खर्च नहीं किया गया लोगों को झूठ नारे दे कर बहकाया जाता हैं। इसके इलावा मैं एक और अर्ज कर दूं कि नैशनल सेविंग स्कीम के तहत जनता को धोखा दिया जाता हैं। लोगों केा बहकाकर पैसा वसूल किया जाता हैं और कहा जाता हैं कि पैसा दे दो, बाद में ले लेना। इस तरह अगर पैसा दो गे तो आप भी खुश, सरकार भी खुश। इस तरह नैशनल सेविंग के नाम पर लोगों से पैसा ले कर, पांच–पांच, सात–सातरूपया वसूल करके बाकीरूपया लोगों को वापिस कर दिया जाता हैं। यह जनता के साथ धोखा हैं.....(घंटी)

श्री सभापति : आप बैठ जाइए।

चौधरी अब्दुर रजाक खां : सिर्फ एक मिनट और.....

श्री सभापति : आप बैठ जाइए आपका टाईम हो गया हैं। (शोर)

चौधरी अब्दुर रजाक खां : थोड़ी सी अर्ज हैं..... (व्यवधान)। हरियाणा सरकार को बार–बार कहने के बावजूद भी

मुहर्रम, इदूउलजुहा, इदूलफितर की छुट्टियां नहीं की। हिमाचल, पंजाब और दिल्ली ने इनकी छुट्टियां कर दी हैं हालाकिं इन सब स्टेटों की निस्बत हरियाणा में मुसलमान ज्यादा हैं और हरियाणा में साढ़े सात परसैंट आबादी मुसलमानों की हैं। इसलिये मेरी दरखास्त हैं कि इन त्यौहारों की छुट्टियां होनी चाहिए।

श्री अमर सिंह (बवानी खेड़ा–अनुसूचित जाति) : आदरणीय चेयरमैन साहब, सदन में गवर्नर साहब के ऐड्रैस पर बहस चल रही हैं। मुझे आपके द्वारा निहायत अफसोस के साथ कहना पड़ता हैं कि गवर्नर साहब ने अपने ऐड्रैस में सारी बातों का जिक्र किया हैं लेकिन हरिजन और बैकवर्ड क्लासिज के बारे में कोई जिक्र नहीं किया। सूबे की आबादी 80 लाख हैं जिस में से 25 लाख आबादी हरिजनों की हैं और तीन चार लाख बैकवर्ड क्लासिज की हैं। तकरीबन 28–29 लाख आबादी की बाबत गवर्नर साहब के ऐड्रैस में कोई जिक्र नहीं हैं। सरकार इनको डाउन टरोडन ही रखना चाहती हैं जबकि दूसरी तरफ देश में समाजवाद लाना चाहती हैं। मैं समझता हूं कि गवर्नर साहब का ऐड्रैस हरियाणा सरकार का एक चित्र हैं जो बजट सैशन के दौरान यहां पर पढ़ कर सुनाया गया हैं। उसी के हिसाब से सरकार अमलीजामा पहनाती हैं। एक तरफ सरकार समाजवाद का नारा लगाती हैं कि गरीबों की भलाई करो, गरीबी हटाओ और दूसरी तरफ छः पेज के इस गवर्नर के ऐड्रैस में हरिजनों और बैकवर्ड क्लासिज के हित में एक वर्ड भी नही ंकहा। जो ऐड्रैस हाउस में

पढ़ा गया उससे साफ जाहिर होता हैं कि सरकार समाजवाद लायेगी या गरीबी हटायेगी लेकिन मैं समझता हूं कि वह लोगों को बिल्कूल बहका रही हैं, समाजवाद लाना, गरीबी हटाना इनके वश से बाहर की बात हैं। इस बात पर कतन यकीन नहीं किया जा सकता कि गरीबी हट जायेगी क्योकि 25 लाख की आबादी हरिजन और चार लाख बैकवर्ड क्लासिज को इसमें शामिल नहीं किया गया हैं। तकरीबन 28–29 लाख की आबादी की बाबत एक लफ्ज भी सरकार के इस चित्र में नहीं आया। हमें शक हैं कि इसके इम्पलीमैटेशन में सरकार सिर्फ नारेबाजी से ही काम लेना चाहती हैं। इस सम्बन्ध में मैं दो बातें आपकी सेवा में पेश करना चाहता हूं जो हरिजन बैलफेयर की बाबत हैं। ट्रेजरी बैचिंज की तरफ किसी भी आनरेबल मैम्बर ने, कल से हो रही बहस के दौरान शायद ही किसी हरिजन प्रौब्लम को टच किया हो। मैं आपके जरिए हाउस को इतना बताना चाहता हूं कि हरिजनों को बड़ी क्रिटिकल पोजीशन हैं। वैसे भी ट्रेजरी बैचिंज पर बैठने वाले साथी इस बात का अहसास करेंगे कि 15 अगस्त, 1947 से, जबकि हिन्दोस्तान अजाद हुआ था, हरिजनों को कांग्रेस के साथ जुड़ा हुआ समझा जाता था। इसके बाद जब 1952 में पहला जनरल इलैक्शन हुआ तो हरिजनों की एक भी पर्ची कांग्रेस के दायरे से बाहर नहीं गई, चाहे उन पर कितने ही जुल्म क्यों न हुए हो, सारी की सारी पर्चिया कांग्रेस के ढोल में पड़ती थी । उसके बाद चेयरमैन साहब, 1972 के इलैक्शन से साफ जाहिर हो गया हैं कि हरिजन कांग्रेस से नफरत करने लगे हैं। इस बात से कोई डिनाई

नहीं कर सकता कि दो और दो चार होते हैं। मित्तल साहब भी इसी बात को मानेंगे कि हरियाणा में 15 हरिजन कैंडीडेट्स ने इलैक्शन लड़ा हैं जिनको कांग्रेस ने टिकट दिये हुए थे। पन्द्रह में से 8 अपोजीशन की तरफ बैठे हैं और 7 ट्रैंजरी बैंचिज की तरफ हैं। दोनों हरिजन मिनिस्टर भी हारे हैं। आप अन्दाजा लगाएं कि इस समाजवादी सरकार के खिलाफ हरिजनों के विचार किस रफ्तार से बढ़ रहे हैं। इस तबदीली का एक बहुत बड़ा कारण हैं और वह यह हैं कि हरिजनों की आर्थिक हालत। हरिजनों की आर्थिक हालत सुधारने की वजह नारेबाजी करना ही सरकार का काम रह गया हैं। हरिजन कल्याण निगम की बाबत पैम्फ्लेट बांटे जाते हैं। हरिजनों की बेहतरी के लिए कुछ नहीं होता हैं। सूबेदार साहब इस निगम के इन्चार्ज थे इस लिए इनका नाम हरिजनों की बेहतरी के लिए कुछ नहीं होता। सूबेदार साहब इस निगम के इन्चार्ज थे इसलिए इनका नाम हरिजन कल्याण निगम की बजाये सूबेदार कल्याण निगम रखना चाहिए क्योंकि उन्होनें अपनी मर्जी से पैसा बांटा, गरीबों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, अपनी मनमानी की। सूबेदार कल्याण निगम ही इसका बेहतर नाम होना चाहिए था। जिस ढंग से पैसा बांटना चाहिए था उस ढंग से बांटा नही गया, जरूरतमन्दों को इग्नोर करके गैर–जरूरतमन्दों को पैसा बांटा गया। यहां तक कि हरिजन कल्याण निगम के तहत हरिजनों को जो लोन मिलता हैं उसके फार्म चण्डीगढ़ में 30–30 रूपये में बेचे गए और पन्द्रह हजार करीब फार्म हिसार डिस्ट्रिक्ट से हरिजन कल्याण निगम में लोन के लिए आए। फिर इलैक्शन से दस दिन

पहले, हरिजन कल्याण निगम ने, उन्हीं फार्मों पर औब्जैक्शन लगाकर वापिस भेज दिया। जो फार्म दो–दो साल से निगम के पास पड़े थे उन पर औब्जैक्शन लगाया कि उनकी अटैस्टेशन किसी गजेटिड अफसर से होनी चाहिए। इस तरह लोगो को कर्जा देने के लालच में बहका कर महज डीमारेलाइज किया जाता हैं। उनको महसूस करवाया जाता हैं कि सरकार आपको कर्जा देगी इसलिए कांग्रेस को पर्ची डालनी चाहिए, इस तरह से उनको गुमराह किया जाता हैं। यह हाल हैं समाजवाद लाने वाली सरकार का। इसके इलावा जितनारूपये पिछले साल बजट में प्रोवाइड हुआ था उस में से सिर्फ 34 लाखरूपया खर्चा किया गया और 31 मार्च, 1972 को बाकीरूपया 56 लाख वापिस कर दिया गया। मैं समझता हूं कि हैड आफ दी डिस्ट्रिक्ट ने, या जो भी जिम्मेदार हैं अफसर हैं उसने यह पैसा वापिस किया हैं। चेयरमैन साहब, मैं आपके द्वारा सरकार से मांग करता हूं कि उस अफसर को जिसने हरिजनों की हालत सुधारने के लिए पैसा खर्च करना था, ना़–अहलियतका सर्टिफिकेअ दें और वह माने कि वह ना–अहल अफसर हैं, क्योंकि वह सारा पैसा खर्च नहीं किया गया ? इसके अलावा मैं एक बात और अर्ज करता हूं कि जिस तरह पंजाब के अन्दर एक इवैल्यूशन कमेटी बनाई गई थी और सारे हालात की जांच पड़ताल की गई थी उसी तरह की कमेटी बनाकर यहां पर सारे हालात की जांच पड़ताल की गई थी उसी तरह की कमेटी बना कर यहां पर सारे हालत की जांच पड़ताल करवाई जाए। आज हरिजन की हालत बद से बदतरीन हो रही हैं इसके अन्दर

डीमारेलाइजेशन हैं, फ्रस्ट्रेशन हैं जिसका कारण हैं कि एक तरफ तो ये जमीन का नारा देते हैं कि हरिजन को जमीन देगें, गरीबी हटायेगें लेकिन दूसरी तरफ उस नारे से हमें नुकसान हो रहा हैं। एक तकलीफ तो यह हैं कि जितने भी हमारे औफिसर्ज सर्विसिज में हैं उनको विक्टेमाइज किया जा रहा हैं। '' हरियाणा अचीवमैंट 68–71'' में एक लाईन दी हुई हैं। इसके अन्दर जहां वैलफेयर आफ शड्यूल्ड कास्टस एंड वैकवर्ड क्लासिज का जिक्र हैं वहां धारा 13 के तहत पार्ट (बी) में यह लिखा हुआ हैं:–

"(b) Reservation in promotions besides direct rectuitment has been provided for in class III and class IV services on the basis of seniority cum merit."

जब ये लाईने इस पैम्फलेट के अन्दर इम्मीजिएट बौसिज ने हरिजन एम्प्लाइज के बाबत पढ़ी तो करैक्टर रोल्ज जहां तक पहले काली स्याही या नीली स्याही से लिखे गए थे वहां लाल पैन से लिखें गए और मेरे पास इस बात के सबूत है कि इन लाइनों की वजह से इतना हमारे औफिसर्ज को विक्टमाईज किया जा रहा हैं जिसकी कोई इन्तहा नहीं हैं। हमारे पास वाले पड़ौसी स्टेट पंजाब में तीन डिप्टी कमिश्नर्ज और चार पुलिय कप्तान शड्यूल्ड कास्टस हैं और हरियाणा के अन्दर जो भी फील्ड में आई0 पी0 एस0 पुलिस कप्तान हैं, आई0 ए0 एस0 डिप्टी कमीश्नर्ज हैं उन्हें one after the other किनारे लगा रहे हैं, किसी को कहीं भेज रखा हैं और किसी को कहीं। यह हमारी समाजवादी सरकार का हमारे साथ प्यार हैं।

इसके अलावा पिछले दिनों में हमारे जो हरिजन मिनिस्टर रहे, मैं उनका एक चित्र आपको बताना चाहता हूं और वह यह हैं कि उन्होंनें इन्टरसी अनटचेबिलिटी पैदा की । अभी हाउस में बताया गया कि सरकार ने हरिजनों को 2 लाखरूपया पिछले साल चौपालें बनाने के लिए देना था। बहुत अच्छी बात हैं कि हरिजनों को इस तरह से पैसा दिया जाना चाहिए क्योकि उनके छोटे–छोटे मकान होते हैं जहां सभी लोग इकट्ठे नहीं हो सकते। आबादी बढ़ाने में भी हरिजन सबसे आगे चलते हैं। इतने कंपैल्ड स्टरलाईजेशन कराए गए लेकिन फिर भी हरिजन आबादी बढ़ाने में आगे चलते हैं। इसलिए 70–71 में दो लाखरूपया हरिजनों की चौपालों के लिए दिया गया लेकिन मेरे पास सबूत हैं जिनके मुताबिक मिनिस्टर महोदय ने सिर्फ अपने ही रिश्तेदारो और बिरादरी के लोगों को महज घर बनाने के लिए पैसे दिये। जहां सारे हरिजन मिलकर पैसे मागें किसी काम को करने के लिए उनको पैसे नहीं दिये जाते थें और अगर अपनी बिरादरी का आदमी या नियरैस्ट पैसे की मांग करे तो उसको पैसे दिए जाते थे। इस तरह की हालात सूबेदार साहब ने पैदा कर दी थी, जिस की वजह से हरिजन उनसे दुःखी थे। वैसे तो जनता ने उनकी छांटी कर दी हैं लेकिन चेयरमैन साहब...(घंटी)

चेयरमैन साहब, आपने घंटी तो बजा दी लेकिन मेरा निवेदन हैं कि विशाल हरियाणा पार्टी की तरफ से सिर्फ एक मैम्बर बोला हैं और उस आनरबेल मैम्बर ने भी सिर्फ पांच सात मिनट ही

लिए थे इसलिए मैं चाहूंगा कि कम से कम पन्द्रह मिनट मुझे और दिए जाएं। चेयरमैंन साहब, हरियाणा में आज हालात ऐसे हैं:–

न तड़पने की इजाजत हैं, न फरियाद की हैं

दम–घुट कर मर जाऊं, यह मर्जी मेरे सैयाद को हैं।

चेयरमैन साहब, कल मैं देख रहा था कि मित्तल साहब जब थैक्स का प्रस्ताव पेश करेंगे तो सही सही बातें अवश्य कहेंगे मगर इन्होंनें ऐड्रैस की बड़ी तारीफ की। हमें तो यह बात देख कर बड़ा दुख हुआ। मित्तल साहब पैप्सू में स्पीकर भी रहे हैं और हमारे वक्त में 62–63 में मिनिस्टर भी रहे हैं लेकिन वक्त का तकाजा हैं और जिन बातों को कहने के लिए इनका मन भी नहीं था उनको भी मोशन आफ थेकन्स का प्रस्ताव पेश करते हुए ये कह रहे थे। आज दौलता साहब और अपने ही कुछ दूसरे हाउस में हाजिर नहीं हैं लेकिन मैं उनकी तरफ इशारा करके कहता हूं:–

इस सादगी पर कौन न मर जाए ए खुदा,

काटते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।

हमारे साथी जो हैं वे अपने आप कहते हैं कि हम बीच बिचोले के हैं। लेकिन हम तो, चेयरमैन साहब, डट करके विरोध में रहेगें। सरकार ने हमारी बेहद मुखालिफत की हैं। इलैक्शन में सिर्फ कांग्रेस पार्टी ने ही हमारी मुखालिफत नहीं की हैं बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि सूबेदार प्रभू सिंह जी, जो मेरे खिलाफ

उम्मीदवार थे वे पंचायत मिनिस्टर थे और उन्होंनें बी0 डी0 ओज0 और पंचायत औफिसर्ज को महज वोट लेने के लिए गांव–गांव में भेजा।

श्री सभापति : आप उन्हें रेफर न करें, वे अब इस हाउस के मैंम्बर नहीं हैं।

श्री अमर सिंह : वे गांव में वोट लेने के लिए गए लेकिन खैर छोड़ो इस बात को। मैं चेयरमैंन साहब, एक बात और कहना चाहता हूं। इसी पैम्फलैट के अन्दर (हरियाणा अचीवमेन्ट 68–71) जुई नहर की बाबत लिखा हैं the estimated cost of this project is Rs.3.31 crores लेकिन मैं यह कहता हूं सात करोड़रूपये इस जुई कैनाल पर खर्च किए गए हैं। पन्द्रह अगस्त 1970 को इसका उद्घाटन हुआ था लेकिन आज तक सिर्फ साढ़े तीन सौ किल्ले जमीन की इरीगेशन हुई हैं। उसी दौरान में मेरे से पहले वे आनरेबल मिनिस्टर जब उस कांस्टिचुएसी को जिसको अब मैं रिप्रैजेन्ट कर रहा हूं, भगाना ऐक्सटैन्सन माईनर जिसका ऐस्टिमेट 13 लाखरूपये था और जिससे 15 हजार एकड़ क्विटल कनक पैदा होनी थी उसको महज यह कह कर रिजैक्ट किया गया। कि पैसा अगर गांव के लोग लगाना चाहे तो उस माईर की ऐक्सटैन्सन हो जाएगा अदरवाईज माईनर की ऐक्सटैन्शन नहीं होगी। तो, चेयरमैन साहब, मैं आपके द्वारा निर्माण के धन्धो के बारे में , जिनकी बाबत हमारे चीफ मिनिस्टर साहब बहुत ऐकशियस हैं और काम करना चाहते है, उनसे प्रार्थना करना

चाहता हूं कि इस तरह का भेद भाव न रखे और वे भगाना माईनर की ऐक्सटैन्शन के काम की बाबत भी ध्यान दें। इसी तरह के और भी कुछ प्रोजैक्ट्स हैं उनकी तरफ भी ध्यान दें। इसी तरह के और भी कुछ प्रोजैक्ट्स हैं उनकी तरफ भी ध्यान दिया जाना चाहिए। मैंने सन् 68 में इलैक्शन इसी हल्के से लड़ा था परन्तु बदकिस्मती से उस वक्त नहीं आ सका। लेकिन लोगों की जो मांगे हमने उस टाईम सुनीं थी वही आज चार साल के बाद भी सुनने में आई। मीर का माईनर पर हरीकोट से सिगरान जाते वक्त एक पुल बनना हैं जिसके 555रूपये लोगों ने जमा भ करा दिए थे लेकिन वह पुल अभी तक नही बनाया गया। मंगाली सिंगरान रोड़ जिसकी बाबत ये कहते हैं कि 26 जनवरी, 1973 तक कंप्लीट हो जाएगी लेकिन अभी तक उस पर अर्थ–वर्क भी शुरू नहीं हुआ हैं। हिसार और लोहारू रोड कंम्लीट हो जाए तो तकरीबन 53 गांवो को फायदा होगा और 22 मील का डिसटैन्स कम हो जाता हैं। अगर मंगाली वाया हांसी होकर जाएं तो 22 मील ज्यादा पड़ता हैं। पता नहीं 50 मील लम्बी सड़क को बना कर उस दो मील की सड़क को दो साल से क्यों बाकी रखा हैं ? उस सड़क को भी कंप्लीट कर दिया जाए ताकि उस पर बस चल सके। (घंटी) चेयरमैंन साहब, केवल दो मिनट और अर्ज करना चाहता हूं।

श्री सभापति : एक मिनट में आप अपनी स्पीच को वाइंड अप करें।

श्री अमर सिंह : जहां तक लिमिटेशन का सवाल हैं, लैंड सीलिंग का सवाल हैं, मेरा आपके द्वारा सरकार से यह निवेदन हैं कि अर्बन स्टेट औररूरल प्रौपर्टी की लिमिट बराबर होनी चाहिए। यदि शहरी ऐरिया में पांच लाखरूपये की लिमिट आप रखते हैं तोरूरल ऐरिया में भी पांच लाख को ही लिमिट होनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो देहात के लोग रिवोल्ट करेंगें। अगर शहर की लिमिट 70 हजार की हो तो देहात की भी 70 हजार की होनी चाहिए।

(6.00P.M) इसी तरह से जहां तक ऐजुकेशन का सवाल हैं, चेयरमैन साहब, इस देश को उठाने और गिराने वाली तीन चीजें हैं, टीचर, प्लीडर और लीडर। टीचर्ज ने देश की बुनियाद बनानी हैं मगर हरियाणा के अन्दर टीचर्ज को डिमौरेलाइाज किया जा रहा हैं, और टीचर्ज को मजबूर किया जा रहा हैं। वे ट्रांसफर से और दूसरी जो उनकी दिक्कतें हैं उनसे दुःखी हैं । चेयरमैन साहब, मैं आपके जरिये मुख्यमंत्री साहब से यह अर्ज करूंगा क वे उनकी तकलीफ दूर करने के लिए दोबारा विचार करें। जहां पर अन–विलिंगनैस होगी वहां पर रिजल्ट भी रिवर्स ही होगें। टीचर्ज से पूरा सहयोग हासिल करने के लिए उनको दोबारा विचार करना चाहिए ताकि वे बच्चों को अच्छी ऐजुकेशन दे सकें। इसलिए टीचर्ज को अच्छी फैसलिटी और ऐमेनिटीज दी जाये।

श्री सभापति : आपका टाईम हो गया हैं। इसलिए आप अपनी स्पीच समाप्त करें।

श्री अमर सिंह : चेयरमैन साहब, जहां तक हास्पिटल्ज और प्राइमरी हैल्थ सैन्टरज का ताल्लुक हैं उनके विषय में भी थोड़ा अर्ज कर देना चाहता हूं। हमारे यहां जो कैटेल्ज हास्पिटल्ज हैं, या जो डिस्पेंन्सरीज को अपग्रेड किया जाये । बड़सी , साहड़वा , बलयाली वगैरह में भी जनता की भलाई के लिए डिसपेन्सरी खोली जानी चाहिए।

चीफ मिनिस्टर साहब, ने जो पहले तरीका अपनाया था कि म्युनिसिपल कमेटीज और मार्किटिंग को ऐबोलिश करके उनको मैम्बर्ज (M.L.As) चलाते थे। यह कोई अच्छा तरीका नहीं हैं। इस तरह से हम डाईरैक्ट डैमोक्रेसी से इन–डाईरैक्ट डैमोक्रेसी की तरफ जा रहे हैं। मार्किटिंग कमेटीज और म्यूनिसिपल कमेटीज को इंडिपैन्डैन्टली काम करने दें वहां से एम0 एल0 एज0 को विदड्रा करें। जो म्युनिसिपल कमेटीज और मार्किटिंग कमेटीज ससपैन्ड की हुई हैं उनको बहाल करके इलैक्शन कराये जाये। अगर वहां इलैक्शन नहीं कराये जाते हैं तो जम्हूरियत का गला घोटने वाली बात हैं। अगर जम्हूरियत के रास्ते पर नहीं चलेगें तो लोगों में फ्रास्ट्रेशन से ही रैवोल्युशन होता हैं।

श्री सभापति : आपका टाईम हो गया हैं।

श्री अमर सिंह : बहुत अच्छा जी! मैं बैठ जाता हूं।

श्री उमेद सिंह (महम): आदरणीय चेयरमैन साहब, आपकी आज्ञा से मैं राज्यपाल–महोदय के अभिभाषण पर हो रही

चर्चा पर अपने विचार सदन के सम्मुख रखना चाहता हूं। माननीय राज्यपाल महोदय का अभिभाषण संवैधानिक दृष्टि से सरकार की नीति सम्बन्धी वक्तव्य हैं। हरियाणा की जनता ने कांग्रेस सरकार को केवल एक ही उद्देश्य से भेजा हैं कि गरीबी दूर होगी, समाजवाद आयेगा परन्तु आश्चर्य की बात यह हैं कि समाजवाद के विषय में एक शब्द भी राज्यपाल के अभिभाषण में नहीं कहा गया हैं। समाजवाद की पहली सीढ़ी शिक्षा से शुरू होती हैं। शिक्षा के विषय में इस अभिभाषण में एक शब्द नहीं कहा गया हैं। हरियाणा में तरह–तरह के स्कूल हैं। कुछ तो ऐसे स्कूल्ज भी हैं जिनकी व्यवस्था बिल्कुल ठीक नहीं हैं, बच्चे ठीक तरह से पढ़ नही पाते हैं। कुछ स्कूल्ज ऐसे हैं जिनमें अफसरों के या धनी वर्ग के बच्चे पढ़ पाते हैं। वे पब्लिक स्कूल हैं इसलिए चेयरमैन साहब मैं आपके जरिए प्रार्थना करूंगा कि शिक्षा का राष्ट्रीयकरण किया जाना चाहिए। जितने भी पब्लिक स्कूल्ज हैं, या कालेज हैं या जाति–पाति और सम्प्रदाय के नाम पर चलते हैं। उन सब का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाये और हरेक को शिक्षा प्राप्त करने के साधन बराबर के मिलने चाहिएं।

दूसरी बात मैं रोजगार के विषय में अर्ज करूंगा। जो नौजवान शिक्षा पा लेते हैं उनको तो रोजगार मिलना ही चाहिए। परन्तु जिन नवयुवकों को शिक्षा नहीं मिल पायी हैं उसका अधिकार होना चाहिए कि वह अपनी रोटी के लिए कुछ कमा सकें। उनकों भी सरकार की ओर से काम मिलना चाहिए। इस विषय में

सरकार को कोई ठोस कदम से बेरोजगारी खत्म हो सके। आज नौजवान 150 मील से चल कर आते हैं और एम0 एल0 एज0 के पीछे–पीछे फिरते हैं। एम0 एल0 ए0 कितने लड़कों को रोजगार दिला सकता हैं। इस बारे में जब तक सरकार की ओर से कोई योजना नहीं बनेगी तब तक बेकारी दूर नहीं होगी। मैं तो कहूंगा कि राज्य के साधनों का भी दूरूपयोग होता हैं। एम0 एल0 ए0 के पीछे–पीछे घूमने से नौकरी नहीं मिल सकती हैं। बहुत सी परिवहन की बसों को तो हमारे बेरोजगार नवयुवक ही घेरै रहते हैं। हमारे यहां बसों में पैट्रोल और डीजल वैसे ही जलता हैं उसका राष्ट्र की उत्पादन शक्ति में प्रयोग किया जाना चाहिए। जिन व्यक्तियों को बसों से जाना होता हैं उन को बैठने के लिए स्थान नहीं मिलता हैं और नवयुवक ही रोजगार की तलाश में उन बसों में सीटों को घेरे रहते हैं। इस प्रकार राज्य के साधनों का दुरूपयोग होता हैं और साथ ही जनशक्ति का भी दुरूपयोग ही होता हैं। जनता एम0 एल0 एज0 को इसलिए चुनकर भेजती हैं कि वे योजनाओं के सोचने में अपना समय लगायें परन्तु उनका यों ही दफ्तरों के चक्कर काटने में समय नष्ट होता हैं। इसलिये मैं सरकार से अपील करूंगा कि कोई ठोस योजना युद्धस्तर पर बनायी जाये ताकि नौजवानों को रोजगार मिल सके।

हमारे गवर्नर साहब के अभिभाषण में भूमि सूधार के विषय में भी जिक्र किया गया हैं। यह बात भी बड़ी सराहनीय है।

मैं तो यह चाहूंगा कि इसको जल्दी से जल्दी लागू किया जाये और जल्दी ही कोई ऐसा विधेयक लाया जाये।

राज्य को कानून व्यवस्था के बारे में भी जिक्र आया हैं। यह वास्तव में बड़ी प्रंशसनीय बात हैं कि हमारे प्रदेश में आम चुनाव बड़े शान्तिपूर्वक हुए। इसके लिए सरकार बधाई की पात्र हैं। इसलिए इस विषय में भी उल्लेख करना बहुत जरूरी समझता हूं। हमारे मुख्यमंत्री जी ने एक उदाहरण पेश किया हैं। कार्यपालिका के अध्यक्ष होने के नाते से वे अपने हल्के में चुनाव के दौरान नहीं गये और दूसरे उन्होंनें अपना कोई भी एजेन्ट न लगा कर निष्पक्ष चुनाव कराने का उदाहरण पेश किया हैं। यदि सारे ही मिनिस्टर इस प्रकार से करते तो बहुत ही अच्छा होता।

राज्य में आर्थिक क्षेत्र में भी प्रगति करने को और निर्माण कार्य करने को भी योजना हैं। सड़को के निर्माण की भी बड़ी भारी योजना हैं और मैं समझता हूं कि वह ठीक ढंग से ही चल रही हैं परन्तु अभी काफी कुछ सड़को का निर्माण किया जाना बाकी हैं। मैं आपके जरिए यह दरखास्त करना चाहता हूं कि कुछ इलाकों को दूसरे इलाको के साथ जोड़ दिया जाता हैं। जैसा कि मेरे इलाके मेहम का हैं उसको रोहतक वाल इलाके के समान ही ट्रीट किया जाता हैं। कल चौधरी श्याम चन्द जी से मेरी बात हो रही थी वे कह रहे थे कि आपके और मेरे हल्के में क्या फर्क हैं परन्तु मैंने उनको बताया कि मेरे और आपके हल्के में बहुत फर्क हैं। मैंने बताया कि आपके हल्के में 2 फुट पर जमीन में पानी मिल

जाता हैं परन्तु मेरे हल्के में 70 फुट से लेकर 100 फुट तक गहराई पर पानी मिलता हैं। स्पीकर साहब के हल्के में भी 30 फुट पर पानी होगा परन्तु मेरे हल्के में बहुत नीचे पानी मिलता हैं। इसका कारण से मेरे हल्के में पीने के पानी की बड़ी दिक्कत हैं। इसलिए मेरे हल्के को भी भिवानी क्षेत्र की तरह सूखाग्रस्त इलाका ट्रीट किया जाना चाहिए।

बिजली हरियाणा वास्तव में सब प्रान्तों से आगे हैं परन्तु बिजली जितनी गरीब लोगों को मिलनी चाहिए उतनी नहीं मिल रही हैं। बिजली का सामान इतना मंहगा हैं कि गरीब आदमी खरीद नहीं सकता हैं। उसको बिजली लगवाने में बड़ी मुश्किल मुहैया किया जाये, सरकार की ओर से गरीब आदमियों की मदद की जाए और ऐसा प्रबन्ध किया जाये ताकि गरीब आदमी भी बिजली से लाभ उठा सकें।

अब मैं कुछ राज्य की स्वास्थ्य सेवा के विषय में जिक्र करना चाहता हूं। स्वास्थ्य सेवा में काफी कमी हैं वैसे तो सरकार ने हस्पतालों में बैड बढ़ाने की भी बात की हैं और मैडिकल कालेज, रोहतक, रोहतक प्रबन्ध के बारे में पहले भी बहुत बातें आयी हैं। वहां काफी कमी हैं। वहां पर डाक्टर प्राईवेट फीस कमाने के लिये रोगियों को हस्पताल में ठीक प्रकार से नही देखते । वहां पर रोगी को ऐडमिशन ही बड़ी मुश्किल से मिलता हैं। सरकार को उसके बारे में प्रबन्ध करना चाहिए। बहुत से गांवों में हेल्थ सैन्टर्ज तो बन गये हैं परन्तु उसकी खिड़कियां दरवाजे

वगैरह टूटे हुए हैं उसकी कोई सम्भाल नहीं की जाती। उसमें डाक्टर या नर्स भी कई महीनों से नहीं देखा गया। इसलिए मैं सरकार से निवेदन कंरूगा कि उनके विषष में ख्याल रखा जाना चाहिए।

सभापति महोदय, कुल मिलाकर पिछले दिनों के दौरान प्रत्येक समस्या से जूझते हुए सरकार ने विकास की ओर निश्चित कदम जरूर उठायें हैं। मैं आशा करूंगा कि हमारे इस मुख्यमंत्री के दिनों में हरियाणा के अन्दर समाजवाद की ओर तेजी से कदम बढ़गें। हरियाणा की गरीब जनता के लिये , जो जीवन की आवश्यक चीजें है, उनको मुहैया किया जायेगा। जैसे श्रीमति प्रसन्नी देवी जी ने कहा हैं कि हरिजनों के लिये चौपाल बनने चाहिए परन्तु मैं तो यह कहूंगा कि उनके लिये मकानों की भी विशेष सुविधा होनी चाहिए, वैसे मेरा विचार हैं कि उनके लिये मकानों की भी विशेष सुविधा होनी चाहिए। हमारे यहां ऐसे–ऐसे हरिजन हैं जिनके पास बच्चों को सुलाने के लिए चारपाई डालने की भी जगह नहीं हैं। हरेक गांव में कोई न कोई ऐसी स्कीम अवश्य बननी चाहिए और हरिजनों के लिये तो विशेष तौर पर बननी चाहिए। अन्त में मैं राज्यपाल महोदय का धन्यवाद करता हूं कि कुछ थोड़ी सी बातों को छोड़कर उन्होंनें जो भाषण दिया हैं वह गरीब जनता के लिए अच्छा हैं।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना–अनुसूचित जाति): आदरणीय सभापति महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर

यहां कल से चर्चा हो रही हैं और आज मुझे भी, थोड़ा सा समय इस पर बोलने का मिला हैं। विपक्षी दल के नेता ने कल जो कड़ी आलोचना यहां की, उस के बारे में मैं तो यह कहूंगा कि उस आलोचना का स्तर कोई खास अच्छा नहीं था। आज स्तर कुछ अच्छा रह पाया हैं, जैसे कि विपक्षी दल का होना चाहिए, ऐसा मेरा विचार हैं। मैं समझता हूं कि राज्यपाल महोदय ने चुनावों के बारे में भी कहा हैं, वह काफी सन्तुलित और ब्रीफ था। राज्यपाल महोदय ने चुनावों के बारे में चर्चा की हैं। इस बात में किसी को अपत्ति नहीं हैं कि चुनावों के ठीक ढंग से हुए हैं या उनमें किसी बात के बारे में गल्ती हुई हैं। अगर चुनाव किसी गलत प्रकार से हुए होते तो ये भाई यहां न आ पाते। मैं चुनाव की बात का पूरा समर्थन करता हूं और यह समझता हूं कि जिस प्रकार से इस बार चुनाव हुए हैं, उस प्रकार के शायद ही कभी हुए हों। विपक्षी दल के नेता यह कहते है कि चुनाव ठीक ढंग से नहीं हुए हैं। मैं उनसे पूछता हूं कि यदि ठीक ढंग से न होते तो क्या वे यहां आ पाते ?

हाल ही में हुई लड़ाई के दौरान जो प्रशंसनीय काम भारत सरकार ने किया हैं और उसमें हमारे मुख्यमंत्री महोदय ने जो सहयोग दिया हैं, वह अत्यन्त ही सराहनीय हैं। इस बात की चर्चा न केवल भारत देश में ही हैं बल्कि अन्तराष्ट्रीय जगत में भी हैं। सारी बातों की चर्चा मै शायद न कर पाऊं क्योंकि समय कम हैं, लेकिन मैं अपनी सरकार को तरक्की के मामलों में, सड़कों के

मामलो में, बिजली के मामलों में, जो कुछ किया हैं, बधाई के पात्र हैं हमारे मुख्य मंत्री श्री बंसी लाल, जिन्होंनें जान–तोड़ कर काम किया और हरियाणा को इस काबिल बनाया कि आज दूसरे सूबे इस बात की हसरत करते हैं कि हम भी हरियाणा के बराबर आयें।

इस अभिभाषण में लैंड रिफार्मज का भी जिक्र हुआ हैं। मैं विश्वास रखता हूं कि लैंड्ज पर सीलिंग लगेगी और कोई न कोई लिमिट तय होगी। मैं सरकार का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि वह जो भी लिमिटेशन लगाये, वह ठीक ढंग से लगाये और मैं विश्वास रखता हूं कि सरकार ऐसा कर पायेगी जिससे जनता को लाभ होगा।

यहां पर विकास का भी चर्चा हुआ हैं। इस बात में कोई शक नहीं हैं कि हरियाणा के वजूद में आने के बाद विकास हुआ हैं और औद्योगिक विकास भी पूरी तरह से हुआ हैं और सड़को का विकास भी हुआ हैं। बढ़िया ईटे न मिलने की शिकायत कई मैंम्बर साहिबान ने की हैं। मैं इस बात की और भी सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि ईटें मुहैया करनी चाहियें ताकि सड़कों का काम ठीक तरह से चलता जाये।

अस्पतालो का काम भी बड़े अच्छे ढंग से हो रहा हैं। थोड़ा सा अपने हल्के का जिक्र भी किये वगैर मैं नही रहूगा। अस्पतालों की तो वहां कमी नहीं हैं लकिन मेरे हल्के मुलाना में एक प्राईमरी हैल्थ सैन्टर को चलाने की स्कीम कई सालों से बनी

हुई हैं सैन्टर की बिल्डिंग बन जाने के बावजूद भी अब तक वहां पर काम शुरू नहीं किया जा सका हैं। मैं चाहूंगा कि इस बात को ध्यान में रखा जाये। दूसरी समस्या पानी की हैं। पानी के लिये हमारी सरकार ने जो कुछ किया हैं वह बहुत सराहनीय हैं। मेरे हल्के में सिचाई के कोई साधन नहीं हैं। इसलिये मैं सरकार का ध्यान इस और आकर्षित करना चाहता हूं कि वहां पर जितने ज्यादा ट्यूवबैल लगाये जाये, उतना ही अच्छा हैं। मेरे भाई श्री उमेद सिंह ने, बोलते हुए यह कहा कि यहां पर हरिजनों का किसी ने भी जिक्र नहीं किया। मैं यह कहूंगा कि एक बात उनको मान लेनी पड़ेगी कि वह जनसंघ, जो कभी हरिजनों का नाम नहीं लेता था, इसी पार्टी और इसी सरकार की मेहरबानी हैं कि उनके मुंह से भी हरिजनों की बात सुनने मे आयी। मैं सरकार का ध्यान इस बात की ओर भी आकर्षित करना चाहता हूं कि हरिजन सैक्शन के साथ उन्होनें जो वायदे किये हैं, उन्हें पूरी तरह से इम्पलीमैट किया जाये। फिर उन को कोई गिला नहीं होगा। वह भी पूरे हौसले के साथ समाज में सम्मान के साथ जी सकेगें और किसी को कोई शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। इसमें कोई शक नहीं हैं कि हरिजन समस्या काफी दिनों से उलझी हुई है और देश के सामने यह समस्या बहुत भारी हैं।

दूसरी समस्या कुरप्शन की हैं। विपक्षी दल के कई सदस्यों ने इस बारे में काफी कुछ कहा हैं। कुरप्शन देने वाली

कौन होते हैं ? हटाने या बढ़ाने में जनता का पूरा–पूरा हाथ होता हैं अगर वह चैक करना चाहे तो कर भी सकती हैं। (विघ्न)

श्री के0 एन0 गुलाटी: जनता का हाथ नहीं होता, सरकार और अफसरान का हाथ होता हैं। जनता ईमानदार होती हैं।

चौधरी फूल चन्द : अगर हरेक आदमी अपने आपको अपने स्थान पर ठीक कर ले तो किसी किस्म की कुरप्शन नहीं रह पायेगी। विपक्षी दल ने सरकार के खिलाफ दूसरी कई बातें भी उठाई हैं। मैं समझता हूं कि हमारी सरकार गणतन्त्र में पूरी तरह विश्वास रखती हैं और गणतन्त्र की तरफ ध्यान देती हैं। मैं यह भी विश्वास रखता हूं कि राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय अभियान में भी, जो गरीब हटाओ का चलाया जा रहा हैं, हमारी सरकार पूरा–पूरा ध्यान देगी। इन शब्दों के साथ मैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

चौधरी महर चन्द (बड़ोपल): चेयरमैन साहब, गवर्नर साहब के ऐड्रैस के सिलसिले में खास तौर पर चार आईटम्ज मैं टच करूंगा। एक डिवैल्पमैंट दूसरी ऐडमिनिस्ट्रेशन तीसरी बिजली बोर्ड और चौथी इलैक्शन। इसके अलावा कुछ बातें और भी कहना चाहता था, लेकिन चूंकि टाईम की तंगी हैं, इसलिये वह नहीं कहूंगा।

मैं अब डिवैल्पमैंट की तरफ आता हूं। हरियाणा सरकार को मैं बधाई देता हूं कि यहां पर विकास के काम बड़ी तेजी से हुए हैं और हो रहे हैं। हरियाणा ने हर शोयबे में नुमायां तरक्की की है। मुझे अफसोस से कहना पड़ता हैं कि हमारे अपोजीशन के लीडर, जिनकी मै बहुत कदर करता हूं, हकीकत नही मानते । वे विकास के कामों को या तो पसन्द नहीं करते या फिर इन बातों में उन्हें यकीन नहीं हैं। मैं तो यही अन्दाजा लगा सका हूं कि वे चाहते हैं कि हरियाणा बैकवर्ड ही रहे और तरक्की न कर पाये। चलो ! उनका नजरिया उन को मुबारिक हो । लेकिन हमें यह बात मन्जूर नहीं हैं। आप ही देखें कि डिवैल्पमैंट की ऐक्टिविटीज को कन्डैम करने का उनका क्या अजीब ढंग हैं ? उन्होंनें यह भी कहा हैं कि कई मिनिस्टर्ज हार गये, उनको याद रखना चाहिये वे साहब, खुद भी लोक सभा के इलैक्शन में हारे थे। यह बात उनको भूलनी नहीं चाहिये कि वह भी कभी वजीर थे। यह भी नहीं भुलना चाहिए कि उनके कहने से बातें नहीं बनती, यह तो जनता की बात हैं। हरियाणा का वाहिद लीडर भी इलैक्शन हार गया और जनसंघ का लीडर चित्त हो गया। यह तो जनता की बात थी, इस हाउस में कहने योग्य बात नहीं थी।

एक आवाजः वह वाहिद लीडर कौन था ?

चौधरी मेहर चन्द : अक्लमंद को इशारा ही काफी होता हैं। जनता ने विकास के काम को तसलीम किया। लेकिन यहां कहा गया कि विकास के कामों की वजह से चौधरी बंसी लाल

दोबारा हरियाणा के चीफ मिनिस्टर बने हैं। यह हरियाणा की खुशकिस्मती हैं कि चौधरी बंसी लाल फिर चुनकर आए हैं और डिवैल्पमैंट के काम और तेजी से चलेगें। मैं तो आपोजीशन के लीडर से एक ही बात अर्ज करना चाहता हूं कि दुनियां में सोहबत का असर होता हैं, वे नेक आदमियों की सोहबत में रहें तो अच्छा होगां। मुझे इस बात की खुशी हैं कि चौधरी शिव राम ने विकास के कामों को माना हैं, उनकी दाद दी हैं लेकिन मैं उनसे एक बात पूछना चाहता हूं अगर वे बुरा न माने कि हिसार की डिवैल्पमैंट उन्हें क्यों अखरती हैं ? क्या हिसार हरियाणा का हिस्सा नहीं हैं ? उनको हिसार की डिवैल्पमेट नहीं अखरनी चाहिए। चेयरमैन साहब, अब मैं हरियाणा सरकार के ऐडमिनिस्ट्रशन को ट्रिब्यूट दिए बगैर नहीं रह सकता। इस सरकार ने बहुत ठीक ढंग की ऐडमिनिस्ट्रेशन हरियाणा को दी हैं लेकिन चन्द आपोजीशन के साथियों ने यह तय किया हुआ हैं कि नुक्ताचीनी जरूर ही करनी हैं। अब मैं एक शेयर की तरफ आता हूं:—

नुकतां चीं हर भली शै में बुराई देख लेता हैं

चमन में भी निगाहें जाग पड़ती हैं गिलाजत पर।

जो मैंने बात कही है उसका मतलब यह हैं कि जो जिन्दगी को पसन्द करता हैं उसकी नजर गन्दगी की तरफ जाती हैं और बाग के माली की नजर बाग की तरफ जाती हैं। मैंने इसलिए इसको बताया हैं कि हो सकता हैं आप लोगों ने उसका

न समझा हो। चेयरमैन साहब, इलैक्शन की बात मैं बाद में करूंगा। अब थोड़ा सा जिक्र बिजली बोर्ड का करना चाहता हूं। जैसा कहा गया हैं कि इलैक्शन फेयर नही हुए हैं, मैं बताऊंगा कि इलैक्शन में कितनी फेयरनैस बरती गई हैं।

चेयरमैन साहब, अब मैं बिजली बोर्ड की तरफ आता हूं। चौधरी रिजक राम ने बताया कि बिजली बोर्ड का कोई प्रोसीजर नहीं हैं, कोई रूल्ज और रैगुलेशन्ज को फालो नहीं किया जाता हैं (व्यवधान) आप बुरा न मानें। चौधरी दल सिंह ने कनैक्शन देने के बारे में कुरप्शन का जिक्र किया। रौंग बिलिंग का जिक्र किया, मैमोरैन्डम का भी जिक्र आया। मैमोरैन्डम देने वालों की तो आदत बन गई हैं, हमारी मजबूरी हैं, हम क्या करें ? ये जनवरी के महीने में, जबकि फरवरी में टिकटे मिलनी थी, सेन्ट्रल गवर्नमैंट को मैमोरैन्डम दे रहे थें इसके पीछे वजह क्या थी ? इनके दिल मे एक दर्द था कि चौधरी बंसी लाल चीफ मिनिस्टर न बन पाएं लेकिन वे भूल गए की कुदरत को कुछ और ही मंजूर था। (व्यवधान) मैं कहना चाहता हूं कि बिजली बोर्ड के चेयरमैन मैम्बर और कर्मचारियों ने हरियाणा का नाम ऊंचा किया हैं और कैसे उसका नाम ऊंचा किया हैं वह बात मै आपको अर्ज करना चाहता हूं। हमें इन कर्मचारियों को दाद देनी चाहिए कि इतने थोड़े अर्से में सारे हरियाणा को जगमगा दिया। यह कितनी बड़ी बात हैं! नुक्ताचीनी करना आसान हैं, काम करना बहुत मुश्किल हैं (व्यधान) चेयरमैन साहब, मैं इल्तजा करूंगा कि मेरी स्पीच में कोई दखल न

दे। मेरे जो बांए तरफ बैठे हैं वह भी न बोलें और आपोजीशन के भाई दखल दे क्योंकि जब और मैम्बर बोल रहे थे तो मैं भी आराम से सुन रहा था। आपोजीशन के भाई इस बात को भूल गए कि ज्वांयट पंजाब से लेकर मार्च 1969 तक जो काम हुए हैं उनसे कहीं दुगना काम पिछले तीन साल मे बिजली बोर्ड ने करके दिखलाया हैं और मिसाल के तौर पर हिन्से भी इस हाउस में रखता हूं। 132 के0 वी0 की लाइन 358 किलो मीटर से लगभग 800 किलोमीटर हो गई हैं। यह क्या कम प्रोग्रेस हैं ? 33 के0 वी0 की लाइन 1495 से 2100 किलोमीटर हो गई। 11 के0 वी0 की लाईन 11022 से 23000 किलोमीटर हो गई हैं। ऐंटी लाइन 17264 से 32000 किलोमीटर हो गई। ट्यूबवैल्ज का नम्बर 45370 से एक लाख के ऊपर चला गया। (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए) बिजली की पर–कैपिटा कंजम्पशन 69 यूनिट से लगभग 100 यूनिट के ऊपर चली गयी। स्पीकर साहब, क्या यह कम दाद नेने के लायक बात हैं। यह तो बड़ी तारीफ लायक चीज हैं। बिजली बोर्ड का क्रिटिसीज्म बेबुनियाद किया जाता हैं। मैं तो कहता हूं कि यह क्रिटिसीज्म करना गुनाह हैं, ऐसा करना इन्सानियत नहीं हैं। स्पीकर साहब, मैं खुद बिजली बोर्ड का चेयरमैंन रहा हूं। मैं इस हाउस को बताना चाहता हूं कि इस हाउस में मैं बिजली बोर्ड के कारण ही आया हूं। इसमें कोई शक वाली बात नही हैं। जब मैं देहात में जाता था तो लोग यह कहते थे कि बिजली वाला आ गया वोट दो। यह बिल्कुल सच बात हैं। मैं कहता हूं कि काम करने का सिला जरूर मिलता हैं। स्पीकर साहब, मैं खुद बिजली

बोर्ड का मैंम्बर रहा हूं और मैं मजबूती के साथ कह सकता हूं कि बिजली बोर्ड में हर प्रोसीजर को फालो किया जाता हैं। रूल्ज एंड रैगुलेशन्ज को बड़े औनेस्ट तरीके से ऐडौप्ट किया गया हैं। बिजली बोर्ड में कोई हेराफेरी नहीं हुई हैं। कहने वालों का कहना बंद नहीं किया जा सकता। अगर गल्त तरीके से कहते है तो कहते रंहें। मेरा अपना ऐसा तजुर्बा हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि बिजली बोर्ड ने सराहनीय काम किया हैं।

श्री अध्यक्षः चौधरी साहब, आपके दो मिनट और हैं।

चौधरी मेहर चन्द : स्पीकर साहब, मेरे ख्याल में तो आप अलाऊ करें तो ठीक हैं, वरना मैं अपनी सीट ले लूंगा। बिजली बोर्ड के बारे में कुछ क बातें कहूंगा जिस को कहे बगैर नहीं रह सकता हूं। कुछ अपोजीशन के भाइयों के साथ मैं सहमत हूं। रौंग बिलिंग की जो बात हैं, वह मैं तसलीम करता हूं। मै यह भी तसलीम करता हूं। कि बिजली बोर्ड के अन्दर कुछ लाईन–सुप्रिन्टेन्डेन्ट के लेवल तक कुरप्शन भी हैं। कुनैक्शन अगर आसानी से नहीं मिलते तो इसी लैवाल पर नुक्स जरूर हैं। हायर लैवल पर नहीं हैं लेकिन पिक्चर को कम से कम पेश करना चाहिए। जैसे चौधरी दल सिंह ने एक बात कहीं कि जीन्द के अन्दर हजारों मीटर जल गये, यह बात बिल्कुल बेबुनियाद और गल्त हैं क्योंकि अकेले जीन्द के अन्दर यह बात नही हुई। सारे जीन्द डिवीजन के अन्दर जनवरी से लेकर मार्च तक कुल 69 मीटर जले। स्पीकर साहब, जहां पर हजारों कनैक्शन दिये गये हो वहां

पर यह 698 नम्बर तो नैगलिजिबिल हैं। मैं कहना तो और भी कुछ चाहता हूं पर स्पीकर साहब, आपके आदेश को मानता हुआ अपना स्थान लेता हूं।

चौधरी जोगिन्द्र सिंह श्योराण (नारनौंद) : स्पीकर साहब, आपोजीशन के कुछ भाइयों ने बिजली के बारे में कहा हैं। हरियाणा में जो बिजली का कार्य हुआ हैं वह सबके सामने हैं। सड़को का काम भी बड़ी तेजी के साथ किया जा रहा हैं। सिंचाई के लिये बहुत से साधन उपलब्ध हैं। यह सिवानी स्कीम हैं, लोहारू कैनाल हैं, जुई कैनाल का काम, ये सारे कार्य बड़े सराहनीय योग्य हैं। ट्रांस्पोर्ट 90 फीसदी नेशनालाईज कर दिया और इस के साथ–साथ ऐजुकेशन में बड़ी तरक्की हुई हैं। जो भी काम तेज गति से होगा उसमें किसी एक–आध काम में गल्ती भी हो सकती हैं, ऐसी कोई बात नहीं हैं। अगर कोई आदमी काम करेगा तो गल्ती भी करेगा। अगर कोई काम ही नही करेगा तो गलती क्या करेगा। स्पीकर साहब कुछ आदमियों की तो यह आदत होती हैं कि गवर्नमैंट की हर काम की मुखालिफित करनी हैं, नुक्ताचीनी करनी हैं, अच्छा काम भी हो रहा हो तो आपोजीशन ने बुरा ही कहना हैं। चौधरी रिजक राम जी ने भी चीफ मिनिस्टर बनने के लिये बड़ी तेजी से इस्तीफा दिया और दो तीन महीनों के बाद पार्लियामेन्ट के इलैक्शन आए तो उनके लिए तैयार हुए। उस में रह गए तो विधान सभा में आ गए। उनकी तो वही बात हुई जैसे एक आदमी अपने बाल बच्चो को छोड़कर साधु बन गया और घर

से बाहर चला गया लेकिन जब घर से दूर दो मील पर पंहुचा तो रास्ते में उसने एक आदमी से कहा कि मेरी शादी करवा दो, ऐसा ही हाल इनका हैं। स्पीकर साहब, मैं अन्त में फिर अपोजीशन के भाइयों से यह कहूंगा कि यूं ही नुक्ताचीनी में न पड़कर, वे गवर्नमैंट द्वारा किये गये अच्छे कामो ंकी सराहना करें। हर बात में गवर्नमैंट की बुराई करना कोई अच्छी बात नहीं हैं।

श्री ओम प्रकाश गर्ग (थानेदार): स्पीकर साहब, गवर्नर साहब के ऐड्रैस पर कल से चर्चा हो रही हैं। यहां पर हमारे कुछ भाइयों ने डिवैल्पमैंट का जिक्र किया पर असल तो उनकी मन्शा जो थी वह सरकार के कामों की नुक्ताचीनी ही करना था। जैसे कि मेरे भाई चौधरी दल सिंह पता नहीं कहां से बैलट पेपर्ज इकट्ठे करके ले आए और यह भी उन्होनें साथ ही कहा कि फेयर इलैक्शन नही हुए। ऐसी बाते सुनकर अच्छे आदमियो ंको तो शर्म आती हैं मगर पता नही ये इस बात को महसूस क्यों नही करते ? हमने तो फेयर इलैक्शन कराये हैं। अगर फेयर इलैक्शन न होते तो चौधरी दल सिंह जी आज यहां न होते।

चौधरी दल सिंह : मैंने जो बैलेट पेपरो के बार मे कहा है वह सही था आप चाहते तो मैं और भेज सकता हूं।

Mr. Speaker : Chaudhri Sahib, no interruption please.

Chaudhri Dal Singh: Kindly ask him not to mention my name.

श्री ओम प्रकाश गर्ग : स्पीकर साहब, चौधरी दल सिंह ने अपने इलैक्शन के दौरान जो जाति–पाति का सवाल उठाया उसका क्या मतलब हैं ? उन्होंनें क्या किया ? अपने कंधे पर एक गंडासा रखा हुआ था जिसे लेकर वे घर–घर जाते थे, गांव–गांव जाते थे। जाति–पाति के नाम से वे लोगो को कहते थे कि मुझे वोट दो, यह गंडासा ले लो मगर उन करोड़ो से मरवान की बजाये इस गंडासे से मेरी नाक काट दो। (शोर)

श्री अध्यक्ष : गर्ग साहब, व्यक्तिगत बात किसी के विरूद्ध न कहें तो अच्छा है।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : स्पीकर साहब, अगर फेयर इलैक्शन न होते तो आज हमारे भाई की क्या हालत होती ? मेरी तो केवल यही कहने की मन्सा थी। इसमें कोई शक की बात नहीं हैं। अगर ऐसी बात न होगी तो वे अभी अपने पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन में जरूर कहेंगें। ऐसी बातें चौधरी रिजक राम जी ने भी कहे हैं जो कि उनके मुंह से शोभा नहीं देती हैं। वे भी क्या करें, आखिर वे भी तो तंग आए हुए हैं। श्री प्रताप सिंह दौलता जी ने अपने विचार रखे जो आप सब भाइयों के सामने हैं और वे तेजी में एक बात कह गये कि पंण्डित भगवतदयाल जी और श्री नंदा जी हरियाणा बनने के खिलाफ थे। यह बात गलत है। पंण्डित भगवत दयाल जी तो खिलाफ हो सकते हैं लेकिन श्री नंदा जी इस खिलाफ नहीं थे। उनकी ही मेहरबानी से यह हरियाणा बना हैं। यह उनकी ही देन हैं। स्पीकर साहब, मेरी आपके द्वारा

गवर्नमैंट से एक गुजारिश हैं कि गवर्नमैंट को कोई ऐसी स्कीम भी बनानी चाहिए कि जिस सें गांवो की भी बेहतरी हो सके। जैसे शहरों में माडल टाऊन बनाये जा रहें हैं, उसी तरह से गांवो में भी माडल बस्तियां बनाने की जरूरत हैं। गांव में पहले की निस्बत काफी घनी आबादी हो गई हैं। सरकार को चाहिए कि गरीब आदमियों को, बैक वर्ड भाइयों को, गरीब हरिजनों को प्लाट दे दे तो इससे गांवो की और बेहतरी हो सकती हैं। स्पीकर साहब, एक और बात की तरफ, मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं कि कुरूक्षेत्र के पास थानेसर एक ऐसी जगह हैं जहां पर जुडिशियन मैंजिस्ट्रेट नहीं हैं हालांकि हर सब–डिबिजन पर एक जुडिशियल मैजिस्ट्रेट होता हैं। इस तरह लोगो को अपने कामों के लिये करनाल जाना पड़ता हैं, जिससे उन्हें काफी परेशानी और नुक्सान उठाना पड़ता हैं। जुडिशियल मैंजिस्सट्रेट का रैजीडैन्स तो वहां बन चुका हैं, पर अभी तक किसी व्यक्ति को वहां पर नहीं भेजा गया हैं। मैं आपके द्वारा सरकार से प्रार्थना करता हूं कि शीघ्र ही थानेसर में भी जुडिशियल मैजिस्ट्रेट की नियुक्ति की व्यवस्था की जाए ताकि लोगों को किसी किस्म की दिक्कत न हो।

श्री अध्यक्षः गर्ग साहब, आप एक दो मिनट और बोल सकते हैं।

श्री ओम प्रकाश गर्गः स्पीकर साहब, ये पानी की बात करते हैं लेकिन इन लोगों को भी पता नहीं क्या मुसीबत हैं, युं ही नुक्ताचीनी करना इनका काम हैं। करनाल में जांए तो कहते हैं

कि सरकार रोहतक और हिसार में पानी ले गई। लेकिन जब रोहतक में जाकर तलाश करते हैं तो कहते हैं कि पानी पड़ा ही नहीं। वहां ये लोग इस किस्म की बातें करते हैं। स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा अर्ज करना अर्ज करना चाहता हूं कि सरकार का काम किसी से भूला नहीं है। पानी का जो इन्तजाम गवर्नमैंट ने किया हैं, वह किसी से भूला नहीं है और जो सरकार करने जा रही हैं वह किसी से भूला नहीं। हरिजन भाइयों के यहां नलके नहीं हैं। ये ऐसी–ऐसी चीजें अगर उनको न दी गई तो वह बहुत तंग रहेंगें। इस तकलीफ को दूर करने कि लिए एक स्कीम यह हैं कि हमारे इलाके में जो ट्यूबवैल्ज आबपाशी के लिये लगाये गये हैं वे तकरीबन सब के सब बेकार हैं और वे काम भी नहीं आ रहें हैं। अगर उन ट्यूबवैल्ज द्वारा, छोटी–छोटी स्कीमें बनाकर पानी दे दिया जाये तो गरीब भाइयों को फायदा हो सकेगा। (घंटी) स्पीकर साहब, शराब के ठेको के बारे में मेरी गुजारिश यह हैं कि ये बस स्टैंडों, गर्ल्ज स्कूलों और दूसरे स्कूलों से दूर होनी चाहियें।

श्री अध्यक्ष : स्पीकर साहब, एक चीज और कहना चाहता हूं कि बेरोजगारी खत्म करने के लिये गवर्नमैंट जो काम कर रही हैं वह किसी से भूला नहीं हैं। इसके साथ–साथ मेरी यह गुजारिश यह हैं कि कुरूक्षेत्र में एक शुगर मिल और पिपली में मिल्क प्लांट का लगाया जाना निहायत ही जरूरी है। इन शब्दों के साथ मैं अपना स्थान लेता हूं।

चौधरी दल सिंहः स्पीकर साहब, मैं पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन देना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : नो पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन।

चौधरी दल सिंहः स्पीकर साहब, मेरे ऊपर पर्सनल इल्जाम लगया गया हैं इसलिये मैंने पर्सनल ऐक्सप्लीनेशन देनी हैं।.....(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : चौधरी दल सिंह जी आप तशरीफ रखिये। मैंने आनरेबल मैंम्बर को उसी समय रोक दिया था कि व्यक्तिगत आरोप न लगये जायें। मैं आपसे रिक्वैस्ट करता हूं कि आप बैठ जायें और सदन का समय बर्बाद न करें।

चौधरी दल सिंहः स्पीकर साहब, मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि मैं फिरकापरस्त नहीं हूं.....

श्री अध्यक्षः आप बैठ जाइये।

चौधरी दल सिंहः स्पीकर साहब, मुझे समय नहीं दे रहे हैं ये ज्यादती हैं।

श्री के0 एल0 पोसवालः आपके खिलाफ तो कुछ नहीं कहा गया हैं।

श्री अध्यक्षः चौधरी साहब मैं आपको कह रहा हूं कि आप तशरीफ रखिये। (व्यवधान)

चौधरी दल सिंहः स्पीकर साहब, आप इतना भी महसूस नहीं करते कि इन्होंनें मेरे ऊपर हाथ में गंडासा पकड़ने का अरोप लगाया था.....

श्री अध्यक्षः मैंने पर्सनल ऐलीगेशंज के लिये किसी को भी अलौ नहीं किया हैं। गर्ग साहब जब यह बात कह रहे थे तो मैंने उनको उसी वक्त रोक दिया था। आप तशरीफ रखिए।

चौधरी दल सिंहः मैं फिरकापरस्त आदमी नहीं हूं। मैं वाहद आदमी हूं जो फिरका परस्ती के खिलाफ लड़ा.....

श्री ओम प्रकाश गर्गः स्पीकर साहब.....

श्री अध्यक्षः गर्ग साहब, आप तशरीफ रखिये आपका समय समाप्त हो चुका हैं।

श्री हरि सिंह (सम्मालखा): स्पीकर साहब, मैं छोटी सी अर्ज करना चाहता हूं। कि मैं क्रिटिसीजम में विश्वास नहीं रखता चूंकि मैं महात्मा गांधी का पक्का चेला हूं और महात्मा गांधी की नीति में विश्वास रखता हूं।

चौधरी बंसी लाल स्पीचों में ज्यादा विश्वास नहीं रखते हैं वे तो काम में ज्यादा विश्वास करते हैं। जैसे चौधरी बंसी लाल ने अच्छे काम करके हरियाणा से आपोजीशन को भगा दिया हैं और दोबारा कांग्रेस की गवर्नमैंट को यहां पर मजबूत किया हैं

उसी तरह से मैं भी अपनी कांस्टिचुऐंसी में काम करके अपोजीशन को हमेशा के लिये दफना देना चाहता हूं। (हंसी)

श्री अध्यक्षः नलवा साहब, आप तशरीफ रखिये। अब लीडर आफ दी हाउस बोलेंगे।

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): स्पीकर साहब...

बहिर्गमन

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब मुझे बिल्कुल टाईम नहीं दिया गया।

श्री अध्यक्षः आप तशरीफ रखिये आपके लीडर को आधे घंटे से भी ज्यादा टाईम दे दिया गया था।

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब, मेरे काल अटैशन नोटिसिज और रैजोल्यूशन इसी बिना पर रिजैक्ट किये गये थे कि ये बातें गवर्नर ऐड्रैस पर बहस के समय की जा सकती हैं.....

श्री अध्यक्षः सदन के नेता ने बोलना है और उन्होंनें बोलना आरम्भ भी कर दिया हैं, बीच में इंट्रप्ट करना ठीक नहीं हैं।

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब, तो I walk out int protest.

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): स्पीकर साहब, दो रोज से हमारे सदन में राज्यपाल महोदय के ऐड्रस पर बहस हो रही हैं। दोनों पक्षों ने खासी तादाद में इस डिबेट में हिस्सा लिया। कुछ बातें जो विरोधी पक्ष में आई वे ठीक थीं हैल्दी क्रिटिसीज्म था, चौधरी हरद्वारी लाल जी ने सरकार को क्रिटिसाइज किया। मैं यह बात मानता हूं कि कई बातें उन्होंनें सच्चाई से दूर की कहीं, मगर उनका हैल्दी क्रिटिसाइज था और डिबेट का स्टैंडर्ड उन्होंनें ऊंचा करने की कोशिश की । उसके लिये मैं उनको कम्पलीमैंटस पे करता हूं। लेकिन साथ ही मुझे ताज्जुब हुआ कि लीडर आफ अपोजीशन चौधरी रिजक राम जी कुछ बातें तो हैल्दी क्रिटिसीज्म के तौर पर कह गये मगर बहुत कुछसी बातें उन्होंनें व्यक्तिगत कीं और वे बातें जिनको वे खुद गलत मानते हैं। मिसाल के तौर पर एक जुबान से तो वे कहते है कि मेरे जिले में इलैक्शन फेयर हुआ और गवर्नमैट मशीनरी का इस्तेमाल नहीं हुआ लेकिन दूसरी तरफ वे सदन में अपनी स्पीच में यह कह गये कि गवर्नमैंट की मशनरी का गलत इस्तेमाल हुआ। चौधरी हरद्वारी लाल जी ने बहुत ठीक बात बताई। उन्होंनें कहा कि 20–25 सीटों के बारें में उनकों व्यक्तिगत नालेज हैं कि किसी जगह पर भी इलैक्शन में सरकारी मशीनरी इस्तेमाल नहीं हुई और गवर्नमैंट की तरफ से बे–इन्साफी करने की कोशिश नहीं की गई। अच्छा होता कि लीडर आफ दी अपोजीशन भी सदाकत के कुछ नजदीक रहते। स्पीकर साहब, मुझे

हैरानी होती हैं कि चौधरी रिजक राम जी ने मेरे ऊपर कल एक इल्जाम लगाया और उन्होनें यह कहा कि ये कहते है कि मुख्यमन्त्री हल्के में नहीं गये फिर भी जीत गये। आगे क्या कहतें हैं ? लेकिन या नहीं बताते कि उनके हल्के मे कितनी राय राजस्थान की बनी और कितने ट्रकों के ट्रक भर कर आये। इससे ज्यादा गलत, बे–बुनियाद और गैर–जिम्मेदाराना बात कोई इन्सान सड़क पर चलता भी नहीं कह सकता, सदन के मैंम्बर की तो बात ही क्या हैं। जो लीडर आफ दी अपोजीशन कहलाते हैं मैं तो यह कहूंगा कि अगर अपोजीशन के लीडर ऐसे ही हैं तो अपोजीशन का अल्ला ही बेली हैं। ये सारे इल्जाम बे–बुनियाद हैं और गलत हैं। हो सकता हैं कि उन्होंनें यू0 पी0 के या दूसरे इलाकों के वोट अपने हल्कों में बना रखे हो और वहां फर्जी पोल कराये हों और समझते हो कि सभी ने ऐसा किया हैं। मैं समझता हूं कि इससे ज्यादा गैर–जिम्मेदाराना बात लीडर आफ दी आपोजीशन या कोई और मैम्बर इस सदन में बैठा हुआ नहीं कर सकता हैं। इसके साथ–साथ उन्होंनें और कई इल्जाम लगाये। स्पीकर साहब, मैं आप के जरिये सदन को बताना चाहता हूं कि हमने पूरी ईमानदारी से सच्चाई से और अपने सिद्धान्तों पर इलैक्शन लड़ा हैं और किसी भी जगह किसी प्रकार की मशीनरी का इस्तेमाल हमने पूरे हिरयाणा प्रांत में नहीं किया। अगर हम सरकारी मशीनरी का इस्तेमाल करते तो चौधरी रिजक राम जो 6–7 सौ वोटो से जीत कर आये हैं वे इस सदन मे नजर नहीं आते। यह इस बात का सबूत हैं। हमारे सरकारी अफसरों ने इलैक्शन में बड़ी ईमानदारी

और सच्चाई से काम किया हैं उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। हमारे जितने सरकारी मुलाजिम हैं सब अपनी ड्यूटी ईमानदारी से भुगताते हैं कोई अफसर किसी जगह गलत काम नहीं करता। चौधरी रिजक राम जी ने यह भी कहा कि इन पांच मिनिस्टर हार गये, स्पीकर साहब, इनकी अपनी ही स्पीच देखिए कितनी सैल्फ कन्ट्राडिक्ट्री हैं, एक तरफ तो ये कहते हैं कि सरकारी मशीनरी का इस्तेमाल हुआ और दूसरी तरफ खुद ही कहते हैं कि पांच मिनिस्टर हार गये। अगर हमारी सरकार मशीनरी का इस्तेमाल करते तो हमारे छः मिनिस्टर क्या हारते ? स्पीकर साहब? हकीकत तो दूसरी तरफ हैं । चौधरी रिजक राम जी मैंमोरैंडम का जिक्र कर रहे थे, वह मैमोरैंडम सारी स्टेट में बुरी तरह पीट गया, एक–एक हल्के में उसकी कापी बांटी गई, मेरे हल्के में भी मैंने सुना हैं इन्होंनें कई हजार उस मैमोरैडम की कापियां बाटी। लेकिन मैंमोरैंडम और उसके जितने सिगनेटरीज थे वे सारे पिट गये और आदमपुर में भी वही हालत हुई। चौधरी रिजक राम जी के उस मैमोरैंडम पर अगर दस्तखत होते तो जनता शायद इनको भी बता देती। तो ये सब बाते इस बात का सबूत हैं कि हमारे सूबे में इलैक्शन बिल्कूल फेयर हुए हैं और जो जो इल्जामात लगाये गए है वे सारे निराधार और बे–बुनियाद हैं।

स्पीकर साहब, विरोधी दल के नेताओं ने यहां पर इलजाम लगाया कि हमारे प्रांत में सब स्टैंडर्ड सड़के बनती है, हो सकता हैं कि इनका स्टैंडर्ड कोई ज्यादा ऊंचा हो जनसंघ के एक

सदस्य ने एक सड़क का हवाला दिया और कहा कि वहां दो–दो गज के गडढे पड़े हुऐ हैं, मुझे ताज्जुब हुआ आज ही चीफ इंजीनियर की रिपोर्ट मिलने के बाद जिस सड़क का उन्होंनें जिक्र किया उस में कहीं पर गड्ढे नहीं हैं, सिर्फ जहां से रेलवे लाईन आती हैं वहां फटक के लिये थोड़ो सा टुकड़ा हैं। तो यह सब बे–बुनियाद बाते वे करते हैं। अगर विरोधी दल के मैम्बरान कोई अच्छी बात कहें, कोई वर्थ कन्सिड्रेशन सुझाव आयें तो उनके ऊपर सरकार पूरी तरह से गौर करेगी और अगर हमें कोई खामी मिलेगी तो हम उसको दूर करेगें और जो गलती करने का जिम्मेदार होगा उस को सजा मिलेगी और कोई काम सुधारने की की जरूरत होगी तो उसे सुधारा जाएगा। चौधरी रिजक राम जी ने कहा कि यह स्टैटिसिटिक्स सारे गलत हैं जो सरकार पेश करती हैं। मेरा ख्याल हैं कि उन के हिसाब–किताब से सारी दुनियां ही गलत हैं। स्पीकर साहब, सरकार की जितनी मशीनरी हैं, हमारे अफसर जो हैं वे स्टैटिसटिक्स तैयार करने के लिये मेहनत भी करें, उनको कम्पाईल भी करें और एक मैंबर सदन में जाकर भाषण में, भाषण के तौर पर यह कह दे कि सारे स्टैटिसटिक्स गलत हैं फिर तो बहुत ही अन्तर्यामी हैं। तो यह भाषण विरोधी दल के नेता का जो उन्होंनें यहां कल दिया निहायत ही गैरजिम्मेदाराना भाषण था। अगर वह कुछ तथ्य बताते हैं कि आपके ये आंकड़े जो हैं उनकी बजाये ये आंकड़े होने चाहिए, तो हम मानते लेकिन बे–बुनियाद बातों के कोई मायने नहीं होते। विरोधी पक्ष के नेता ने यह भी कहा कि जमुना नदी के

ऊपर यू0 पी0 सरकार बिजली क हाईड्रोलिक पावर हाउस लगा रही हैं और इसमें हरियाणा अपना हिस्सा नहीं ले सका। मैं स्पीकर साहब, आप के जरिये सदन को यह बताना चाहता हूं कि जिस समय यू0 पी0 में बड़ा पावर हाउस शुरू हुआ था उस समय पंजाब के ईरीगेशन और पावर मिनिस्टर चौधरी रिजक राम थे और मुझे फाईल पर कोई चिट्ठी नहीं मिली जो उन्होंनें बिजली का हिस्सा मांगने के लिये लिखी हो। हम ने जब स्पीकर साहब , मांग की तो उन्होंनें जवाब दिया कि तुम ने उस वक्त मांग नहीं कि थी। तो इस चीज का चौधरी रिजक राम पर ही हैं। अब हमारा यह कसूर कैसे निकालते है ? इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड में किसी भी काम में चाहे वह सर्विस में किसी को लगाने से ताल्लुक रखते हो, चाहे समान खरीदने की बात हो, रूलज की कोई खिलाफवर्जी नहीं की गई। चौधरी रिजक राम ने कहा कि 52 सीटें जो जीत कर आए हैं इस के ऊपर कांग्रेस वाले फख्र महसूस करते है और उन्होनें कहा कि वह कांग्रेस पार्टी की जीत को नही मानते, हार मानते हैं। मगर स्पीकर साहब, बेचारे फिर भी सामने बैठे हुए हैं। मैं आप के जरिये उनको यह याद दिलाना चाहता हूं कि सन 1967 और 1968 में जब चौधरी रिजक राम श्री भग्वत दयाल जी के झण्डे के नीचे काम कर रहे थे, चौधरी देवी लाल और पंण्डित भग्वत दयाल सारे बड़े–बड़े नेता इकट्ठे थे तब सिर्फ 48 सीटें थी और आज की परसैंटेज भी देख लें। स्पीकर साहब, अच्छा यह होता अगर वे बाते सच्चाई के आधार पर कहते । वे कहते हैं कि यहां पर जमहूरियत का नाम तक नही हैं' मैं उनको बताना चाहता हूं

कि इस से ज्यादा क्या जमहूरियत हो सकती हैं और क्या होगी ? मैं पुरानी विधान सभा की टर्म के मुताबिक डेढ़ साल और सरकार चला सकता था लेकिन इनका ढंग देखकर और इनके इल्जातमा देख कर हम ने डेढ़ साल पहले असैंबली भंग करवाई और इलैक्शन के बाद जनता का मैन्डेट अच्छा ले कर आए। यह डैमोक्रेसी नहीं हैं तो और क्या हैं ? हम ने डेढ़ साल पहले असैंबली भंग करके इलैक्शन करवाए। चौधरी रिजक राम की मैं क्या बात करूं ? वे जब राज्य सभा के मैम्बर थे तो उस वक्त तैश में आकर सी0 एम0 बनने के ख्याल से इस्तीफा तो दे गए लेकिन जब फिर छः महीने के बाद लोक सभा का इलैक्शन हुआ तो उसमें हार गए।

एक माननीय सदस्यः वे तो आपके पुराने मित्र है।

चौधरी बंसी लालः पुराने मित्र हैं मगर अब जरा ज्यादा गहरे मित्र हैं। चौधरी हरद्वारी लाल जी ने आज सवेरे कई बाते कही, जिन में से कई बाते ऐसी है ंजो कि बहुत ऊंचे दर्जे की हैं, अगर उन की पार्टी भी उन ऊंचे सिद्धान्तों पर चलने की कोशिश करे तो अच्छा हैं।

चौधरी दल सिंहः हम नहीं करेंगे।

चौधरी बंसी लालः स्पीकर साहब, चौधरी दल सिंह जी अभी भाग गए हैं। तो मैं अर्ज कर रहा था कि चौधरी हरद्वारी लाल जी ने जो बातें ऊंचे दर्जे की कही हैं मैं उन की ताईद

करता हूं। उन्होंने कुरप्शन की भी चर्चा को। मैं यह नहीं कहता हूं कि कुरप्शन नहीं हैं, लेकिन जैसा कि चौधरी हरद्वारी लाल ने सुबह कहा था कि इसका अकेली सरकार या कांग्रेस पार्टी ही दूर नही कर सकती बल्कि इसका इलाज तब हो सकता हैं अगर सरकार के साथ, कांग्रेस पार्टी के साथ सुबे की सारी विरोधी पार्टीयां और जनता सब मिल कर सहयोग दे। अगर विरोधी पार्टिया हमें सहयोग दें तो हम उनकी तसल्ली के मुताबिक कुरप्शन को दूर करने के लिए तैयार हैं। चौधरी हरद्वारी लाल ने ईटों के बारे में भी चर्चा की। स्पीकर साहब, ईटों के बारे मे जो चौधरी हरद्वारी लाल जी ने कहा मैं उनकी बात को गलत नहीं कहता, मगर हमारे सामने मजबूरी हैं कि हम को कोयला बहुत कम मिलता हैं, अगर हम को अच्छा और काफी कोयला मिलने लगे तो हम ईटो के भाव गिराने में कामयाब हो सकते हैं। मगर हमारी मजबूरी हैं ंकोयले के ंऊपर कोई पाबंदी नहीं हैं, उस की मुवमैंट पर कोई पाबंदी नहीं है, लोग अपने हिसाब से कोयला खरीद कर ले आते हैं और अपने हिसाब से ईटें बेच देते हैं। हमारी कोशिश हैं कि वह इतने हयार रेट पर ईटें न बेचे लेकिन जो कोयला बाहर ले आते है उस पर हमारा कोई कंट्रोल नहीं हैं

चौधरी चांद राम : फिर आपका ईटो पर कट्रोल क्या हैं ?

(7.00P.M)

चौधरी बंसी लाल : स्पीकर साहब, एक बात चौधरी हरद्वारी लाल जी ने कही उससे मैं ज्यादा मुताफिक नहीं हूं और या मैं यह कहूं तो ठीक होगा कि मैं बिल्कुल सहमत नही हूं। उन्होंनें कहा कि अफसर का रवैया ठीक नहीं हैं। यह बात चौधरी हरद्वारी लाल जी ने किस बात को ध्यान में रखकर कही होगी और किस तरह उन्होनें यह सोचा यह मैं नही कह सकता हू लेकिन मैं यह कहूंगा कि उनकी गलतफहमी हैं। हरियाणा प्रांत के अफसर बड़े मेहनती अफसर हैं, ईमानदार है और अपने काम को बड़ी डैडीकेशन के साथ और बड़ी मेहनत के साथ करते है। अच्छा होता अगर चौधरी हरद्वारी लाल जी उन के काम की सराहना करते लेकिन उनकी अपनी राय हैं कि उनका रवैया ठीक नहीं हैं। तो मैं चौधरी साहब से यह प्रार्थना करूंगा कि वे अपने विचार पर फिर से एक बार गौर करे। चौधरी हरद्वारी लाल जी ने पुलों के बारे में भी कुछ कहा और वह बात काबले गौर हैं। उसके ऊपर सरकार गौर करेगी विचार करेगी और जनता की जितनी ज्यादा से ज्यादा तकलीफें दूर हो सकती हैं हम उनको दूर करने की कोशिश करेगे। तालीम की बारे में हरद्वारी लाल जी ने बहुत कुछ कहा स्पीकर साहब, तालीम की बात तो आप भी जानते हैं और हरद्वारी लाल जी भी जानते हैं। हम तो अपनी पूरी कोशिश करते हैं कि महकमा तालीम में सूधार हो लेकिन डिफ्रैंस आफ ओपोनियन तो होती ही हैं। मुझे आज सवेरे इस बात का पता चला कि हमारे फौरमर ऐजुकेशन मिनिस्टर हरद्वारी लाल जी के गुरू भी रहे हैं। यह तो उनको आपस मे बात कर लेनी चाहिए

थी। आज महकमा मेरे पास हैं मै तो जरूर उनके सुझाव पर गौर करूंगा। स्पीकर साहब, डिवैल्पमैंट के कामों का जहां तक ताल्लुक हैं यह एक मानी हई सच्चाई हैं कि हरयिाणा प्रांत में डिवैल्पमैट के काम जिस तेजी से और रफ्तार से हो रहे हैं हिन्दुस्तान की किसी और स्टेट मे नहीं हो रहें हैं। इस डिवैल्पमैंट के काम को जितनी नुक्ताचीनी हैं उसके लिए हम यह नहीं कह सकते कि हम गलती नही करते हम से गलती भी हो सकती हैं और जो काम करने वाला आदमी हैं वह गलती जरूर करता हैं। विरोधी पार्टी का कोई माननीय सदस्य अगर किसी वक्त यह बात सरकार के नोटिस में लाएगा कि कोई काम गलत हो रहा है और उनके सुझाव में वह ठीक हो सकता हैं तो सरकार उस सुझाव को मानने से हिचकिचायेगी नहीं, जो सही होगा उसको हर वक्त माना जायेगा। लेकिन विरोधी पार्टी के मैम्बर साहबान का यह दावा कि सरकार का कैश प्रोग्राम गलत चलते हैं, खराब होते हैं, बेबुनियाद और निराधार हैं। हकीकत तो यह हैं कि यह काम इतनी तेजी और ठीक ढंग से चल रहे हैं कि हमारी विरोधी पार्टी के कुछ सदस्य तो तारीफ करते हैं ओर कुछ सदस्यगण को ईर्ष्या पैदा हो गई हैं। जिनके दल में ईर्ष्या पैदा होती हैं उनसे मैं प्रार्थना करूंगा कि वह जनता की भलाई में सोचना शुरू करदे और देश बनाने में जितनी रूलिंग पार्टी की जिम्मेदारी हैं उतनी ही जिम्मेदारी आपोजीशन की भी हैं। लेकिन इस वक्त तो विरोधी पार्टी जनता का भला नही कर रही हैं मेरा ही भला कर रही हैं। स्पीकर साहब, अगर आप मेरे से यह पूछे कि मेरा कैसा भला कर रही हैं तो मै

अर्ज करता हूं कि मेरा भला इस तरह कर रही हैं कि हर 6 महीने के बाद यह मैमोरैंडम दे आते हैं और मैं फिर देख–देख कर काम करता हूं ओर इसके लिये मैं इनका बहुत ही मशकूर हूं। स्पीकर साहब, बिजली के बारे में बहुत बाते कहीं गई। इन का जवाब भी मैं दे दूंगा और पानी के बारे मे भी चौधरी रिजक राम जी ने चर्चा की हैं कि सतलुज–ब्यास के पानी का अभी फैसला नही हुआ हैं। मैं उनकी इस बात से पूर्ण रूप से सहमत हूं लेकिन इस में हमारा कसूर नहीं हम तो शुरू से ही अपने केस की पैरवी करते आ रहे हैं और इस समय केस ऐसी स्टेज पर गया हुआ हैं जिसमें कह सकता हूं कि मुझे ऐसी उम्मीद हैं अगले दो तीन महीने तक शायद उसका फैसला हो जायें इस वक्त तक फैसला नहीं हुआ यह बात भी अच्छी नहीं हैं मैं चौधरी रिजक राम जी की इस बात से सहमत हूं।

चौधरी रिजक रामः चलो एक बात तो मानी ! (हंसी)

चौधरी बंसी लालः उसके लिए जैसे ही फैसला होगा उसके बाद हम चैनल्ज बन सकेंगे कैरियर कैनाल बना सकेगें। अपने प्रांत में उस पानी को इस्तेमाल करने के लिये हम पहले ही प्रोविजन बना कर चल रहे हैं। 1974 के आखिर तक यह पानी हमें मिलने की आशा हैं और 1974 के आखिर में या 1975 के शुरू में जैसे ही पानी मिलेगा हमारी कोशिश होगी कि हम इसका इस्तेमाल कर सके। चौधरी रिजक राम जी ने जुइ कैनाल, इन्दिरा गांधी कैनाल, चक्रवती कैनाल और बावल कैनाल के बारे मे कहा

हैं कि इन्हें पानी कहा से मिलेगा और इसके साथ–साथ उन्होंनें यह भी कह दिया कि यह स्कीमें कोई नई नहीं हैं। एक तरफ तो कहते हैं कि इनके के लिए पानी कहां से मिलेगा और दूसरी तरफ कहते हैं कि ये नई स्कीमें नहीं हैं पहली की बनी हुई हैं, इनके वक्त की बनी हुई हैं। मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि जब पहले इनके वक्त ये स्कीमें बनी थी तो इनमें पानी आने का प्रोग्राम कहां से था ? मैं कहना चहूंता हूं कि यह सब स्कीमें नई बनी हूई हैं। पहले की कोई स्कीम नहीं हैं।स्पीकर साहब, मुझे खुशी हैं कि पाठक साहब जो हमारे चीफ इंजिनियर हैं बड़े काबिल और लायक इंजिनियर हैं। खुशकिस्मती से इतने अच्छे और काबिल इंजिनियर हमारे पास हैं। ये स्कीमें इन्होंनें बनाई और इनको सिरे चढ़ाया। इस समय इन सब नहरों में बाढ़ का पानी चलेगा, किसी में ड्रेन्ज का पानी और किसी में जमुना नदी का पानी और इस पानी से एक फसल का पानी हम लोगों को दे सकेंगें। इसके बाद जब व्यास–रावी का पानी हमें मिलेगा तो हमको पैरीनियल कैनाल्ज बना सकेंगें। इस तरह प्रांत में ग्रीन रैवोल्यूशन कम्पलीट हो जायेगी और आज से ज्यादा अनाज पैदा होने लगेगा। स्पीकर साहब, ड्रिंकिग वाटर स्कीमज भी तेजी के साथ चल रही हैं। जो बैकवर्ड एरियाज हैं जहां पीने का पानी नहीं हैं वहा स्कीमें बना रहे हैं। विरोधी पार्टी के कुछ मैंबर साहबान ने बैकवर्ड एरियाज के लिये खास तौर पर महेन्द्रगढ़ वगैरा के लिये पीने का पानी की स्कीमै बना रहे हैं क्योकि हम जानते हैं वहां पीने का पानी की कमी है। जिला जींद में भी कई जगह कमी हैं और जिला गुंड़गांव

में भी कई जगह दिक्कत है। जहां पीने के पानी की दिक्कत है हम उनकी प्रायर्टी बना रहे हैं जहां सब से ज्यादा दिक्कत हैं वहां पहले और जहां उससे कम दिक्कत है वहां उसके बाद इस तरह की अलग–अलग कैटेगरीज बना रखी है और उसके हिसाब से हम कोशिश करेंगें कि पीन का पानी दे सकें।

पंण्डित चिरंजी लाल शर्माः सोनीपत में भी कुछ जगह पीने के पानी की दिक्कत है!

चौधरी बंसी लालः सोनीपत में भी पीने के पानी की स्कीम बन रही हैं। उनको भी पानी दिया जायेगा। स्पीकर साहब, हमारा ट्रांस्पोर्ट डिपार्टमैंट बहुत अच्छी कामयाबी हासिल कर रहा हैं 1967–68 में हमारे रोडवेज में 567 बसों को फ्लीट था लेकिन अब 19781–72 तक यह फ्लीट 1275 बसों का हो गया हैं और अगले साल तक यानी इस फायनैंशल ईयर मैं और भी ज्यादा बसें बढ़ जायेगी। हम ज्यादा से ज्यादा बस स्टैंड और दूसरे छोटे बस स्टैंड बनाने की स्कीम बना रहे हैं ताकि लोगों को कम से कम तकलीफ हो।

स्पीकर साहिबा, इसी तरह से हम एक आगमेंटेशन बना रहे हैं जिसको विरोधी पार्टियों के नेताओ ने , कई बार सदन के बाहर और सदन के अन्दर नुक्ताचीनी की है। मैं आप के जरिए से उन को बता देना चाहता हूं कि यह आगमेटेशन कैनाल खाली आगमेंटैशन कैनाल ही नहीं होगी। अगमेटैशन कैनाल भी होगी

और करीब 1500 क्युसिक पानी ट्यूबवैल्ज के जरिये से इसमें डाला जायेगा। इसके साथ ही साथ ब्यास रिवर से जितना पानी आयेगा वह भी इसी कैनाल में डाला जाएगा। स्पीकर साहब, टूरिजम की तरफ भी सरकार ने बड़ा ध्यान दिया हैं। हमने जिन इलाकों में डिवैल्पमेंट की हैं वे हैं बड़खल, पीपली, सूरजकुंड, सोहना, उचाना और सुलतानपुर लेक। इन टूरिस्ट जगहों पर काफी इम्प्रूवमेंट की हैं। इन जगहों से अब सरकार को कई हजार रूपये की आमदनी होगी। इनके आलावा कुरूक्षेत्र में भी डिवैल्पमैंट का काम काफी तेजी से चल रहा हैं स्पीकर साहब, जहां तक हैल्थ डिपार्टमेंट का ताल्लुक है, सन् 1968 में पर कैपिटा ऐक्सपैडिचर 5 रूपये था और अब 19725 में 10 रूपया हैं। दवाइयों का पर–कैपिटा ऐक्सपैंडिचर 1968, मई में 18 पैसे था जिसको बढ़ाकर 1972 में 65 पैसे कर दिया। स्पीकर साहब, अनाज की पैदावार में हम काफी आगे बढ़े हैं। 1966–67 में 26 लाख टन अनाज पैदा हुआ था जब कि आज 1971–72 में 47 लाख टन से भी ज्यादा अनाज पैदा किया गया हैं। तकरीबन 21 लाख टन अनाज की पैदावर पिछले पांच सालों में बढ़ी हैं इसी तरह, स्पीकर साहब, हमारी ऐग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, जो कि दो साल से भी कम उम्र की हैं, सार हिन्दोस्तान की किसी दूसरी यूनिवर्सिटी से कम नही हैं, किसी दूसरी यूनिवर्सिटी से दूसरे नम्बर नहीं हैं। यह बहुत अच्छी यूनिवर्सिटी हैं। हमारा मैडिकल कालेज सारे हिन्दोस्तान के दूसरे मैडिकल कालेजों में सबसे अच्छा है और इसमे हम और भी सुधार करना चाहते हैं।

स्पीकर साहब, एक बात मैं और कहना चहूंगा। राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में लैंड रिफार्म का जिक्र किया गया हैं। हम चाहते हैं कि लैंड रिफार्म जितनी जल्दी हो सके उतनी ही जल्दी करेंगे जिससे ज्यादा जनता को फायदा हो। ज्यादा से ज्यादा फायदा पहुंचाने के लिए जो रिफार्म करने की आवश्यकता हैं वही रिफार्म हम लैड रिफार्म–लाज में करेगे। स्पीकर साहब, मैं आप के जरिए सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कय काम जल्दी ही करने वाले है। इसके अलावा मैं विरोधी पार्टियों के नेताओं से और विरोधी पार्टियो ंके दूसरे सदस्यों से, आपके जरिए प्रार्थना करना चाहता हूं कि आंयदा के लिए ठीक–ठाक सुझाव दें। जिस तरह से सवेरे चौधरी हरद्वारी लाल जी ने सुझाव दिए उन सुझावों को उनकी पार्टी भी मानें और हम भी इस बात की कोशिश करेंगे कि हम भी अपने स्टैन्डर्ड से नीचे न गिरें और डिबेट का स्टैडर्ड ऊंचा रखें। अगर व्यक्तिगत बातों में नही पड़गे तो ज्यादा अच्छी बात होगीं। व्यक्तिगत बातें मैंने आज कुछ कहीं हैं लेकिन वे व्यक्तिगत बातों के जवाब में कही हैं। लीडर आफ दी आपोजीशन ने सीधे इल्जाम लगाये थे उनके जवाब में ये बातें कहने जरूरत थी। स्पीकर साहब, एक और दूसरी पार्टी के मैम्बरों को आश्वासन देना चाहता हूं कि जो ठीक किस्म का सूझाव कोई बात स्टेट के इन्ट्रैस्ट में, पब्लिक के इट्रैस्ट में, विरोधी पक्ष के सदस्यों की तरफ से आयेगी, सरकार उस के ऊपर पूरा ध्यान देगी और अगर वे सुझाव ठीक होंगे तो सरकार उस बात को जरूर

मानेगी। इन शब्दों के साथ मैं आप के जरिये सदन से प्रार्थना करता हूं क वह इस मोशन को अडौप्ट करें।

श्री अध्यक्षः अब मैं श्री कंवल नैन गुलाट का संशोधन सदन के मत के लिए रखूंगा

प्रश्न हैं

कि प्रस्ताव के अंत में निम्नलिखित जोड़ दिया जाए, अर्थात् ''किन्तु खेद है कि उसमें कोई वर्णन नहीं किया गया हैं....

(1) कि सम्पति कर तथा गृह कर में से एक कर होगा;

(2) कि कोई वृत्ति कर (प्रोफैशनल टैक्स) नहीं होगा;

(3) कि अब बिक्री कर के स्थान पर उत्पादन–शुल्क होगा;

(4) कि एम्पालाई–वेज–बोर्ड की सिफारिशो को कार्यान्वित किया जाएगा

(5) कि हरियाणा सरकार के कर्मचारियों को केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियो के बराबर वेतन मिलेगा;

(6) कि हरियाणा सरकार के कर्मचारी तथा सरकारी अध्यापक अपने इलाके मे नौकरी करेंगें;

(7) कि बिना लाभ के अर्जित की गई भूमि के लिए उचित मुआवजा दिया जायेगा;

(8) कि शराब–बन्दी का आदेश दिया जाएगा;

(9) कि सरकार फरीदाबाद खण्ड की पानी तथा स्वच्छता की दो मुख्य समस्याओं को हल करेगी;

(10) कि फरीदाबाद के बी0 के0 अस्पताल तथा ई0 एस0 आई0 अस्पताल की सबसे बुरी हालत को ठीक करके उनकी हालत अच्छी बना दी जाएगी;

(11) कि 500 रूपये प्रति मास तक की आय वालों के लिए मुफ्त शिक्षा तथा मुफ्त इलाज की व्यवस्था की जाएगी;

(12) फरीदाबाद मे गाल्फ क्लब स्थान पर श्रमिक उपनिवेशों के सम्बन्ध में!''

संशोधन स्वीकृत हुआ

श्री अध्यक्षः प्रश्न यह हैं–

कि राज्यपाल महोदय को निम्नलिखित शब्दों में ऐड्रैस पेश किया जाएः–

''कि इस सैशन में इकट्ठे हुए हरियाणा विधान सभा के सदस्य उस अभिभाषण के लिए राज्यपाल महोदय के अत्यन्त कृ

तज्ञ हैं जो उन्होंनें 4 अप्रैल, 1972 को सदन में देने की कृपा की है''।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ

श्री अध्यक्षः सभा कल 7 अप्रैल, 1972 के 9.30 बजे प्रातः तक स्थगित रहेगी।

(7.19 बजे सायं)

(तत्पश्चात् सभा 7 अप्रैल, 1970 के 9.30 बजे प्रातः तक स्थगित हो गई)